सूर्योदय 5:56 सूर्यास्त 6:47

आज का तापमान

शिमला	17.4 न्यू	24.0 अधि
धर्मशाला	20.5 न्यू	30.0 अधि

बाजार

सेंसेक्स	81698.11
निफ्टी	25010.60

सोना 73,040 चांदी 88,598

अनंत ज्ञान

www.anantgyaan.in

लीजेंड्स लीग क्रिकेट से जुड़े शिखर धवन

पृष्ठ 14 पर

आरएनआई नं. HPHIN01099 | कांगड़ा | मंगलवार, 27 अगस्त 2024 | 12 भाद्रपद, विक्रमी संवत 2081 | वर्ष 1, अंक 250, कुल पृष्ठ 14 | मूल्य : 5 रुपए | follow us on: | 8894521702

जय कन्हैया लाल की...

देशभर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। मथुरा में श्रीकृष्ण के दर्शन पाने के लिए उमड़े श्रद्धालु (दाएं) मंदिर में पूजा-अर्चना करते यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मणिमहेश यात्रा का आगाज

छोटे न्हौण पर 1 लाख ने लगाई आस्था की डुबकी

ओपी शर्मा, भरमौर

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर मणिमहेश यात्रा का सोमवार को विधिवत आगाज हो गया है। शिव भक्तों ने पवित्र मणिमहेश डल झील में शाही स्नान कर बाबा भोलेनाथ के दर्शन किए।

यह यात्रा 11 सितंबर तक चलेगी। जन्माष्टमी पर छोटे न्हौण का शुभ मुहूर्त 3:40 पर तड़के शुरू हुआ और दोपहर 2:40 तक चला। एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने डल झील में शाही स्नान किया। भारी संख्या में भक्तों के आने से 12 किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा। हालांकि, श्रद्धालुओं का मई महीने से ही आने का सिलसिला जारी है। जिला प्रशासन ने मणिमहेश यात्रा को लेकर सभी तैयारियां कर ली हैं। आपातकालीन स्थिति के लिए एनडीआरएफ, एसडीआरएफ व माउंटेन की टीमें तैनात की हैं। वहीं, जगह-जगह हेल्थ कैंप लगाए गए हैं। (अनंत ज्ञान)

न्यूज शॉर्ट्स

मोदी, शाह और योगी जेएंडके के स्टार प्रचारक

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए भाजपा ने स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। लिस्ट में 40 नेता शामिल हैं। पीएम नरेंद्र मोदी, अमित शाह, जेपी नड्डा, योगी आदित्यनाथ, राजनाथ सिंह और नितिन गडकरी, अनुराग ठाकुर, मनोहर लाल खट्टर, जी. किशन रेड्डी, शिवराज सिंह चौहान, जयराम ठाकुर, डॉ. जितेंद्र सिंह, भजनलाल शर्मा, राम माधव, तरुन चुग, आशीष सूद, जुगल किशोर शर्मा, गुलाम अली खटाना, स्मृति ईरानी सहित बड़े नेताओं को स्टार प्रचारक बनाया है।

यशवंत सिन्हा बनाएंगे नई राजनीतिक पार्टी

रांची। पूर्व केंद्रीय मंत्री 86 वर्षीय यशवंत सिन्हा ने समर्थकों के साथ बैठक में नई राजनीतिक पार्टी बनाने का फैसला किया है। प्रस्तावित पार्टी का नाम 'अटल विचार मंच' रखा जाएगा। यशवंत सिन्हा वर्ष 2021 में ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस में शामिल हुए थे, लेकिन अब पार्टी में उनकी सक्रियता न के बराबर है।

के. कविता की जमानत अर्जी पर सुनवाई आज

नई दिल्ली। बीआरएस नेता के. कविता की जमानत याचिका पर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई होगी। शराब नीति मामले को लेकर ईडी ने कविता को 5 महीने पहले गिरफ्तार किया था। 11 अप्रैल को सीबीआई ने उन्हें गिरफ्तार किया था। 12 अगस्त को सुप्रीम कोर्ट ने ईडी और सीबीआई से जवाब मांगा था।

अंदर के पन्नों पर पढ़ें

- कोचिंग संस्थान के छात्र की संदिग्ध मौत -पेज 3
- वन रैंक-वन पेंशन की विसंगतियों के लिए होगा आंदोलन -पेज 9
- को-ऑपरेटिव बैंक नौहराधार का सहायक प्रबंधक गिरफ्तार -पेज 12
- केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के बनेंगे पांच नए जिले -पेज 13
- भारत के आर प्रज्ञाननंदा ने लिरेन से खेला ड्रॉ -पेज 14

मानसून सत्र आज से, विपक्ष का सर्वदलीय बैठक से किनारा

सदन में पूछे जाएंगे 936 सवाल, बरसात के नुकसान पर होगी पक्ष-विपक्ष में तकरार

रविंद्र जस्टा, शिमला

हिमाचल विधानसभा का मंगलवार से शुरू होने वाला मानसून सत्र इस बार काफी हंगामेदार होने वाला है। सत्र 27 अगस्त से 9 सितंबर तक चलेगा। सत्र से पहले सोमवार को विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया ने सर्वदलीय बैठक बुलाई थी, लेकिन उसमें विपक्षी भाजपा नहीं आई।

मानसून सत्र से पहले सर्वदलीय बैठक करते विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप पठानिया।

भाजपा ने बैठक से किनारा कर अपने तेवर पहले ही स्पष्ट कर दिए हैं। सदन में कुल 936 सवाल आ चुके हैं, जिसमें 640 तारांकित जबकि 296 अतारांकित हैं। इसके अलावा नियम 101 के तहत 10, नियम 62 के तहत 7, नियम 63 के तहत 1, 130 के तहत 20 और नियम 324 के तहत 4 चर्चाएं आई हैं। सत्र का शुभारंभ सुबह 11:00 बजे विधानसभा के तीन पूर्व सदस्यों टेकचंद, नारायण सिंह स्वामी और दौल गम चौधरी के निधन पर शोकोद्गार के साथ होगा। दो दिन गैर सरकारी दिवस होगा, जिसमें विधायक अपने मसलों को नियम 101 के तहत चर्चा के लिए उठाएंगे। प्रश्नकाल में सहारा योजना, मंडी हवाई अड्डे, आपदा से नुकसान, स्वास्थ्य जैसे विषयों पर सवाल आएंगे। इसके अलावा कुछ विधेयक भी सदन के पटल पर रखे जाएंगे। बरसात के दौरान हुए नुकसान को लेकर पक्ष-विपक्ष के बीच तकरार के आसार हैं। सर्वदलीय बैठक में विपक्ष के न पहुंचने को लेकर विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया ने बताया कि विपक्ष के नेता जयराम ठाकुर ने अपने स्वास्थ्य कारणों का हवाला दिया है। उधर, संसदीय कार्य मंत्री हर्षवर्धन चौहान ने सर्वदलीय बैठक में विपक्ष के नेता के न आने पर कहा कि यह संसदीय परंपराओं के लिए उचित नहीं है। ऐसा पहली बार हुआ कि बैठक में विपक्ष नहीं आया। यदि जयराम ठाकुर को नहीं आना था, तो वह अपनी जगह किसी और को भेज सकते थे। भाजपा ने ऑपरेशन लोटस का जो प्रयास किया, वह असफल रहा है। अब विपक्ष चुपचाप 2027 तक विपक्ष की सकारात्मक भूमिका अदा करते हुए जनता के मसलों को सदन में उठाए। (अनंत ज्ञान)

नौकरियों और बल्क ड्रग पार्क पर तपेगा सदन

विधानसभा मानसून सत्र में इस बार खूब नोकझोंक देखने को मिलेगी। इसका कारण कांग्रेस के दो बागी विधायकों के पाला बदलने के बाद भाजपा विधायक के तौर पर पहली बार सदन में आना। कर्मचारियों की ओर से डीए और वित्तीय लाभ को लेकर अफसरों से लेकर सरकार पर हुए हमलों को विधानसभा में उठाने की तैयारी है।

बद्दी में पंचकूला के युवक की मॉब लिंचिंग में हत्या

घायल दूसरा युवक पीजीआई रेफर, नशे के लेन-देन को लेकर हुई लड़ाई

अनंत ज्ञान, बीबीएन

बद्दी में मॉब लिंचिंग का मामला सामने आया है। ट्रक यूनियन के पास युवकों ने एक युवक की पीट-पीटकर हत्या कर दी, जबकि दूसरे युवक की हालत गंभीर है, जिसे पीजीआई रेफर किया है।

मृतक की पहचान राहुल रॉय पुत्र राजेश रॉय निवासी सेक्टर-12ए पंचकूला के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार, दोनों युवक ट्रक यूनियन के समीप गांजा बेचने के लिए पहुंचे थे, जहां पर कुछ युवकों के साथ पैसों के लेन-देन के चलते झगड़ा हो गया। 12 से 15 युवकों ने डंडों से इन युवकों की पिटाई शुरू कर दी। दोनों युवकों की डंडों, लात-घूसों से बेरहमी से पिटाई करने के बाद सभी युवक वहां से चले गए। इस मारपीट में राहुल की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक लक्ष्मीकांत पुत्र राजू जिला उन्नाव उत्तर प्रदेश गंभीर रूप से घायल हुआ है। घटना का वीडियो वायरल होने पर पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को बद्दी के सिविल अस्पताल ले जाया गया। जहां चिकित्सकों ने हरियाणा के पंचकूला निवासी राहुल को मृत घोषित कर दिया।

वहीं, घायल को बद्दी अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद पीजीआई रेफर किया गया है। फॉरेंसिक टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। मारपीट का वीडियो भी वायरल हो रहा है, जिसके आधार पर पुलिस आरोपियों की पहचान में जुटी हुई है।

पाकिस्तान में तीन आतंकी हमलों में 39 की मौत

इस्लामाबाद। पाकिस्तान में बंदूकधारियों ने 39 लोगों की हत्या कर दी। बलूचिस्तान में हाईवे को ब्लॉक कर लोगों के आईडी कार्ड चेक करने के नाम पर 23 लोगों की गोली मारी। रेल लाइन पर हुए विस्फोट में 6 लोग मारे गए। वहीं, पुलिस स्टेशनों पर हुए हमले में सुरक्षाकर्मियों समेत 10 लोगों की मौत हो गई। उग्रवादी संगठन बलूचिस्तान लिबरेशन आर्मी ने हमले की जिम्मेदारी ली है। वहीं, जवाबी कार्रवाई में बीएलए के 12 लड़ाके मारे गए हैं।

जेएंडके: नेकां 51 व कांग्रेस 32 सीटों पर लड़ेगी चुनाव

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव को लेकर नेशनल कॉन्फ्रेंस (एनसी) और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग सोमवार को फाइनल हो गई। नेशनल कॉन्फ्रेंस 51 और कांग्रेस 32 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। 5 सीटों पर फ्रेंडली फाइट होगी। 2 सीटें सीपीआई (एम) और पैंथर्स पार्टी को मिली हैं। कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल, सलमान खुर्शीद और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष हामीद कर्रा ने सोमवार को श्रीनगर में नेशनल कॉन्फ्रेंस के सुप्रीमो फारूक अब्दुल्ला के घर जाकर मुलाकात की। नेताओं के बीच घंटों चली मीटिंग के बाद सीट शेयरिंग पर बात बनी।

मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना के लिए हर साल जारी होंगे 53.21 करोड़ : सुक्खू

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश सरकार ने 'मुख्यमंत्री सुख शिक्षा योजना' शुरू की है। इस योजना का मुख्य उद्देश्य विधवा, बेसहारा, तलाकशुदा महिलाओं और विकलांग माता-पिता को उनके बच्चों की शिक्षा और कल्याण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना है। सरकार इस योजना के लिए सालाना 53.21 करोड़ रुपए की धनराशि आवंटित करेगी।

इस योजना के तहत पात्र महिलाओं और विकलांग माता-पिता को 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण संबंधी खर्चों को पूरा करने के लिए 1000 रुपए का मासिक अनुदान प्रदान किया जाएगा। स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने वाले बच्चों को ट्यूशन और छात्रावास का खर्च वहन करने के लिए भी सरकार वित्तीय सहायता प्रदान करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि शैक्षणिक और वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण विधवा और परित्यक्त महिलाओं को अपने बच्चों का पालन-पोषण करने में बहुत कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये महिलाएं विशेष रूप से कमजोर हैं और उन्हें खुद का अस्तित्व बनाए रखने व अपने बच्चों की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक नैतिक और वित्तीय सहायता की कमी है।

कोलकाता रेप-मर्डर केस की गुत्थी सुलझाने में लगी सीबीआई

आरोपी संजय रॉय ने 18 दिन बाद कबूला जुर्म

एजेंसी, नई दिल्ली

कोलकाता रेप-मर्डर केस के मुख्य आरोपी संजय रॉय ने पॉलीग्राफ टेस्ट में अपना जुर्म कबूल कर लिया है। संजय ने कहा कि उसने रेप के बाद ट्रेनी डॉक्टर का मर्डर किया था। घटना को अंजाम देने से पहले वह रेड लाइट एरिया गया था। रास्ते में भी एक लड़की को छेड़ा और गर्लफ्रेंड से न्यूड तस्वीरें मांगी थीं।

अनियमितता मामले में घोष के खिलाफ एफआईआर दर्ज

पुलिस कस्टडी में भी संजय ने रेप और मर्डर की बात स्वीकार की थी। संजय का यह कबूलनामा मर्डर और रेप के 18 दिन बाद आया है। वहीं, 9 अगस्त की रात 2:45 बजे तक पीड़िता डॉक्टर जीवित थीं। इस बात की पुष्टि एजेंसियों के पास मौजूद तकनीकी साक्ष्यों से हुई है। वहीं, सीबीआई की टीमों ने आरजी कर मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के पूर्व प्राचार्य संदीप घोष, पूर्व अधीक्षक संजय वशिष्ट व फॉरेंसिक विभाग के प्रमुख देबाशीष सोम से अलग-अलग पूछताछ की।

सीबीआई ने अस्पताल में वित्तीय अनियमितताओं के मामले में पूर्व प्रिंसिपल घोष का नाम एफआईआर में दर्ज किया है। घोष के अलावा, सीबीआई ने मध्य जोरहाट, बानीपुर, हावड़ा के मेसर्स तारा ट्रेडर्स, जेके घोष के खिलाफ भी मामला दर्ज किया है।

न्यूज ब्रीफ

कृष्ण मंदिर में धूमधाम से मनाई जन्माष्टमी

अनंत ज्ञान, शिमला। राजधानी शिमला में जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। शिमला के प्रसिद्ध कृष्ण मंदिर में भी सुबह से ही कृष्ण भक्तों की भीड़ लगी रही। भक्त लंबी-लंबी कतारों में लगकर भगवान श्री कृष्ण के दर्शन किए। सनातन धर्म सभा के महासचिव सुमन पाल दत्ता ने बताया कि सुबह से ही भक्तों की दर्शन करने के लिए भारी भीड़ लगी रही। यहां मंदिर में सभी व्यवस्थाएं पूरी की गई हैं।

कंगना सोच समझकर करे बयानबाजी : संजय

अनंत ज्ञान, शिमला। हिमाचल के मंडी से सांसद कंगना रनौत एक बार फिर सुर्खियों में आ गई हैं। सांसद कंगना रनौत की तरफ से दिए गए बयान पर कांग्रेस ने पलटवार किया है। कांग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष संजय अवस्थी ने कहा कि राजनीति की समझ आने में कंगना रनौत को अभी समय लगेगा। फिल्मों में अभी तक कंगना स्क्रिप्ट पढ़कर काम करती रही है, लेकिन राजनीति फिल्मी स्क्रिप्ट पर नहीं चलती है। मंडी से सांसद बनने के बाद अब कंगना संवैधानिक पद पर है। इसलिए कंगना को अब मुद्दों की गंभीरता को समझ कर बयानबाजी करनी चाहिए। संजय अवस्थी ने कहा केंद्र सरकार की ओर से लाए गए किसान विरोधी तीन बिलों को लेकर देश के अन्नदाता अपनी मर्जी से आंदोलन में नहीं उतरे थे। केंद्र में जब से भाजपा सरकार आई है, देश में लगातार अनेक घटनाएं घट रही है।

एचपीयू में फ्री कोचिंग के लिए 27 को होगी काउंसिलिंग

अनंत ज्ञान, शिमला। प्रदेश विश्वविद्यालय परिसर में चल रहे पूर्व परीक्षा प्रशिक्षण केंद्र में जल्द ही यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन यूपीएसी की कोचिंग कक्षाओं का इस सत्र से बैच बैठाया जाएगा। इसके लिए 27 अगस्त को काउंसिलिंग होगी। 70 के बैच को बैठाने के लिए काउंसिलिंग का शेड्यूल जारी कर दिया गया है। मेरिट के आधार पर ही प्रवेश मिलेगा। सीट आवंटन के लिए आरक्षण रोस्टर लागू होगा। यूपीएससी के इस बैच की एक अगस्त से 31 मार्च तक कुल 800 घंटे की कोचिंग कक्षाएं संचालित की जाएंगी। इसमें आरक्षित वर्ग के चयनित अभ्यर्थियों को चार हजार और सामान्य वर्ग के अभ्यर्थियों को आठ हजार फीस दो किस्तों में केंद्र को देनी होगी। विवि ने बैच को बैठाने की तैयारियां पूरी कर दी हैं।

डीएवी गजेड़ी ने मनाया जन्माष्टमी का त्योहार

अनंत ज्ञान, शिमला। डीएवी स्कूल गजेड़ी ठियोग में बहुत ही हर्षोल्लास के साथ जन्माष्टमी का त्योहार मनाया गया। इस अवसर पर स्कूल के छात्र एवं छात्राओं ने एक रैली में भी भाग लिया। सुभाष चौक से जनोग चौक तक हुई। स्कूल के प्रधानाचार्य आरबीएस थापा ने जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं दीं।

दो दिवसीय बरमाणा गुग्गा मेला 31 से

अनंत ज्ञान, बिलासपुर। बरमाणा ऐतिहासिक गुग्गा मेला उत्सव समिति द्वारा दो दिवसीय सांस्कृतिक संध्या का आयोजन 31 अगस्त व एक सितंबर को करवा रही है। समिति के प्रधान प्रेमचंद ठाकुर ने बताया कि पूर्व की तरह इस बार भी इन दोनों सांस्कृतिक संध्या का आयोजन एसीसी स्पोर्ट्स क्लब परिसर बरमाणा में किया जाएगा। प्रथम सांस्कृतिक संध्या 31 अगस्त और दूसरी पहली सितंबर को हिमाचल के सुरक्षेत्र के सुप्रसिद्ध सिंगर भाग लेंगे वही पर लोक कलाकार भी अपनी प्रतिभा दिखाएंगे।

बैठक में गुग्गा मेला उत्सव समिति के समस्त कार्यकारिणी सदस्यों की उपस्थिति में यह निर्णय लिया गया कि दोनों ही सांस्कृतिक संध्या का आयोजन सायं 7 बजे के करीब आयोजित होगा। बता दें कि इस मर्तबा सूबे के कलाकारों को ही तवज्जो दी जाएगी। गुग्गा मेला उत्सव समिति बरमाना बिलासपुर गत वर्षों की तरह इस बार भी सभी से सहयोग की अपेक्षा करती है। समिति ने बताया कि जनता का प्रेम, सहयोग तथा मार्गदर्शन समिति को सदैव प्राप्त होता रहा है।

योग से जीवन में आता है सकारात्मक बदलाव

गोपाल कपिल, झंडूता। झंडूता उपमंडल के शिवा गुरुकुल इंटरनेशनल स्कूल में एक दिवसीय पांचवें जिला स्तरीय योगासन स्पोर्ट्स चैंपियनशिप का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम का आयोजन जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन बिलासपुर की तरफ किया गया। इस कार्यक्रम में जिला बिलासपुर के अलग-अलग हिस्सों से लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया। नियमित योगाभ्यास करने से जीवन में सकारात्मक बदलाव होता है। खासकर स्कूली छात्रों को रोजाना प्राणायाम, सूक्ष्म व्यायाम का अभ्यास करना चाहिए। इससे बच्चों के मानसिक विकास तेजी से होता है। साथ ही शरीर के भीतर अशुद्धि नष्ट हो जाती है। ध्यान एकाग्र होता है। वे शिक्षा के क्षेत्र में बहुत तेजी से आगे बढ़ते हैं। इसके अलावा युवा और बुजुर्गों को भी प्रतिदिन योग अभ्यास करना चाहिए। इससे वे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वास्थ्य रहेंगे। कार्यक्रम के संयोजक सुनील चंदेल ने बताया कि इसमें पूरे जिला से लगभग 100 बच्चों ने भाग लिया। (अनंत ज्ञान)

राजेश ठाकुर बने सायर मेला समिति के अध्यक्ष

अनंत ज्ञान, बिलासपुर। जिला स्तरीय सायर मेला समिति ने रविवार को मेला ग्राउंड में एक बैठक का आयोजन किया जो कि देर शाम तक चली। बैठक के दौरान पुरानी कार्यकारिणी को भंग किया गया, जिसके बाद नई कार्यकारिणी के गठन का निर्णय लिया गया। समिति के सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से तीन वर्षों के लिए नई कार्यकारिणी का गठन किया। अध्यक्ष पद पर राजेश ठाकुर को सर्वसम्मति से चुना गया, वहीं श्याम लाल ठाकुर को महासचिव, गोपाल ठाकुर को कोषाध्यक्ष पद के लिए चुना गया। उपप्रधान पद की जिम्मेदारी अमर सिंह ठाकुर, गुलाबा राम, ठाकुर तथा संजय शर्मा तथा सहसचिव पद के लिए रूप लाल भट्टी, प्रदीप ठाकुर तथा प्रदीप ठाकुर को चुना गया। नवनियुक्त अध्यक्ष राजेश ठाकुर ने बताया कि आगामी रविवार को दोबारा मेला ग्राउंड में बैठक का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें उपसमितियों का गठन कर जिला स्तरीय सायर मेले के सफल आयोजन की रूपरेखा बनाई जाएगी।

स्क्रब टायफस पीड़ितों का आंकड़ा बढ़ा

आईजीएमसी में रोजाना आ रहे पॉजिटिव मामले, चिकित्सकों ने किया अलर्ट जारी

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला

आईजीएमसी में स्क्रब टायफस से पीड़ितों का आंकड़ा लगातार बढ़ता ही जा रहा है। अब अस्पताल में उपचार के लिए आने वालों की संख्या 60 से अधिक हो गई है। हालांकि अभी तक इस सीजन में 1 मौत हुई है। मामले में हो रही बढ़ोतरी को देखते हुए अब चिकित्सकों ने अलर्ट रहने को कहा है।

चिकित्सकों का कहना है की लोग लापरवाही न बरतें, समय से अस्पताल में आकर अपना उपचार करवाएं। सक्रब टायफस के इस बुखार को रहस्यमयी इसलिए माना जा रहा है, क्योंकि इसके लक्षण तो डेंगू फीवर से मिलते-जुलते हैं, लेकिन जांच में न तो डेंगू निकलता है और न ही टाइफाइड फीवर। डॉक्टरों का कहना है कि ये स्क्रब टायफस फीवर है। तेज बुखार के साथ होने वाली ये बीमारी झाड़ियों यानी स्क्रब या बुश में पाए जाने वाले माइट यानी चींचड़ के काटने से होती है। इसलिए इसका नाम स्क्रब टायफस रखा गया है।

स्क्रब टायफस के क्या हैं लक्षण

लक्षण पिस्सु के काटने के 10 दिन बाद दिखने शुरू होते हैं। संक्रमित व्यक्ति को बुखार के साथ ठंड लगती है। इसके अलावा सिरदर्द और बदन दर्द के साथ मांसपेशियों में भी तेज दर्द होता है। संक्रमण ज्यादा होने पर हाथ, पैर, गर्दन और कूल्हे के नीचे गिल्टियां हो जाती हैं। स्क्रब टायफस के रोगियों को तेज बुखार 104 से 105 तक आ सकता है। साथ ही संक्रमण के बाद सोचने-समझने की क्षमता कम होने लगती है। कभी-कभी शरीर पर दाने भी हो सकते हैं। अगर समय पर इलाज न कराया जाए तो भ्रम से लेकर कोमा तक की समस्ये या महसूस होने लगती है। कुछ लोगों में ऑर्गन फेलियर और इंटरनल ब्लीडिंग भी हो सकती है।

जांच के लिए किया जाता है एलीजा टेस्ट

स्क्रब टायफस की जांच के लिए एंजाइम लिंक्ड इम्यूनोसोरबेंट यानी एलीजा टेस्ट किया जाता है। ये टेस्ट आईजीजी और आईजीएम की जानकारी अलग से देता है।

ब्लड सैंपल लेकर एंटीबॉडीज का पता किया जाता है। एक जांच किट की कीमत करीब 18,000 से 20,000 रुपए होती है।

ऐसे करें बचाव

स्क्रब टायफस से बचाव के लिए अभी तक कोई वैक्सीन नहीं बनाई गई है। स्क्रब टायफस से बचाव ही सबसे अच्छा इलाज है। ये बीमारी सितंबर-अक्टूबर के महीने में सबसे ज्यादा फैलती है। शरीर में सफाई का ध्यान रखें। घर और आसपास के वातावरण को साफ रखें। घर के चारों ओर घास, खरपतवार नहीं उगने दें। घर और आसपास कीटनाशक दवाओं का छिड़काव करें। डॉक्टर से परामर्श लेना अच्छा विकल्प है।

यह है इलाज

परीक्षण में स्क्रब टायफस रोग की पुष्टि होने के बाद डॉक्टर्स बीमारी की गंभीरता कम करने के लिए एंटीबायोटिक दवाएं देते हैं। साथ ही दूसरे लक्षणों को ध्यान में रखते हुए उपचार के लिए अन्य दवाइयां भी दी जाती हैं। डॉक्टर्स की पूरी कोशिश मरीज की हालत गंभीर होने से रोकना और रोगी को कोमा जैसी स्थिति में नहीं जाने देने की रहती है।

सितंबर माह के लिए डिपुओं में राशन का हुआ आवंटन, नहीं हुई कटौती

अनंत ज्ञान, शिमला

प्रदेश में डिपुओं में राशन का आवंटन हो गया है। इस बार राशन में किसी भी प्रकार की कटौती नहीं हुई है। ऐसे में सस्ता राशन लेने वालों के लिए राहत की खबर है। बताया जा रहा है कि प्रदेश के पांच हजार से अधिक डिपुओं में एपीएल परिवारों को अगले महीने दिए जाने वाले राशन के कोटे में कोई कट नहीं लगाया है।

एपीएल परिवारों को सितंबर महीने में भी 14 किलो आटा और 6 किलो चावल कोटा प्रति राशन कार्ड दिया जाएगा। राहत की बात ये है कि प्रदेश सरकार ने पिछले साल अगस्त 2023 से एपीएल परिवारों को दिए जाने वाले आटे और चावल के कोटे में कोई कट नहीं लगाया है। हिमाचल में उससे पहले हर दो तीन महीने में सस्ते राशन के कोटे को घटाया और फिर से बढ़ाया जाता था, लेकिन अब एक साल से राशन की मात्रा में कोई फेरबदल नहीं किया जा रहा है। जिससे लाखों एपीएल परिवारों ने कुछ राहत मिलेगी। वहीं ऐसे उचित मूल्य की दुकानों में सस्ते राशन की लिफ्टिंग 100 फीसदी पहुंच गई है। प्रदेश भर में अगले महीने उचित मूल्य की दुकानों के माध्यम से एपीएल परिवारों के लिए 20,952 मीट्रिक टन राशन वितरित किया जाएगा, जिसमें 14,490 मीट्रिक टन गेहूं का आटा और 6,382 मीट्रिक टन चावल की मात्रा शामिल है।

वहीं अब तय की गई मात्रा के हिसाब से डिपो धारकों को 29 अगस्त से सस्ते राशन के परमिट जारी होंगे। प्रदेश में कुल राशन कार्ड धारकों की संख्या 19,65,589 है, इसमें एपीएल परिवारों की कुल संख्या 12,24,448 है। इसमें 11,52,003 एपीएल परिवार है। वहीं एपीएल टैक्स पेयर की कुल संख्या 72,445 है। इसके तहत एपीएल कार्ड धारकों की कुल आबादी 44,19,312 है। जिसमें एपीएल परिवारों आबादी 41,26,583 है। वहीं टैक्स पेयर की आबादी 2,92,729 है, जिन्हें अगले महीने 14 किलो आटा और 6 किलो चावल प्रति राशन कार्ड दिया जाएगा।

सुन्नी में कृष्ण जन्माष्टमी पर निकाली झांकियां

महेंद्र कुमार, सुन्नी

कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में सुन्नी में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए । इस दौरान झांकियां निकाली गई और शोभा यात्रा निकाली गई । बता दें कि सुन्नी मेला मैदान में कृष्ण लीला महोत्सव आयोजित किया जा रहा है । स्थानीय कृष्ण भक्तों के सहयोग से मथुरा वृंदावन के कथावाचक पवन देव चतुर्वेदी तथा उनकी सहयोग 20 सदस्य टीम द्वारा कृष्ण लीला का मंचन किया जा रहा है ।

झांकियां और संगीतमय कथा के माध्यम से कृष्ण लीला का मंचन किया जा रहा है । बहरहाल सुन्नी में कृष्ण जन्मोत्सव को बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया । वहीं तत्तापानी में भी धर्म रक्षा समिति के सदस्यों द्वारा तत्तापानी बाजार में

सुन्नी में कृष्ण जन्मोत्सव पर झांकियां निकलते स्थानीय श्रद्धालु ।

झांकियां और शोभायात्रा निकाली गई । (अनंत ज्ञान)

मोदी सरकार सोच समझकर कर रही काम : कश्यप

अनंत ज्ञान, शिमला। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के कैबिनेट द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने के निर्णय का स्वागत किया।

कश्यप ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को गर्व है कि नरेंद्र मोदी ने सरकारी कर्मचारियों की चिंता सुनी, उसे समझा, उसके लिए डॉ. रंगनाथन कमेटी बनाई और यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने का एक सार्थक निर्णय लिया, जो बहुत ही प्रशंसनीय है। इसके लिए भारतीय जनता पार्टी आदरणीय प्रधानमंत्री और मोदी सरकार का अभिनंदन करती है।

मोदी की सरकार सोच समझकर, विचार करके काम करती है। अस्थायी निर्णय लेकर काम नहीं करती है।

कानून व्यवस्था पर रहेगी पैनी नजर : अनुपम

अनंत ज्ञान, शिमला

जिला दंडाधिकारी शिमला अनुपम कश्यप ने अपने कार्यालय में 27 अगस्त से शुरू हो रहे विधानसभा सत्र के मद्देनजर जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ कानून व्यवस्था को लेकर बैठक की। उन्होंने कहा कि विधानसभा सत्र का आयोजन 27 अगस्त से 9 सितंबर 2024 तक किया जा रहा है। इस दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिला प्रशासन कटिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सत्र के दौरान कानून व्यवस्था पर जिला प्रशासन की पैनी नजर रहेगी।

उन्होंने कहा कि विधानसभा सत्र के दौरान विधानसभा क्षेत्र के समीप प्रदर्शनकारी किसी भी प्रकार का धरना-प्रदर्शन नहीं कर पाएंगे। इस दौरान अनुमति के साथ केवल चौड़ा मैदान में ही धरना-प्रदर्शन कर सकेंगे। उन्होंने

अधिकारियों के साथ बैठक करते हुए अनुपम कश्यप।

जिला दंडाधिकारी ने की जिला प्रशासन के अधिकारियों के साथ बैठक

कहा कि धरना-प्रदर्शन को लेकर जिला प्रशासन से अनुमति लेना अनिवार्य है।

अनुपम कश्यप ने विधानसभा सत्र को लेकर लगाए गए दंडाधिकारियों को पुलिस प्रशासन के अधिकारियों के साथ बेहतर समन्वय स्थापित करने के निर्देश दिए ताकि सत्र के दौरान कानून व्यवस्था को लेकर किसी भी प्रकार की समस्या सामने न आए। बैठक में अतिरिक्त उपायुक्त अभिषेक वर्मा, अतिरिक्त जिला दंडाधिकारी (कानून एवं व्यवस्था) अजीत भारद्वाज, उपमंडल दंडाधिकारी शिमला शहरी भानु गुप्ता सहित विधानसभा सत्र के लिए लगाए गए दंडाधिकारी भी उपस्थित रहे।

राजेश धर्माणी के बचाव में आगे आए शिक्षक संगठन

प्रेसवार्ता कर कहा, सचिवालय के कर्मचारियों को मंत्री से मांगनी चाहिए माफी

अनंत ज्ञान ब्यूरो, बिलासपुर

बिलासपुर में तमाम शिक्षक संगठन तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी के बचाव में आगे आए हैं। इन शिक्षक संगठनों ने राज्य सचिवालय कर्मचारियों द्धारा तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी के खिलाफ की गई अभद्र भाषा की कडी निंदा की है। इन शिक्षक संगठनों ने प्रदेश सरकार इस वर्ग की लंबित मांगों पर शीघ्र उचित कार्रवाई करने की मांग की है। वहीं, प्रदेश के लाखों कर्मचारियों के लिए ओपीएस लागू करने पर आभार जताया है।

पत्रकारों को संबोधित करते हुए एचजीटीयू के जिला अध्यक्ष राकेश संधु ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रदेश के कर्मचारियों की डीए की लगभग तीन चार किश्ते लंबित हो गई है, लेकिन

प्रदेश की आर्थिक स्थिति सही नहीं है। यह सरकार की देनदारी है। इस मुद्दे पर मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कर्मचारियों को एक माह भीतर विचार करने का आश्वासन दिया है।

एचजीटीयू इस मुददे पर सरकार के साथ है। उन्होंने केंद्र सरकार से एनपीएस के 9000 करोड़ वापस देने, सरकारी शिक्षण संस्थानों में युक्तिकरण की नीति को नए शिक्षा सत्र 2025 से लागू करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि 26 अप्रैल, 2010 से पहले नियुक्त टीजीटी दोहरी पदोन्नति का लाभ उठाते थे। लेकिन उसके पश्चात जो व्यक्ति प्रवक्ता पद पर पदोन्नत हो जाता है तो वह मुख्याध्यापक की पदोन्नति से वंचित हो जाता है। इसलिए 26 अप्रैल से नियुक्त टीजीटी वर्ग को इस शर्त से बाहर रखा जाए। इसके अलावा उन्होंने सरकार से शिक्षा विभाग में नियमित शिक्षकों की भती करने, सेवानिवृत्त आयु 60 वर्ष करने, जेबीटी से टीजीटी की पदोन्नति सूची शीघ्र जारी करने, प्रधानाचार्यों की पदोन्नति सूची जारी करने सहित अन्य मांगों को पूरा करने की मांग की है। वहीं, हिमाचल प्रदेश राजकीय टीजीटी आर्टस एसोसिएशन के अध्यक्ष राकेश चौधरी व महासचिव पवन शर्मा सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी राज्य सचिवालय कर्मचारियों द्धारा तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी के खिलाफ की गई अभद्र भाषा के प्रयोग पर विरोध जताया है।

उन्होंने प्रदेश सरकार ने टीजीटी से मुख्याध्यापक की पदोन्नति सूची शीघ्र जारी करने की मांग की है। वहीं, जिला विज्ञान अध्यापक संघ के अध्यक्ष अवनीश कुमार व महासचिव ने भी राज्य सचिवालय कर्मचारियों द्धारा तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी के खिलाफ की गई अभद्र भाषा पर आपत्ति जाहिर की है।

कर्मचारी नेता पर कांग्रेस करेगी मानहानि का केस

नीरज शर्मा, घुमारवीं

ब्लॉक कांग्रेस कमेटी घुमारवीं द्वारा सोमवार को आयोजित एक प्रेस वार्ता के दौरान सचिवालय के कुछ कर्मचारी नेताओं को अपनी भाषा को मर्यादित करने और संयम से काम लेने की बात कही है। पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए ब्लॉक कांग्रेस कमेटी घुमारवीं के मीडिया प्रभारी राजीव शर्मा ने कहा कि सचिवालय में कार्यरत कुछ कर्मचारी नेता जिस तरह से अमर्यादित भाषा का प्रयोग कर धर्माणी के खिलाफ अनाप-शनाप बयान बाजी कर रहे हैं। उसके लिए वह लोग धर्माणी से माफी मांगे नहीं तो ब्लॉक कांग्रेस कमेटी इस कर्मचारी नेता के खिलाफ मानहानि का केस दर्ज करेगी।

राजीव शर्मा ने कहा कि कर्मचारी नेता तय नहीं करेंगे कि कौन मंत्री बनेगा। क्योंकि मंत्री बनाना सरकार का काम है ना कि कर्मचारी नेताओं काए जो खुद को सचिवालय का मुख्यमंत्री बता रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार और मुख्यमंत्री हमेशा कर्मचारियों के हितेषी रहे हैं, जिसका सबसे बड़ा उदाहरण है प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनते ही मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने 2003 के बाद से बंद पड़ी ओल्ड पेंशन स्कीम को बहाल किया है। उन्होंने कहा कि एरियर तथा डीए की मांग करना कर्मचारियों का हक है, लेकिन उसके लिए इन कर्मचारी नेताओं को किसी भी प्रकार की अभद्र भाषा का प्रयोग करने का कोई अधिकार नहीं है। (अनंत ज्ञान)

पंचायत प्रधान का चुनाव लड़ कर देख लें कर्मचारी नेता

कांग्रेस ने खुले रूप से सचिवालय के इस कर्मचारी नेता को जिला बिलासपुर की किसी भी पंचायत से प्रधान पद चुनाव लड़ने की चुनौती दे डाली और कहा कि अगर उनमें हिम्मत है तो यहां की किसी भी ग्राम पंचायत से चुनाव लड़कर दिखाएं। उन्हें अपनी हैसियत का अंदाजा हो जाएगा।

शाहतलाई में कांग्रेस सरकार करवा रही कई विकास कार्य : विवेक कुमार

अनंत ज्ञान, बिलासपुर

शाहतलाई शहरी कांग्रेस इकाई की बैठक का आयोजन शाहतलाई में किया गया। इसकी अध्यक्षता ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष सतीश चंदेल ने की। इस बैठक में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं झंडूता कांग्रेस नेता विवेक कुमार ने विशेष रूप से शिरकत की। बैठक में शहरी कांग्रेस इकाई शाहतलाई ने विभिन्न समस्याएं भी विवेक कुमार के समक्ष रखी। इन

समस्याओं के समाधान का आश्वासन विवेक कुमार ने दिया। इस मौके पर विवेक कुमार ने कहा कि क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी को लगातार मजबूती प्रदान की जा रही है। विवेक कुमार ने कहा कि शाहतलाई में प्रदेश कांग्रेस सरकार की ओर से विकास कार्य करवाए जा रहे हैं, जिसका लाभ जनता को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि शाहतलाई में मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए प्रदेश सरकार की ओर से करीब पौने तीन करोड़ का प्रोजेक्ट स्वीकृत हुआ है। इसके अलावा अन्य विकास कार्य भी क्षेत्र में करवाए गए हैं।

प्रदेश की सुक्खू सरकार हर मोर्चे पर हो रही फेल : गर्ग

अनंत ज्ञान, घुमारवीं

प्रदेश कांग्रेस सरकार के मंत्री, घुमारवीं के विधायक राजेश धर्माणी द्वारा यह कहना कि सरकार के पास नोट छापने की मशीन नहीं है। इस बात को सिद्ध करती है कि चुनावों से पूर्व जो प्रदेश की जनता को झूठी गारंटियां दी थीं, वह जनता से वोट ठगने का षड्यंत्र मात्र था। यह बात पूर्व मंत्री राजेंद्र गर्ग ने कही। उन्होंने कहा कि चुनावों से पहले तो हर बात हर गारंटी पूरी करने के लिए कैबिनेट की पहली मीटिंग में खटाखट पूरी करने की गारंटियां जो दी हैं, अब वो खटाखट की मशीन कहां चली गई। उन्होंने प्रदेश की सुक्खू सरकार पर आरोप लगाया कि

अपनी एक भी गारंटी पूरी नहीं कर पाई और यह सरकार हर मोर्चे पर फेल साबित हुई है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने जो 18 से 60 वर्ष की आयु की युवतियों एवं महिलाओं को 1500 प्रतिमाह खटाखट देने की गारंटी दी थी वो गारंटी भी लगातार हिचकोले खा रही है। पहले विधानसभा चुनाव पूर्व महिलाओं को फार्म भरवाने के लिए दौड़ाया, उनका खर्चा करवार्या। फिर लोक सभा चुनाव पूर्व फिर से महिलाओं को दौड़ाया फार्म भरने के लिए और पैसा खर्च करवाया और अब पंचायत प्रधानों की ग्राम सभाओं में पात्र महिलाओं के फार्म भरवाने के आदेश दे दिए।

त्योहार कृष्ण जन्माष्टमी पर नन्हे-मुन्हे बच्चों ने राधा और कृष्ण बनकर मोहा मन

मिनर्वा संस्थान में बच्चों ने फोड़ा मटका

अनंत ज्ञान, घुमारवीं

मिनर्वा संस्थान व माइंड गार्डन घुमारवीं में कृष्ण जन्माष्टमी पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। छात्र-छात्राओं ने कृष्ण और राधा का रूप धरा और सुंदर-सुंदर नृत्य करके रंग जमाया, जिसमें छात्र छात्राओं ने कृष्ण की बाल लीलाओं का सजीव मंचन कर मन मोह लिया। जन्माष्टमी पर विद्यालय को सजाया गया। सर्वप्रथम शिक्षकों ने बच्चों को कृष्ण जन्माष्टमी पर्व से जुड़ी मान्यता का वर्णन कर इससे जुड़ी कथा का वर्णन किया। इसके उपरांत अन्य गतिविधियों को आयोजन हुआ। अंत मे सबसे मुख्य कार्यक्रम मटका फोड़ हुआ। आयोजित

कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने कृष्ण की बाल क्रीड़ा, कालिया वध, माखन चोरी और गोपियों के वस्त्र चुराने की लीलाओं का मंचन किया। इस मौके पर मिनर्वा किड्स जोन की प्रभारी आरती चंदेल ने छात्र-छात्राओं की प्रतिभा प्रदर्शन को लेकर उनकी हौसला अफजाई करते हुए जन्माष्टमी की सभी को बधाई दी है। उन्होंने बताया कि बच्चों के अंदर धार्मिक त्योहार और सांस्कृतिक भावना पैदा करने के लिए इस तरह की गतिविधियों का होना बहुत महत्व रखता है। पाठशाला प्रिंसिपल परवेश चंदेल ने बताया कि राधा-कृष्ण बनकर बच्चे बहुत खुश नजर आए। सभी ने बहुत उत्साह से कृष्ण जन्माष्टमी के कार्यक्रम में भाग लिया। प्रधानाचार्य चंदेल ने बच्चों में छिपी प्रतिभाओं की सराहना करते हुए सभी को इस पर्व की बधाई दी।

कुलदीप पठानिया ने सदस्यों से रचनात्मक सहयोग की अपील की

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला

विधानसभा सचिवालय में आयोजित सर्वदलीय बैठक के उपरान्त पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया ने कहा कि उन्होंने 27 अगस्त से आरंभ होने वाले मानसून सत्र के संचालन में सभी सदस्यों से सहयोग की अपील की है। पठानियां ने कहा कि यह एक महत्वपूर्ण सत्र है, जिसमें 10 बैठकें आयोजित की जा रही हैं। उन्होंने सभी सदस्यों से आग्रह किया है कि वे सदन के समय का सदुपयोग जनहित से संबंधित विषयों को उठाने के लिए करें तथा उस पर चर्चा करें।

उन्होंने कहा कि जो भी विषय माननीय सदस्य सदन में चर्चा के लिए लाएंगे, वह उसके लिए भरपूर समय देंगे तथा माननीय सदस्य का भी दायित्व रहेगा कि उस समय का सदुपयोग सार्थक चर्चा के लिए करें। उन्होंने कहा कि माननीय सदस्य प्रदेश हित तथा अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्र के विषय सदन में उठा सकते हैं तथा अविलम्ब चर्चा कर सकते हैं और सरकार भी उसका जवाब देने के लिए तत्पर हैं।

सदस्यों द्वारा सरकार से कितने प्रश्न पूछे गए हैं के सवाल का जवाब देते हुए पठानियां ने कहा कि इस सत्र में माननीय सदस्यों से कुल 936 प्रश्नों की सूचनाएं प्राप्त हुई हैं, जिसमें 640 प्रश्न तारांकित (ऑनलाइन 516, ऑफलाइन 124) तथा 296 प्रश्न अतारांकित (ऑनलाइन 248 व ऑफलाइन 48) प्राप्त हुए हैं जिन्हें नियमानुसार सरकार को आगामी कार्यवाही हेतु प्रेषित कर दिया गया है।

सर्वदलीय बैठक के दौरान संसदीय कार्य मंत्री हर्षवर्धन चौहान, मुख्य संसदीय सचिव मोहन लाल ब्राक्टा तथा सरकार के उप मुख्य सचेतक केवल सिंह पठानिया भी मौजूद थे

पत्रकारों को जानकारी देते विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया।

कहा-जो भी विषय माननीय सदस्य सदन में चर्चा के लिए लाएंगे, वह उसके लिए भरपूर समय देंगे

मानसून सत्र में संशोधन विधेयक लाएगी सरकार

हिमाचल विधानसभा का मानसून सत्र मंगलवार से शुरू होगा। सता पक्ष व विपक्ष के बीच हंगामे के आसार हैं। सत्र का शुभारंभ सुबह 11:00 बजे विधानसभा के तीन पूर्व सदस्यों टेकचंद, नारायण सिंह स्वामी और दौल गम चौधरी के निधन पर शोकोद्गार के साथ होगा। दो दिन गैर-सरकारी दिवस होगा, जिसमें विधायक अपने मसलों को नियम 101 के तहत चर्चा के लिए उठाएंगे। वहीं, सरकार से बगावत करने वाले कांग्रेस के 6 पूर्व विधायकों की पेंशन पर संकट मंडरा गया है। मानसून सत्र में हिमाचल विधानसभा सदस्य, पूर्व विधायक पेंशन संशोधन विधेयक लाने जा रही है। तीन निर्दलीय विधायकों व 6 पूर्व कांग्रेस विधायकों की इस टर्म की पेंशन पर तलवार लटक सकती है।

विधानसभा सत्र : सुरक्षा में नहीं होगी कोई चूक, चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात

अनंत ज्ञान ब्यूरो, शिमला

विधानसभा मानसून सत्र से निपटने के लिए सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता कर लिया गया है। चप्पे-चप्पे पर पुलिस के जवान तैनात कर लिए गए है। विधानसभा सत्र में इस बार 600 पुलिस कर्मियों के अलावा होमगार्ड व क्यूआरटी जवानों की तैनात की गई है, जो आंतरिक व बाह्य सुरक्षा का जिम्मा संभालेंगे। एसपी शिमला संजीव गांधी ने पुलिस जवानों को मुस्तैदी से कार्य करने के निर्देश दिए हैं।

इस बार पुलिस ने ऐसी तैयारी की है कि यहां परिंदा भी नहीं मार सकेगा। मानसून सत्र के दौरान किसी को भी परिसर में हथियार ले जाने पर पूर्ण रूप से रोक रहेगी और केंद्रीय बल और सशस्त्र धारी जवानों को भी विधानसभा परिसर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

पीएसओ व चालक भी गाड़ियों में विधानसभा के बाहर ही रहेंगे। विधानसभा के प्रवेश द्वारों पर मैटल डिटैक्टर लगाए गए है। वीआईपी गेटों पर दो विशेष कमांडो तैनात किए गए है। इसके अलावा विधानसभा परिसर को पांच सेक्टरों में विभाजित करने के साथ-साथ सीसीटीवी व ड्रोन के माध्यम से भी कड़ी निगरानी रखी जाएगी।

पुलिस ने वाहनों की पार्किंग के लिए भी योजना तैयार की है, जिसमें मंत्री, विधायकों व अधिकारियों के वाहनों को समुचित ढंग से पार्क करने की व्यवस्था की गई है। बिना पास किसी भी वाहन को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। कैनेडी चौक पर वाहनों को चैक करने के बाद ही उन्हें प्रवेश करने दिया जाएगा। इसके लिए पुलिस, होमगार्ड के 676 जवानों को तैनात किया गया है, वहीं मुख्य तीन प्रवेश द्वार के अलावा दस गेट पर सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए है।

एसपी शिमला संजीव गांधी ने कहा कि विधानसभा मानसून सत्र को लेकर पुलिस पूरी तरह से तैयार है और पुलिस के जवानों ने मोर्चा संभाल लिया है। विधानसभा ड्यूटी में तैनात पुलिस के अधिकारियों व कर्मचारियों को आवश्यक निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

सुरक्षा संबंधी जानकारी देते एसपी शिमला संजीव गांधी, साथ हैं अन्य पुलिस अधिकारी।

न्यूज ब्रीफ

यूपीएस लागू करने का निर्णय शानदार : कश्यप

अनंत ज्ञान, शिमला। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के कैबिनेट द्वारा सरकारी कर्मचारियों के लिए यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने के निर्णय का स्वागत किया। कश्यप ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को गर्व है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सरकारी कर्मचारियों की चिंता सुनी, उसे समझा, उसके लिए डॉ. रंगनाथन कमिटी बनाई और यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) लागू करने का एक सार्थक निर्णय लिया, जो बहुत ही प्रशंसनीय है। कश्यप ने कहा कि हिंडेनबर्ग मामले में एक कहानी देश की जनता को बताया था कि राहुल गांधी चिट पॉलिटिक्स करते हैं। किसी ने चिट पकड़ा दिया कि ओल्ड पेंशन स्कीम ले आओ, यह बहुत अच्छा मुद्दा है। किसी ने उन्हें संविधान का चिट पकड़ा दिया। उसके पहले किसी ने उन्हें राफेल का चिट पकड़ा दिया, तो कभी किसी ने उन्हें हिंडेनबर्ग का चिट पकड़ा दिया।

बरोटीवाला में छत से गिरने से युवक की मौत

अनंत ज्ञान, बीबीएन। बरोटीवाला के भटोलीकलां में एक युवक की छत से गिरकर दर्दनाक मौत हो गई। मृतक की पहचान गुड्डू पुत्र मेवा लाल निवासी कर्णपुर गरजागंज जिला लखीमपुर उत्तर प्रदेश से हुई। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार युवक छत से गिर गया था, जिसके सिर में चोट लगने के चलते उसकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिजनों के हवाले किया। अब पुलिस मामले की आगामी कार्रवाई अमल में ला रही है। थाना बरोटीवाला के तहत मामला दर्ज कर तफ्तीश शुरू कर दी है।

दाड़लाघाट में कार चोरी का मामला दर्ज

दाड़लाघाट। पुलिस थाना दाड़लाघाट के तहत क्यारड़ में अज्ञात लोगों द्वारा कार चोरी होने का मामला सामने आया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार धर्मपाल पुत्र मस्त राम गांव क्यारड़ (भराड़ीघाट) ने पुलिस को दी शिकायत में कहा कि मारुति 800 कार एचपी-10-4608 को अपने घर के पास एनएच-205 गांव क्यारड़ में खड़ी कर घर चला गया, जब वह सुबह अपनी कार के पास आया, तो इसकी कार एनएच-205 पर खड़ी नहीं थी। इसकी कार को रात को अज्ञात लोगों द्वारा चोरी कर लिया गया, जिसका पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। मामले की पुष्टि डीएसपी दाड़ला संदीप शर्मा ने की है।

अधजली लाश को लेकर पुलिस एक्शन में

अनंत ज्ञान, सोलन। जिला के सुबाथू छावनी क्षेत्र में करीब चार महीने पहले सफाई कर्मचारियों द्वारा अधजली लाश को खड्ड में धकेलने की आशंका को लेकर पुलिस एक्शन में आ गई है। प्रशासन की तरफ से चलाए गए सर्च ऑपरेशन में सोमवार दोपहर तक शव के अवशेष नहीं मिले थे। पुलिस को सूचना मिली कि अप्रैल महीने में राम बाग मार्ग पर स्थित डंपिंग साइट पर सफाई कर्मचारियों को एक अधजली लाश मिली थी। कर्मियों ने पुलिस को सूचित करने के बजाय इसे खड्ड में फेंक दिया गया। एसडीएम सोलन पूनम बंसल और डीएसपी परवाणू प्रणव चौहान की अगुवाई में पुलिस टीम ने रविवार को सर्च ऑपरेशन शुरू किया। लेकिन सोमवार दोपहर तक भी पुलिस को सफलता नहीं मिली थी। ऐसा शक है जाहिर किया जा रहा है कि यह लाश 24 अप्रैल को इलाके की एक पंचायत से लापता बुजुर्ग की हो सकती है। पुलिस ने छावनी प्रशासन के स्वच्छता निरीक्षक और सफाई कर्मचारियों से पूछताछ की है।

कोचिंग संस्थान के छात्र की संदिग्ध मौत

पीजी सेंटर की तीसरी मंजिल से गिरकर हुआ हादसा

विक्रम ढटवालिया, हमीरपुर

जिला मुख्यालय पर कोचिंग संस्थान के एक छात्र आर्यन की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। इस घटना को लेकर परिजन बेहद गुस्से में हैं। पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। शव का पोस्टमार्टम हो गया है। उसकी रिपोर्ट आनी बाकी है। घटना बीती रात बस स्टैंड के पास स्थित एक पीजी सेंटर पर हुई है। बगल के ही एक कोचिंग सेंटर में यह स्टूडेंट कोचिंग ले रहा था। 16 वर्षीय इस छात्र का 2 दिन बाद जन्मदिन भी था।

घटना कैसे हुई? किन परिस्थितियों में हुई और यदि तीसरी मंजिल से आर्यन की गिरकर मौत हुई है, तो वह स्थिति क्यों बनी? यह सवाल इसलिए उठ रहे हैं, क्योंकि परिजनों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से वह घर पर बार-बार फोन करके यह कह रहा था कि उसे इस पीजी में खाना ठीक से नहीं मिल रहा और यहां का व्यवहार भी अच्छा नहीं है। जिस वक्त वह तीसरी मंजिल से गिरा उससे ठीक थोड़ा पहले यानी रात के 11:47 पर उसकी मां से बात हुई थी। (अनंत ज्ञान)

> छानबीन शुरू कर दी गई है। फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंच गई है। वह भी जांच में जुट गई है।
> -राजेश कुमार, एएसपी हमीरपुर

8 महीने से कोचिंग ले रहा था आर्यन

मृतक आर्यन के पिता सुनील ने बताया कि पिछले कुछ दिनों से बेटे को हॉस्टल में तंग किया रहा था और दो-तीन दिनों से बेटे से फोन पर भी बातचीत हुई थी, जिसमें बेटे ने यह बात बताई थी।

बेटा पिछले 8 महीने से इस संस्थान में कोचिंग ले रहा था और निजी हॉस्टल में रह रहा था। उनका कहना है कि इस मामले की जांच हो और जो भी दोषी हो उसे कड़ी सजा मिले। क्योंकि यह घटना सामान्य नहीं है। उन्होंने बताया कि गत रात को बेटे के साथ हुई बातचीत की फोन रिकार्डिंग भी उनके पास है, जिसमें बच्चे ने बताया है कि मुझे ठीक से खाना नहीं दिया जा रहा है। इसी बात को लेकर बच्चे को तंग किया जा रहा था।

टांग और बाजू के कई टुकड़े हुए

बताया जा रहा है कि गिरने से उसकी बाजू और टांग में कई जगह फ्रैक्चर हो गए थे, गर्दन में भी फ्रैक्चर था। पीजी के अंदर जैसे ही उसके गिरे होने की जानकारी मिली, तो उसे अस्पताल पहुंचाया गया, लेकिन हालत गंभीर होने पर उसे पीजीआई रेफर किया गया था। रास्ते में उसकी मौत हो गई।

बच्चा कुछ दिनों से अपसेट था

पीजी मालिक विकास का कहना है कि पिछले दो-तीन दिनों से आर्यन उदास रह रहा था। पिछली रात पौने बारह बच्चे के पिता से बात हुई और बातचीत केबाद ही बच्चा तीसरी मंजिल से गिरा। गिरने के बाद मेडिकल कालेज में पहुंचाया गया है, लेकिन उसकी मौत हो गई।

किन्नर कैलाश की आधिकारिक यात्रा संपन्न, 7500 से ज्यादा ने किए दर्शन

जीता सिंह नेगी, रिकांगपिओ

किन्नर कैलाश की आधिकारिक यात्रा 26 अगस्त से संपन्न हो गई। इस वर्ष यात्रा का शेड्यूल एक अगस्त से 26 अगस्त तक रखा गया था जबकि पूर्व में एक से 15 अगस्त तक ही किन्नर कैलाश के दर्शन होते थे।

इन 26 दिनों में किन्नर कैलाश के दर्शन के लिए 7555 के करीब श्रद्धालु पहुंचे। बता दे कि एक अगस्त से 26 अगस्त तक आधिकारिक रूप से शुरू की गई किन्नर कैलाश यात्रा को अधिकांश श्रद्धालुओं ने दो दिनों की कठिन यात्रा कर पूर्ण की। इस दौरान किन्नौर प्रशासन द्वारा यात्रा को सफल बनाने के लिए पुलिस सहायता के साथ साथ मेडिकल की सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई। मौसम ने इस बार साथ दिया व भारी संख्या में श्रद्धालु किन्नौर पहुंचे। समुद्रतल से करीब 19, 850 फीट की ऊंचाई पर स्थित कैलाश दर्शन के लिए देश के विभिन्न राज्यों के शिव भगत पहुंचे। (अनंत ज्ञान)

लंबित मांगों को पूरा करके केंद्र सरकार ने उचित निर्णय लिया : डोगरा

वित्त मंत्री के साथ बैठक में भाग लेते हुए भारतीय मजदूर संघ के पदाधिकारी

दशमी रावत, रोहडू

राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ ने केंद्र सरकार द्वारा कर्मचारियों की लंबित पैंशन मांग को पूर्ण करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण का आभार व्यक्त किया।

महासंघ के आखिल भारतीय अध्यक्ष विपन कुमार डोगरा ने इस के लिए बीएमएस व जीईएनसी के संघर्ष का श्रेय दिया। उन्होंने बताया कि सरकारी कर्मचारी राष्ट्रीय परिसंघ (जीईएनसी) जिसमें राष्ट्रीय राज्य कर्मचारी महासंघ, केन्द्रीय कर्मचारी महासंघ, रेलवे महासंघ, पोस्टल महासंघ, स्वायत्तशासी महासंघ, प्रतिरक्षा महासंघ, सर्व आफ इंडिया आदि अनेक महासंघ है। जीईएनसी भारतीय मजदूर संघ से संबंधित है। सालों से बीएमएस के तत्वधान व जीईएनसी के वेनर तले ये कर्मचारी महासंघ पैंशन व अन्य कर्मचारी मागों को लेकर संघर्षरत रहे हैं ।

विपन डोगरा ने बताया कि ये निर्णय अच्छा है और कर्मचारियों की लंबित मांग केन्द्र की मोदी सरकार ने पूर्ण की है। वहीं कर्मचारियों में अनिश्चितता का भय भी दूर होगा। उन्हें अंतिम वेतन के आधे की गारंटी रहेगी। अब उन्हें लगता है कि पैंशन में राजनितिक दलों द्वारा की जा रही गातिविधियों पर भी विराम लगेगा। (अनंत ज्ञान)

मामला महिला पत्रकार पर गूर द्वारा शांगल से हमले का

आरोपी को स्पॉट पर ले जाकर पुलिस ने किया सीन रीक्रिएट

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू

'अनंत ज्ञान' समाचार पत्र की महिला पत्रकार पर देवकारज के दौरान कथित गूर के द्वारा शांगल से हमले के मामले में एफआईआर के बाद अब पुलिस ने आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। सोमवार को महिला पत्रकार कमलेश वर्मा को उदयपुर थाना बुलाया गया जहां पर थाना प्रभारी मुकुल शर्मा की अगुवाई में उन्हें स्पॉट पर ले जाया गया, जहां पर उन पर हमला हुआ था।

उस जगह की जानकारी लेकर पूरा मैप तैयार किया गया, ताकि मैप के आधार पर आगामी जांच हो सके। इसके बाद उन्हें मेडिकल के लिए फिर से सीएचसी उदयपुर लाया गया। मेडिकल करवाने के लिए कमलेश वर्मा ने इंकार किया। कमलेश वर्मा का कहना है कि 18 अगस्त को जब उन्हें चोटें आई थी तो उस दौरान सीएचसी उदयपुर में मौजूद चिकित्सक ने उनका ढंग से उपचार और मेडिकल सहित सीटी स्कैन करवाने की हिदायत देने की बजाए उनको मात्र टिटनेस का टीका लगाकर भेज दिया था। साथ ही उक्त चिकित्सक ने उनका उपचार करने की जगह उन्हें यह प्रवचन देना शुरू कर दिए थे कि इस मामले में कुछ नहीं होगा।

कमलेश ने बताया कि एक तो उस दिन चिकित्सक की ओर से उनका ढंग से मेडिकल नहीं किया गया वहीं, जब वह अपनी शिकायत लेकर उदयपुर थाना गई तो वहां भी उन्हें यह कहा गया कि यह तो उन्हें देवता का आशीर्वाद मिला है और उनकी एफआईआर भी दर्ज नहीं की गई।

कमलेश वर्मा का कहना है कि वह उस दिन अकेली थी और उनकी हालत भी ठीक नहीं थी, ऐसी स्थिति में चिकित्सक और उदयपुर थाना की ओर से भी उनका सहयोग नहीं किया गया, जिस कारण अगले दिन उनको एसपी लाहौल-स्पीति मयंक चौधरी से मिलना पड़ा और एसपी की दखलंदाजी के बाद ही आखिर 19 अगस्त को एफआईआर दर्ज हुई। सोमवार को उक्त कथित गूर को भी थाना में बुलाया गया था।

सनद रहे कि राज्य स्तरीय पोरी मेले के अंतिम दिन 'अनंत ज्ञान' की कुल्लू एवं लाहौल-स्पीति की प्रभारी कमलेश वर्मा पर देव कारज के दौरान कथित गूर के द्वारा शांगल से हमला किया गया था।

होटल में 4 व्यक्ति जुआ खेलते पकड़े

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। थाना सदर हमीरपुर के तहत पुलिस को मिली गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस की एक टीम ने हमीरपुर शहर के एक होटल के कमरे छापा मारा जिसमें चार लोगों को जुआ खेलते हुए पकड़ा गया।

पुलिस ने उक्त चारों व्यक्तियों को नियमानुसार गिरफ्तार करके इनके के कब्जा से 2500 रुपए बरामद किए गए तथा इनके विरुद्ध धारा 4 व 1 जुआ अधिनियम (गैम्बलिंग एक्ट) के अधीन पंजीकृत कर लिया गया है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश सिंह ने बताया कि मामला दर्ज कर छानबीन जारी है।

ज्वालामुखी में युवक पर तेजधार हथियार से हमला, बाल-बाल बचा

पंकज सोनी, ज्वालामुखी

ज्वालामुखी के गगड़ूही गांव में घर में बरामदे के बाहर सोए युवक पर किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा उसके गले पर तेजधार हथियार से हमला कर उसे बुरी तरह से लहुलुहान करने का मामला सामने आया है। फिलहाल इस घटना में घायल हुआ युवक हमीरपुर अस्पताल में उपचाराधीन है और डॉक्टरों के मुताबिक वह खतरे से बाहर है।

घायल युवक की पहचान गोकुल चंद उम्र 27 पुत्र स्वर्गीय अशोक कुमार निवासी सुनेहतर डाकघर गगड़ुही के रूप में हुई है।

उधर घटना की सूचना मिलते ही एसएचओ ज्वालामुखी विजय कुमार, एसआई नाजर सिंह सहित पुलिस कर्मी और फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर जहां साक्ष्य जुटाए वहीं उन्होंने मामले को लेकर परिजनों सहित अन्य लोगों के बयान दर्ज किए।

इस बीच पुलिस ने इलाके में संदिग्ध लोगों के बारे में भी जानकारी जुटाई। बहरहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर आगामी करवाई शुरू कर दी है। मामले की पुष्टि डीएसपी ज्वालामुखी आरपी जसवाल ने की है।

घर में बरामदे के बाहर सो रहा था पीड़ित युवक

जानकारी के अनुसार गोकुल चंद निवासी गगड़ूही ने पुलिस को बताया कि वह ट्रेक्टर चलाता है और वह दो भाई और तीन बहनें है जिनमें बहनों की शादी हो चुकी है और वह और उसका भाई अभी कुंवारा है। उसके अनुसार वह और उसका छोटा भाई घर के बरामदे में सोए हुए थे, इसी बीच समय करीब 2 बजे वह रात को बाथरूम के लिए उठा और दोबारा आकर अपनी जगह पर सो गया।

इसी बीच रात को किसी अंजान व्यक्ति ने उसके गले पर किसी तेजधार हथियार से हमला कर उसे लहुलुहान कर दिया। गोकुल ने बताया की इस घटना के बीच उसके छोटे भाई और माता ने उसे गांव के ही एक युवक रोहित की गाड़ी में उसे उपचाराधीन के लिए नादौन अस्पताल पहुंचाया, जहां से उसे हमीरपुर के लिए रैफर किया गया।(अनंत ज्ञान)

शोध

अब रोबोट्स से समझ में आएगा जानवरों के चरागाह से घर लौटने का व्यवहार

आईआईटी मंडी के शोधकर्ताओं का नवीनतम अध्ययन

अनिल शर्मा, मंडी

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के एक शोधकर्ता ने महत्वपूर्ण प्रगति की है ताकि समझा जा सके कि जानवर कैसे चारागाह के बाद भी घर वापस आ जाते हैं, भले ही उन्हें अप्रत्याशित मोड़ का सामना करना पड़े। आईआईटी मंडी के शोधकर्ताओं ने प्रोग्राम योग्य रोबोट्स का उपयोग करके यह अध्ययन किया कि जानवर चरागाह से घर कैसे लौटते हैं।

इस खोज से ऑटोमैटिक वाहनों के नेविगेशन खोज और बचाव अभियानों में क्रांति आ सकती है और कोशिका गतिशीलता के बारे में भी एक नया दृष्टिकोण मिल सकता है।

इस शोध में छोटे, प्रोग्राम योग्य रोबोटों का उपयोग करते हुए, शोधकर्ता ने नियंत्रित वातावरण में होमिंग व्यवहार की जटिलताओं का पता लगाया है। कई जानवरों के लिए प्रवास या चारागाह जैसी गतिविधियों के बाद घर लौटने की क्षमता महत्वपूर्ण होती है। उदाहरण के लिए, होमिंग कबूतर अपनी असाधारण नेविगेशन कौशल के कारण लंबी दूरी तक संदेश पहुंचाने के लिए प्रसिद्ध हैं। इसी तरह समुद्री कछुए, सामन और मोनार्क तितलियां अपने जन्मस्थान पर लौटने के लिए लंबी यात्राएं करते हैं। (अनंत ज्ञान)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मंडी के शोधकर्ताओं की टीम।

वैज्ञानिकों को आकर्षित करता होमिंग व्यवहार

प्रकृति में आमतौर पर देखा जाने वाला यह होमिंग व्यवहार लंबे समय से वैज्ञानिकों को आकर्षित करता रहा है। विभिन्न प्रजातियां होमिंग प्राप्त करने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग करती हैं। कुछ पथ एकीकरण पर भरोसा करते हैं, यात्रा की गई दूरी और दिशा के आधार पर अपनी वापसी की गणना करते हैं, जबकि अन्य गंध, स्थलचिह्न, तारों की स्थिति या पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र जैसे पर्यावरणीय संकेतों पर निर्भर करते हैं। इन विविध विधियों के बावजूद, होमिंग आमतौर पर एक अत्यंत कुशल प्रक्रिया होती है। हालांकि, जानवरों के नेविगेशन पर अध्ययन अभी भी जारी है।

शोध दल ने जानवरों के व्यवहार की नकल करने के लिए डिजाइन किए गए छोटे रोबोटों का उपयोग करके इन पैटर्नों की जांच की। लगभग 7.5 सेमी व्यास के ये रोबोट वस्तुओं और प्रकाश का पता लगाने के लिए सेंसर से लैस हैं, जिससे वे सबसे चमकीले प्रकाश स्रोत द्वारा चिह्नित घर का पता लगा सकते हैं। रोबोट स्वतंत्र रूप से नियंत्रित पहियों का उपयोग करके नेविगेट करते हैं और प्रकाश की तीव्रता के आधार पर अपने पथ को कुछ जानवरों के समान समायोजित करते हैं। शोधकर्ता ने पाया कि थोड़ा सा रैंडमनेस होने से होमिंग की अवधि पर कोई असर नहीं पड़ता है। कंप्यूटर सिमुलेशन ने ने भी इस बात की पुष्टि की है कि कभी-कभार रीसेट करने से जहां रोबोट सीधे घर की ओर पुनः उन्मुख होते हैं, बल्कि अपने पथ को ठीक करने की क्षमता भी बढ़ाते हैं।

क्या कहते हैं सहायक प्रोफेसर डॉ. हर्ष

आईआईटी मंडी के स्कूल ऑफ फिजिकल साइंसेज के सहायक प्रोफेसर डॉ. हर्ष सोनी ने कहा कि ये निष्कर्ष स्वचालित वाहनों के लिए बेहतर नेविगेशन सिस्टम के विकास और खोज एवं बचाव मिशनों में सुधार के लिए उपयोगी हो सकते हैं। इसके अलावा यह अध्ययन कोशिकीय गतिशीलता में मूल्यवान दृष्टिकोण प्रदान करता है, जहां समान प्रक्रियाएं हो सकती हैं।

अध्ययन के निष्कर्षों को जर्नल पीआरएक्स लाइफ में प्रकाशित किया गया है। अनुसंधान के सैद्धांतिक और संख्यात्मक पहलुओं का संचालन आईआईटी मंडी के डॉ. हर्ष सोनी के साथ द इंस्टीट्यूट ऑफ मैथमेटिक्स साइंसेज, चेन्नई के डॉ. अर्णब पाल और अरूप विश्वास ने किया है। इसके साथ ही प्रायोगिक कार्य का नेतृत्व आईआईटी बॉम्बे के डॉ. नितिन कुमार और सोमनाथ परमानिच ने किया है। शोध होमिंग के भौतिकी पर नए दृष्टिकोण प्रदान करता है और जैविक और तकनीकी दोनों संदर्भों में आगे की खोज के लिए मार्ग खोलता है।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य सञ्ज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते॥

भावार्थ: हे ब्राह्मणश्रेष्ठ! अपने पक्ष में भी जो प्रधान हैं, उनको आप समझ लीजिए। आपकी जानकारी के लिए मेरी सेना के जो-जो सेनापति हैं, उनको बतलाता हूं॥

अनंत ज्ञान
www.anantgyaan.in
कांगड़ा | मंगलवार, 27 अगस्त 2024

करणी माता मंदिर में चूहों को दूध चढ़ाने से पूरी होती है मनोकामना

राजस्थान के बीकानेर जिले के देशनोक में करणी माता का ऐसा अनोखा मंदिर है जहां माता के साथ चूहों के दर्शन से मनोकामना पूरी होती है। मंदिर में एक दो नहीं, बल्कि हजारों चूहे हैं। यह मंदिर चूहों वाली माता के नाम से भी विख्यात है। इस मंदिर में सफेद चूहों (काबा) का दर्शन शुभ माना जाता है। मान्यता के अनुसार, सफेद चूहे दिखाई देने पर मनवांछित कामना पूरी हो जाती है। यहां प्रतिदिन सुबह मंगला आरती और संध्या आरती के समय मंदिर में चूहों का जुलूस देखने लायक होता है। यहां चूहों को मां करणी का पुत्र कहा जाता है।

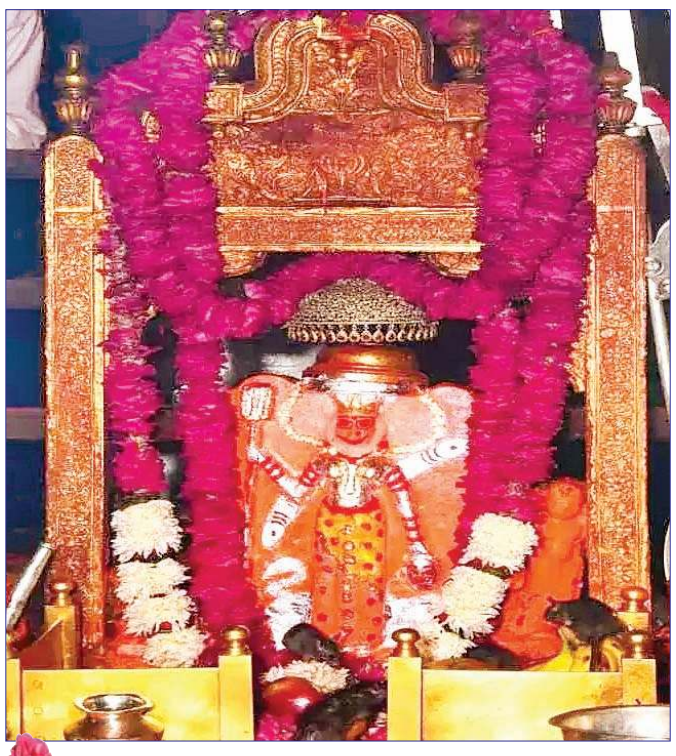

सफेद चूहे का महत्व

यहां मंदिर में जो चूहे हैं, वो आम चूहों से अलग हैं। यहां मंदिर में अगर किसी चूहे की मृत्यु हो जाए तो उसकी बदबू नहीं आती और न यहां छोटे चूहे मंदिर में दिखाई देते हैं। अगर इन चूहों में आपको सफेद चूहा दिख जाए तो आपकी मनोकामना जरूर पूरी होगी। मां करणी के इस मंदिर में भक्त घंटों सफेद चूहे के दर्शन के इंतजार में खड़े रहते हैं।

सफेद चूहा चमका देता है किस्मत

करणी माता मंदिर में पूजा के दौरान सफेद चूहा दिख जाए तो समझिए आपकी किस्मत चमक गई, क्योंकि सफेद चूहे को करणी माता का साक्षात रूप माना जाता है। जनता के साथ-साथ राजनीति के दिग्गजों का भी इस मान्यता पर अटूट विश्वास है। यही वजह है कि चुनाव हों या बड़ी राजनीतिक उठापटक। राजस्थान के इस मंदिर सरकार में राजनेता सिर झुकाने जरूर पहुंचते हैं और कोशिश करते हैं कि उन्हें सफेद चूहे के दर्शन हो जाएं ताकि उनका काम बिना किसी विघ्न-बाधा के पूरा हो जाए।

हिंगलाज देवी ने लिया करणी माता के रूप में अवतार

मान्यता है कि हिंगलाज देवी ने करणी माता के रूप में राजस्थान में अवतार लिया। हिंगलाज माता मां दुर्गा के 52 रूपों में से एक हैं। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में मकरान सूबे के हिंगोल नेशनल पार्क में हिंगलाज माता का मंदिर है, जिसकी गिनती 52 शक्ति पीठों में होती है। यही वजह है कि राजस्थान के राजपूताने से लेकर बलूचिस्तान तक करणी माता के प्रति गहरी आस्था है।

यहां होती है चूहों की पूजा

बीकानेर से 35 किलोमीटर दूर संगमरमर से बना मां करणी का भव्य मंदिर अपने आप में अनूठा है। यहां भक्त दर्शन को आते हैं और साथ ही चूहों के भी दर्शन करते हैं और चूहों को दूध चढ़ाते हैं। ऐसा माना जाता है कि चूहों को दूध चढ़ाने से मन्नत पूरी होती है। पूरे देश से लोग यहां माता के दर्शन के लिए पहुंचते हैं।

चारण जाति के लोग हैं चूहे

मां करणी का यह मंदिर 600 साल पुराना है। यहां की लोक मान्यता है कि मां करणी ने अपने पति को अपना असली रूप दिखाकर अपनी बहन से शादी करने को कहा और जब छोटी बहन के चार बेटों में से एक की मृत्यु तालाब में डूबने से हुई तो मां करणी ने यमराज धर्मराज से उसे वापस मांगा पर जब ऐसा नहीं हुआ तो मां करणी ने चारण जाति को ये आशीर्वाद दिया कि अब इस जाति में जिसकी की मृत्यु होगी, वो मृत्यु के बाद काबा यानी चूहा बनेंगे और जब किसी चूहे (काबे) की मृत्यु होगी तो वो चारण जाति में जन्म लेगा। इसलिए यहां जो चूहे हैं, उन्हें काबा कहा जाता है काबा यानी मां करणी के पुत्र। चारण जाति के लोग ही मां करणी के पुजारी होते हैं।

मंदिर का इतिहास

करणी का मंदिर जिसकी गुफा स्वयं मां करणी ने अपने हाथों से बनाई और एक सौ पचास साल तक इस गुफा में बैठ कर तपस्या की। उसके बाद समय समय पर बीकानेर के राजा महाराजा ने इस मंदिर का निर्माण करवाया, लेकिन महाराजा गंगा सिंह जो की मां के अनन्य भक्त थे, उन्होंने इस पूरे मंदिर को संगमरमर से बनाया जो की कारीगरी की एक मिसाल है। चांदी का भव्य द्वार इस मंदिर की शोभा बढ़ता है। करणी माता बीकानेर के पूर्व राजपरिवार की कुलदेवी हैं। करणी माता के लिए हमेशा सोने का छत्र और चूहों के प्रसाद के लिए चांदी की बड़ी परातों का उपयोग होता है। भक्तों द्वारा मंदिर में चढ़ाए जाने वाला प्रसाद परातों में रखा जाता है और चूहे आकर उस प्रसाद को ग्रहण करते हैं। यही प्रसाद भक्तों में वितरित होता है। मारवाड़ के सुवाण गांव में मेहाजी चारण के घर बेटी का जन्म हुआ था। उसका नाम रिद्धा रखा गया। मान्यता है कि रिद्धा ने बचपन में अपनी बुआ को स्पर्श करके उनकी टेढ़ी अंगुली को ठीक कर दिया था। उस दिन बुआ ने रिद्धा को करणी नाम दिया।

मां करणी का चमत्कार

करणी का अर्थ चमत्कारी है। करणी का विवाह दीपोजी चारण से हुआ। विवाह के बाद उन्होंने गृहस्थ त्यागा और तपस्या करने लगी। उस दौरान कुछ घटनाएं हुईं, जिनमें रिद्धा (करणी) ने अपना चमत्कार दिखाया और तभी से उसे करणी माता के नाम से पहचान मिली। उसके बाद देशनोक में तत्कालीन राजा गंगा सिंह ने करणी माता का मंदिर बनवाया। ट्रस्ट के पदाधिकारियों का कहना है कि मंदिर में पूजा-अर्चना का काम चारण समाज के लोग करते हैं। मान्यता के अनुसार, देशनोक में चारण समाज के जिस भी व्यक्ति की मृत्यु होती है, वह मंदिर में चूहे के रूप में जन्म लेता है। वहीं, मंदिर में चूहे की मृत्यु होती है तो वह गांव में चारण समाज में बच्चे के रूप में जन्म लेता है। कहा जाता है कि दशकों पहले जब देश में चूहों के कारण प्लेग फैला था, तब देशनोक पूरी तरह सुरक्षित था।

अजा एकादशी के व्रत से नष्ट होते हैं सभी पाप

भाद्रपद माह के कृष्ण पक्ष को अजा एकादशी का व्रत किया जाता है। इस व्रत को करने से सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। प्राचीन काल में भगवान श्री राम के वंश में अयोध्या नगरी में एक चक्रवर्ती राजा हरिश्चंद्र नाम के एक राजा हुए। राजा अपनी सत्यनिष्ठा के लिए प्रसिद्ध थे। एक बार देवताओं ने इनकी परीक्षा लेने की योजना बनाई। राजा ने स्वप्न में देखा कि ऋषि विश्वामित्र को उन्होंने अपना राजपाट दान कर दिया है। सुबह विश्वामित्र वास्तव में उनके द्वार पर आकर कहने लगे तुमने स्वप्न में मुझे अपना राज्य दान कर दिया। राजा ने सत्यनिष्ठ व्रत का पालन करते हुए संपूर्ण राज्य विश्वामित्र को सौंप दिया। राजा हरिश्चंद्र को पत्नी, बेटा और खुद को बेचना पड़ा। हरिश्चंद्र को एक चांडाल ने खरीद लिया जो श्मशान भूमि में लोगों के दाह संस्कार का काम करवाता था। हरिश्चंद्र को कफन लेने का काम किया, किंतु उसने इस आपत्ति में भी सत्य का साथ नहीं छोड़ा। जब इसी प्रकार उसे कई वर्ष बीत गए तो वह इससे मुक्त होने का उपाय खोजने लगे। वह इसी चिंता में बैठे थे कि गौतम ऋषि उसके पास पहुंचे। हरिश्चंद्र ने उन्हें प्रणाम किया। महर्षि गौतम ने कहा हे राजन! भादों माह के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम अजा है। तुम उस एकादशी का विधानपूर्वक व्रत करो तथा रात्रि को जागरण करो। इससे तुम्हारे सभी पाप नष्ट हो जाएंगे। अजा नाम की एकादशी आने पर राजा हरिश्चन्द्र ने विधिपूर्वक उपवास किया। इस व्रत के प्रभाव से राजा के सभी पाप नष्ट हो गए। उस समय स्वर्ग में नगाड़े बजने लगे तथा पुष्पों की वर्षा होने लगी। उन्होंने अपने सामने ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा देवेंद्र आदि देवताओं को खड़ा पाया। उन्होंने अपने मृत पुत्र को जीवित तथा अपनी पत्नी को राजसी वस्त्र तथा आभूषणों से परिपूर्ण देखा। व्रत के प्रभाव से राजा को पुनः अपने राज्य की प्राप्ति हुई।

जिस जातक की जन्म कुंडली में या गोचर में मंगल की स्थिति अशुभ फलदायी होती है, उसे मंगलकृत पीड़ा अवश्य भोगनी पड़ती है। अतः मंगल जनित पीड़ा के निवारण तथा मंगल ग्रह की शांति हेतु जातक को निम्नलिखित उपाय करने चाहिए।

मंगल ग्रह की शांति के उपाय

विभा शर्मा
जोगिंद्रनगर

● **औषध स्नानः** मंगल ग्रहकृत पीड़ा से ग्रसित जातक को गुड़, लाल बेल, रक्त चंदन, रक्त पुष्प, जटामांसी, मौलश्री, सिंगरफ, खिरैटी, हींग, गोंदनी, स्वर्ण-तुश, ताम्र-तुश, बेल की छाल आदि पदार्थों से युक्त जल द्वारा मंगलवार को स्नान करना चाहिए।

● **मूंगा दानः** जिन जातकों को मंगलकृत दोष होता है, उन्हें इस दोष के निवारण हेतु मूंगा (प्रवाल) दान करना चाहिए। मंगलवार के दिन शुभ समय में किसी योग्य ब्राह्मण को निम्नलिखित वस्तुओं सहित मूंगा दान करना चाहिए- **गुड़,** मसूर की दाल, केशर, गेहूं, रक्तवर्णा गौ, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चंदन, कस्तूरी, लाल कणेर, सोना, ताम्र, मूंगा, घृत, मंगल यंत्र, दक्षिणा आदि। मंगल यंत्र, मंगलवार के दिन ताम्रपत्र पर खुदवाकर उसके मध्य में एक मूंगा जड़वाकर, यंत्र का विधिवत् पूजन, प्राण-प्रतिष्ठा कर दान करना चाहिए।

● **मंगल यंत्र :** मंगलजनित पीड़ा के निवारण हेतु जातक को शुभ समय में ताम्रपत्र पर मंगल यन्त्र खुदवाकर, उसके मध्य में मूंगा जड़वाकर पूजा में स्थापित करना चाहिए तथा उसकी नित्य प्रातः पूजा करनी चाहिए। मंगल यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर उसकी विधिवत् पूजा करके गले में या दाहिनी भुजा में धारण करना चाहिए या ताम्र मुद्रिका पर मंगल यंत्र खुदवाकर अनामिका में धारण करना चाहिए।

क्या हैं हमारे सोलह संस्कार?

प्राचीन काल में प्रत्येक कार्य संस्कार से आरंभ होता था। उस समय संस्कारों की संख्या भी लगभग चालीस थी। जैसे-जैसे समय बदलता गया तथा व्यस्तता बढ़ती गई तो कुछ संस्कार स्वतः विलुप्त हो गए। इस प्रकार समयानुसार संशोधित होकर संस्कारों की संख्या निर्धारित होती गई। गौतम स्मृति में चालीस प्रकार के संस्कारों का उल्लेख है। महर्षि अंगिरा ने इनका अंतर्भाव पच्चीस संस्कारों में किया। व्यास स्मृति में सोलह संस्कारों का वर्णन हुआ है। हमारे धर्मशास्त्रों में भी मुख्य रूप से सोलह संस्कारों की व्याख्या की गई है। इनमें पहला गर्भाधान संस्कार और मृत्यु के उपरांत अंत्येष्टि अंतिम संस्कार है। गर्भाधान के बाद पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण ये सभी संस्कार नवजात का दैवी जगत से संबंध स्थापना के लिए किए जाते हैं। नामकरण के बाद चूड़ाकर्म और यज्ञोपवीत संस्कार होता है। इसके बाद विवाह संस्कार होता है। यह गृहस्थ जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण संस्कार है। हिंदू धर्म में स्त्री और पुरुष दोनों के लिये यह सबसे बडा संस्कार है, जो जन्म-जन्मांतर का होता है। विभिन्न धर्मग्रंथों में संस्कारों के क्रम में थोडा-बहुत अंतर है, लेकिन प्रचलित संस्कारों के क्रम में गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, विद्यारंभ, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, केशांत, समावर्तन, विवाह तथा अन्त्येष्टि ही मान्य है। गर्भाधान से विद्यारंभ तक के संस्कारों को गर्भ संस्कार भी कहते हैं। इनमें पहले तीन (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन) को अंतर्गर्भ संस्कार तथा इसके बाद के छह संस्कारों को बहिर्गर्भ संस्कार कहते हैं। गर्भ संस्कार को दोष मार्जन अथवा शोधक संस्कार भी कहा जाता है। दोष मार्जन संस्कार का तात्पर्य यह है कि शिशु के पूर्व जन्मों से आऐ धर्म एवं कर्म से संबंधित दोषों तथा गर्भ में आई विकृतियों के मार्जन के लिए संस्कार किए जाते हैं। बाद वाले छह संस्कारों को गुणाधान संस्कार कहा जाता है।

प्रस्तुति :अभिषेक शर्मा, जोगिंद्रनगर

गुग्गा नवमी विशेष

सांपों को वश में करने वाले गुग्गा जाहरवीर

भाद्रपद की कृष्ण नवमी को गुग्गा नवमी मनाई जाती है। गुग्गा को सांपों का देवता भी माना जाता है, इनकी पूजा करने से सांपों से रक्षा होती है। श्रावण मास की पूर्णिमा से शुरू हुई गुग्गा पूजा नवमी को संपन्न हो जाती है। गुग्गा मारु देश के राजा थे और उनकी माता बाछला, गुरु गोरखनाथ की परम भक्त थी। एक दिन बाबा गोरखनाथ अपने शिष्यों के साथ राज्य में आते हैं। बाबा गोरखनाथ में अपने शिष्य सिद्ध धनेरिया को नगर में भिक्षाटन के लिए भेजा, रानी ने योगी को बहुत सारा धन प्रदान किया, लेकिन शिष्य थोड़ा सा अनाज मांगता है। रानी गर्व से कहती है कि तुम जितना चाहो अनाज ले जाओ, तो योगी शिष्य अपना भिक्षापात्र आगे बढ़ा देता है। आश्चर्यजनक रूप से सारा भंडार भिक्षा पात्र में समा जाता है और राज्य का भंडार खाली हो जाता है। रानी योगीजन की शक्ति के आगे नतमस्तक हो जाती है और क्षमा याचना करती है। रानी योगी को अपनी परेशानी और संतान न होने का दर्द बताती है। योगी रानी को गुरु के दर्शनों के लिए कहता है। अगले दिन सुबह जब रानी आश्रम जाने के लिए तैयार होती है, तो उसकी बहन काछला को स्थिति का पता चल जाता है और वह रानी से पहले बाबा गोरखनाथ के पास पहुंच जाती है। वह गुरु द्वारा दिए गए दोनों फल खा लेती है, लेकिन जब रानी बाबा के पास पहुंचती है, तो गुरु उसे एक और फल देकर उसे एक पुत्र का आशीर्वाद देते हैं जो सांपों को वश में कर लेगा और अंततः सांपों का राजा बन जाएगा। इस प्रकार उसे एक पुत्र की प्राप्ति होती है जो बाद में गुग्गा के नाम से जाना जाता है।

जब राजा ने श्राप से बचने के लिए करवाया राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण

जंगम बाग में आज भी बह रही अविरल धारा

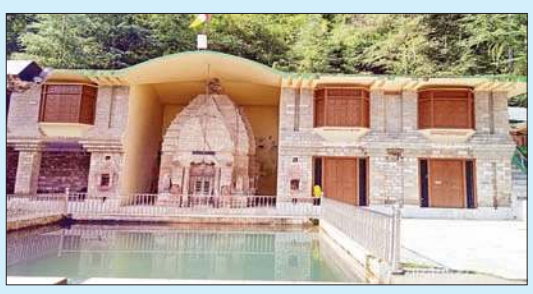

सुकेत रियासत के जंगम बाग में राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण ई. सन 1620 से 1650 के मध्य में तत्कालीन राजा श्याम सेन द्वारा करवाया गया। इसका विवरण सुकेत रियासत के सरकारी लेखों में मिलता है कि राजा श्याम सेन को एक योगी ने किसी गलती के लिए श्राप दे दिया था, तो राजा ने बचाव स्वरूप मंदिर का निर्माण करवाया। इसके उपरांत यह श्रापमुक्त हो गए। यह भी कहा जाता है कि मंदिर के प्रांगण में एक साधु महात्मा तपस्या में लीन रहते थे। एक दिन कुछ लोगों ने यह बात राजा से कही। राजा जंगम बाग पहुंचे और साधु से कहने लगे कि आप कोई चमत्कार दिखाएं। अधिक हठ करने पर जब राजा नहीं माने तो साधु ने कहा कि राजन! आप चमत्कार ही देखना चाहते हैं, तो मेरे चारों ओर ईंटों का कक्ष बनाकर मुझे उसमें बंद कर दिया जाए। राजा ने वैसा ही किया, उसके पश्चात जब उसे तोड़ा गया तो साधु वहां नहीं था और वहां पानी की अविरल धारा फूट रही थी जो आज भी है। इसके पश्चात राजा बहुत दुखी हुआ।

बता दें कि जंगम बाग में जगन्नाथ पुरी उड़ीसा की तर्ज पर भगवान जगन्नाथ यात्रा के दौरान आषाढ़ मास में राजा के समय से रथ यात्रा धूमधाम से निकाली जाती है और श्री जगन्नाथ इंडेटी पुराना बाजार से यहां अतिथि बनकर विराजते हैं।

पिता की याद में करवाया था राधा-कृष्ण मंदिर का निर्माण

बाबा भूतनाथ मंदिर के प्रांगण में राधा कृष्ण का प्राचीन मंदिर है, जिसे 79 वर्ष पहले निर्मित किया गया था। माघ 2001 विक्रमी संवत को मंडी निवासी वल्लभदास ने अपने पिता गरुडमल की स्मृति में तत्कालीन राजा जोगिंद्र सेन के कार्यकाल में यह मंदिर बनवाया था। बता दें कि जहां हरि हैं, वहां हर हैं। प्राचीन बाबा भूतनाथ मंदिर में श्री विष्णु की प्राचीन मूर्ति विद्यमान है। हर श्रद्धालु बाबा भूतनाथ के दर्शन कर राधा-कृष्ण और श्री सत्य नारायण के दर्शन करते हैं।

प्रस्तुति : अनिल शर्मा
नौबाही मंडी।

न्यूज ब्रीफ

सोनाली शर्मा के सिर सजा मिस इंडिया नेक्स्ट ग्लैमर क्वीन शो स्टॉपर का ताज

अनंत ज्ञान, बैजनाथ। 25 अगस्त को जीरकपुर में मॉडलिंग का मिस और मिसेज इंडिया नेक्स्ट ग्लैमर क्वीन 2024 का बहुत बड़ा शो आयोजित किया गया। यह शो मीत संधू के द्वारा आयोजित करवाया गया। शो में पंजाबी सेलिब्रिटी भी काफी संख्या में आए हुए थे। शो की मेन मॉडल कांगड़ा जिला की सोनाली शर्मा, जो कि शो स्टॉपर मॉडल थीं, उन्होंने बेहतरीन वॉक की और शो को खत्म करके मिस इंडिया नेक्स्ट ग्लैमर क्वीन शो स्टॉपर का ताज अपने नाम किया और जिले व हिमाचल का नाम रोशन किया। सोनाली शर्मा ने बताया कि इस शो में सबसे बड़ी बात यह थी कि छोटे बच्चों को भी स्पेशल वॉक करने का मौका दिया गया।

करियाड़ा में कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव शुरू

अनंत ज्ञान, गरली। देहरा उपमंडल के करियाड़ा के ऐतिहासिक नाग मंदिर में 5 दिवसीय कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव सोमवार से शुरू हो गया। सुबह चार बजे यहां नाग मंदिर के कपाट खुलते ही भक्तों की कतारें लगनी शुरू हो गईं। इस दौरान हजारों भक्तो ने यहां मंदिर के चारों ओर विराजमान देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना करते हुए अपने परिवार की खुशहाली व कारोबार की बढ़ोतरी के लिए कामना की। मंदिर प्रबंधक कुलदीप सिंह गुलेरिया के नेतृत्व में लुधियाना, अंबाला ऊना, जम्मू हिमाचल के विभिन्न क्षेत्रों से आए सैकड़ों श्रद्धालुओं ने पूर्ण आहूति डाली।

पौधरोपण कार्यक्रम के तहत घनैटा में रोपे पौधे

अनंत ज्ञान, डरोह। हिम जन कल्याण संस्था फरेड़, एडॉन संस्था नगरोटा बगवां तथा त्रिगर्त युवा क्लब घनैटा के सहयोग से वार्षिक पौधरोपण कार्यक्रम घनैटा में आयोजित किया गया। हिम जन कल्याण संस्था द्वारा घनैटा में इस कार्यक्रम में 30 देवदार के पौधे संस्था के सहयोगियों एवं युवा क्लब के माध्यम से लगाए गए। इस दौरान विशेष रूप से त्रिगर्त युवा क्लब द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि जो भी यहां पर पौधे लगाए जा रहे हैं उनकी देखरेख तथा संभाल उनकी जिम्मेवारी है, क्योंकि पौधे लगाना और संभालना दोनों अलग-अलग चीजें हैं । हिम जन कल्याण संस्था के अध्यक्ष प्रवीण शर्मा ने इन पौधों की देखरेख करने का जिम्मा लिया और नशे से बच्चों को दूर रहने की सलाह दी। इस अवसर पर लोगों को नशे के प्रति एडॉन संस्था और हिम जन कल्याण संस्था द्वारा जागरूक भी किया गया।

जागोरी संस्था ने ठारू में फलदार पौधे रोपे

अनंत ज्ञान, नगरोटा बगवां। जागोरी संस्था द्वारा सोमवार को स्वर्णिम हिमाचल जन जागरण समिति के सहयोग से पर्यावरण संरक्षण को लेकर ठारू पंचायत में पीपल और फलदार पौधों का रोपण किया गया। यह पौधरोपण कार्यक्रम ठारू के पंचायत प्रधान अजय और यूथ क्लब के सक्रिय युवाओं द्वारा संपन्न किया गया, जिसमें युवाओं ने अपनी बड़ी ही उत्सुकता के साथ जगोरी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर पौधरोपण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। इस पौधरोपण में प्रधान अजय अविनाश जी मंगल अनिचित सुरेंद्र शामिल रहे। इस पौधरोपण में जागोरी कार्यकर्ता मंजू, अंजू, निखिल और कमलेश शामिल रहे।

रास्ता रोककर मारपीट करने पर मामला दर्ज

अनंत ज्ञान, कांगड़ा। पुलिस थाना कांगड़ा के तहत रास्ता रोक कर मारपीट करने का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार पुलिस को मिली शिकायत के अनुसार अक्षय कुमार निवासी बड़ी वही डाकघर गहालियां ने अरुण कुमार निवासी बड़ी वही का रास्ता रोककर लड़ाई झगड़ा व मारपीट की । इस संदर्भ में पुलिस थाना कांगड़ा में भारतीय न्याय संहिता की धारा 126(2), 115(2), 351 व 352 में दर्ज किया गया है। एसएचओ कांगड़ा संजीव कुमार ने मामले की पुष्टि की है।

बगली में दुकान से देसी शराब बरामद

अनंत ज्ञान, गगल। पुलिस थाना गग्गल के तहत दुकान से शराब बरामद करने का एक मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार पुलिस थाना गगल की टीम जब गश्त पर थी तो इस दौरान गुप्त सूचना के आधार पर बगली बाजार में सतीश कुमार निवासी बगली की दुकान में दबिश दी गई। तलाशी के दौरान दुकान से 6,750 मिलीलीटर देसी शराब बरामद की है। इस सन्दर्भ में पुलिस थाना गग्गल में हिमाचल प्रदेश आबकारी अधिनियम की धारा 39-1(ए) में पंजीकृत किया गय है। एसएचओ नारायण सिंह ने मामले की पुष्टि की है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए होगा बुनियादी ढांचे का निर्माण : बाली

पर्यटन निगम के अध्यक्ष बोले, इस वर्ष राज्य में 1.13 करोड़ पर्यटक आ चुके हैं भ्रमण के लिए

अनंत ज्ञान ब्यूरो, धर्मशाला

पर्यटन निगम के अध्यक्ष कैबिनेट रैंक आरएस बाली ने कहा कि राज्य में समग्र पर्यटन बढ़ावा देने के लिए नए बुनियादी ढांचे का निर्माण सुनिश्चित किया जाएगा, ताकि पर्यटकों की आमद में बढ़ोतरी हो सके और पर्यटन में स्वरोजगार के अवसर भी मिल सकें।

रविवार देर रात को मैकलोडगंज में होटल एसोसिएशन के पदाधिकारियों के साथ आयोजित बैठक की अध्यक्षता करते हुए पर्यटन निगम के अध्यक्ष आरएस बाली ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के प्रयासों से हिमाचल प्रदेश में आने वाले पर्यटकों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है तथा इस वर्ष जुलाई, 2024 तक राज्य में 1.13 करोड़ पर्यटक भ्रमण के लिए आ चुके हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 696.47 करोड़ रुपये की लागत से 11 परियोजनाएं शुरू की जाएंगी। इन सभी 11 परियोजनाओं के लिए निविदाएं आमंत्रित कर ली गई हैं। इन परियोजनाओं का मुख्य उद्देश्य राज्य में पर्यटकों की आमद को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि पर्यटन, राज्य की अर्थव्यवस्था का प्रमुख क्षेत्र है, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हजारों परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान करता है। उन्होंने कहा कि कांगड़ा हवाई अड्डे का विस्तार किया जा रहा है, इससे क्षेत्र में पर्यटकों को आकर्षित करने में प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कांगड़ा जिले को राज्य की पर्यटन राजधानी घोषित किया है तथा यहां आने वाले पर्यटकों की सुविधा के लिए आवश्यक पर्यटन अधोसंरचना का निर्माण किया जा रहा है।

मैक्लोडगंज में होटल कारोबारियों के साथ बैठक में दी जानकारी

धर्मशाला में 161.91 करोड़ से बन रहा कन्वेंशन सेंटर

आरएस बाली ने कहा कि धर्मशाला में 161.91 करोड़ रुपए की लागत से कन्वेंशन सेंटर का निर्माण किया जा रहा है, पालमपुर और नगरोटा बगवां में सौंदर्यकरण कार्य 95.50 करोड़ रुपये की लागत से किया जाएगा, नादौन में वेलनेस सेंटर में निर्माण पर 91.42 करोड़ रुपये व्यय किये जाएंगे। हमीरपुर जिले के बाबा बालकनाथ जी दियोटसिद्ध में पर्यटकों की सुविधा के लिए 65.32 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। नादौन में 64 करोड़ रुपए की लागत से राफ्टिंग कॉम्पलेक्स का विकास, शिमला जिले के बनूटी में 58.37 करोड़ रुपये की लागत से वेलनेस सेंटर का निर्माण, मनाली में 45.25 करोड़ रुपये की लागत से वेलनेस सेंटर, धर्मशाला में 39.51 करोड़ रुपये की लागत से आइस स्केटिंग रिंक एवं रोलर स्केटिंग रिंक का निर्माण, शिमला में 34.85 करोड़ रुपये की लागत से आइस स्केटिंग रिंक एवं रोलर स्केटिंग रिंक का विकास, कुल्लू में 27.76 करोड़ रुपये की लागत से वेलनेस सेंटर का विकास तथा कुल्लू जिले में नग्गर कैसल के जीर्णोद्धार पर 11.57 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पौंग डैम को अंतरराष्ट्रीय स्तर के 'बर्डज पैराडाइस' के रूप में विकसित किया जाएगा तथा यह जल क्रीड़ाओं के दृष्टिगत भी उत्कृष्टता का राष्ट्रीय केंद्र बनेगा।

टीसीपी के दायरे में नहीं आएगा ग्रामीण क्षेत्र: आशीष बुटेल

पालमपुर। सीपीएस आशीष बुटेल ने कहा है कि गांव का शहरीकरण नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा कि 20 अगस्त 24 को पालमपुर उपमंडल के 76 राजस्व गांवों को टाउन एंड कॉउंटरी प्लानिंग के तहत लाने के प्रस्ताव की अधिसूचना पर मुख्यमंत्री से विस्तार से चर्चा की गई है। बुटेल ने बताया कि मुख्यमंत्री ने उनकी बात को गंभीरता तथा सहानुभूतिपूर्वक सुना और आश्वस्त किया है कि जनभावनाओं को ध्यान में रखा जायेगा। आशीष ने बताया कि मुख्यमंत्री ने कहा कि गाँव को टाउन एंड कॉउंटरी प्लानिंग के अधीन नहीं लाया जायेगा, ताकि लोगों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं हो सके। सीपीएस ने कहा कि गांवों का शहरीकरण नहीं किया जाएगा और लोगों की जनभावनाओं के अनुरूप ही कार्य करने के सरकार प्रतिबद्ध है। उन्होंने मुख्यमंत्री के आश्वासन पर उपमंडल के लोगों को भरोसा दिलाया कि ग्रामीण क्षेत्रों को टाउन एंड कंट्री प्लानिंग के अधीन नहीं लाया जाएगा।

नगरोटा बगवां की सद्दूं पंचायत में खेल टूर्नामेंट का समापन

वॉलीबाल में बोदा टीम रही विजेता

पूजन भंडारी, नगरोटा बगवां

नगरोटा बगवां हलके के तहत सद्दूं पंचायत में वॉलीबाल टूर्नामेंट का समापन हो गया। टूर्नामेंट में 18 टीमों में भिड़ंत हुई, जिसमें फाइनल मुकाबला बोदा और सद्दूं की टीम में हुआ। इसमें बोदा की टीम विजेता व सद्दूं की टीम उपविजेता रही।

इस अवसर पर पंचायत प्रधान अर्चना कुमारी बतौर मुख्यातिथि मौजूद रहीं। उन्होंने अपनी तरफ से स्थानीय युवा क्लब को 11 हजार की राशि भेंट की, वहीं विजेता व उपविजेता खिलाड़ियों को सम्मानित किया।

अर्चना कुमारी ने युवाओं को खेलों के साथ-साथ पढ़ाई में भी ध्यान देने की बात कही। उन्होंने कहा कि बच्चों को खेलों और पढ़ाई में समन्वय बनाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि युवाओं को टाइम का सदुपयोग करना चाहिए।

इस अवसर पर युवा क्लब प्रधान राजेश कुमार, शशि व संजीव कौशल आदि गणमान्य मौजूद रहे। दूसरी ओर स्थानीय नंबरदार, समाजसेवी व एंटी टेरेरिस्ट फ्रंट के अध्यक्ष बलविंद्र सिंह बबलू ने घर जाकर होनहार बेटी को सम्मानित किया है।

एंटी टेरेरिस्ट फ्रंट के अध्यक्ष बलविंद्र सिंह बबलू ने खिलाड़ियों को शानदार प्रदर्शन पर बधाई दी है। (अनंत ज्ञान)

बैजनाथ में कार ने कुचला व्यक्ति, मौत

पुलिस ने पोस्टमार्टम करवाने के बाद परिजनों को सौंपी कालीदास की डेड बॉडी

अनंत ज्ञान, बैजनाथ

नगर पंचायत बैजनाथ-पपरोला के वार्ड नंबर 4 निवासी कालीदास पुत्र बिशन दास की कार की चपेट में आ जाने से मौत हो गई। कालीदास कृष्णा स्वीट्स के बाहर फड़ी लगाकर अपने परिवार का पालन-पोषण करता था। रोज की तरह सोमवार को भी वहीं पर खड़ा रहकर ग्राहकों का इंतजार कर रहा था। इतने में जोगिंद्रनगर की तरफ से आ रही एक कार ने उसे कुचल दिया।

गंभीर रूप से घायल कालीदास को सिविल हॉस्पिटल बैजनाथ ले जाया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार कालीदास बिलकुल साइड में खड़ा हुआ था। इतने में जोगिंद्रनगर की तरफ से आ रही एक कार ने उसे जोर से टक्कर मार दी, जिससे कालीदास अचेत होकर गिर गया। लोगों ने उसे बैजनाथ अस्पताल पहुंचाया। पोस्टमार्टम के बाद मृतक का शरीर परिजनों को सौंप दिया गया है। बैजनाथ के एसडीएम देवी चंद ठाकुर ने बताया कि राहत मैनुअल के अनुसार परिवार को आर्थिक सहायता मुहैया करवाई जाएगी। पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

अचानक हुई मौत से परिवार पर मंडराया संकट

जितेंद्र कौशल, बैजनाथ

बैजनाथ में कार द्वारा कुचले जाने से मौत का शिकार बने कालीदास के परिवार पर भी संकट मंडरा गया है। ऐसा नहीं है कि कालीदास ही कमाने वाला पारिवारिक सदस्य था, बल्कि उसका बेटा भी पिता की इस मुश्किल घड़ी में मजदूरी करके परिवार को थोड़ी राहत देना लगा था। अचानक हुई इस मौत से अब परिवार की आर्थिकी पर भी संकट के बादल मंडराने लगे हैं। सुबह जब कालिदास अपनी पत्नी कांता देवी से विदाई लेकर रोजी-रोटी कमाने बाजार की ओर निकला था तो कांता देवी ने सपने में भी नहीं सोचा था कि कुछ ही घंटे बाद उसके सुहाग के उजड़ने की खबर उसके कानों में सुनाई देगी। मृतक 30 वर्षों से बैजनाथ बाजार में फड़ी लगाकर बीज तथा पौधों की पनीरी बेचा करता था। मृतक के घर की हालत यह है कि बरसात के पानी से बचने के लिए उसके लिए छत को ठीक करवाना भी बहुत मुश्किल काम था। इसलिए बारिश से बचने के लिए छत के ऊपर तिरपाल लगाकर काम चलाना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि मृतक के परिवार की आर्थिक हालत ठीक नहीं है, इसलिए शासन-प्रशासन की ओर से उसे तुरंत सहायता दी जाए। (अनंत ज्ञान)

कृपाल चंद कूहल के पास कूड़ा फेंकने पर होगा जुर्माना : नीतू

राकेश डोगरा, डरोह

विकास खंड सुलह स्थित भेड़ूमहादेव की ग्राम पंचायत बारी की पंचायत प्रधान नीतू डढवाल ने प्रेस को दिए एक बयान में कहा है कि पंचायत में कुछ दिन पहले सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास किया गया, जिसमें उच्च न्यायालय के आदेश की पालना की गई। उच्च न्यायालय का आदेश था कि कृपाल चंद कूहल को पूरी तरह से स्वच्छ रखा जाए। अब बारी पंचायत द्वारा कूहल के आसपास स्थानीय लोगों द्वारा कूड़ा-करकट फेंकने पर पाबंदी लगा दी गई है। कूहल के नजदीक सूचना पट्ट लगा दिए गए हैं। इनमें लिखा है कि अगर कोई व्यक्ति कृपाल चंद कूहल में कूड़ा-कचरा डालता पाया जाता है तो पंचायती राज अधिनियम के अंतर्गत उसे 500 रुपए जुर्माना लगाया जाएगा। साथ ही उच्च न्यायालय के आदेशानुसार कूहल की सफाई हेतु समय-समय पर मनरेगा योजना के अंतर्गत मस्टरोल भी जारी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह कूहल हमारी धरोहर है इसकी संभाल करना हमारा कर्तव्य है। (अनंत ज्ञान)

नूरपुर में भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ राज्य स्तरीय श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का आगाज

अनंत ज्ञान, नूरपुर

कांगड़ा ज़िला के नूरपुर का दो दिवसीय राज्य स्तरीय श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का शुभारंभ सोमवार को भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ। चौगान मैदान से श्री बृजराज स्वामी मंदिर तक शोभायात्रा का आयोजन किया गया जिसकी अगुवाई उपायुक्त हेमराज बैरवा ने की।

शोभायात्रा में बड़ी संख्या में कृष्ण भक्तों ने बढ़चढ़ कर शोभायात्रा में भाग लिया। शोभायात्रा के दौरान विभिन्न मंदिर कमेटियों द्वारा झांकियां भी निकाली गईं। इसके पश्चात, उपायुक्त ने मंदिर में पूजा अर्चना की तथा मटकी फोड़ प्रतियोगिता में शिरकत की। उन्होंने प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरुस्कृत भी किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक अजय महाजन विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। एसडीएम गुरसिमर सिंह ने मुख्यातिथि तथा विशेष अतिथि को शॉल,टोपी व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया।

उपायुक्त बैरवा ने की शोभायात्रा की अगुवाई

डाडासीबा में खुलेगा डीएसपी कार्यालय

अनंत ज्ञान, डाडासीबा। मंत्रिमंडल की बैठक में डाडासीबा में एक नया उपमंडल पुलिस कार्यालय तथा संसारपुर टैरेस पुलिस पोस्ट को पुलिस स्टेशन में स्तरोन्नत किया। मोईन में चौकी के बदले थाना करने का भी निर्णय लिया। देहरा में जल शक्ति विभाग का नया सर्कल खोलने का भी निर्णय लिया है। जसवां-परागपुर को एक साथ इतने तोहफे मिलने पर क्षेत्रवासियों ने मुख्यमंत्री व प्रदेश कांग्रेस प्रवक्ता सुरेंद्र सिंह मनकोटिया का आभार जताया है। बता दें कि जब से सीएम की पत्नी कमलेश ठाकुर विधायक बनी हैं, तब से कांग्रेस सरकार ने देहरा विधानसभा हलके को कई सौगातें दी हैं।

चोरी का प्रयास करने के आरोपी 3 दिन के रिमांड पर

पुनीत शर्मा, धर्मशाला

पुलिस थाना धर्मशाला के तहत ट्रांसफार्मर चोरी करने की कोशिश करने वाले तीन लोगों को सोमवार को अदालत में पेश किया गया। अदालत ने तीनों को 3 दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया है। वहीं, पुलिस चोरी को अंजाम देने के लिए प्रयुक्त वाहन का पता लगाने के साथ अन्य लोगों की संलिप्तता का पता लगाने के लिए लगी हुई है। बताते चलें कि इंद्रूनाग क्षेत्र में एक ट्रांसफार्मर खराब होने के चलते

बिजली विभाग ने उसे निकाल कर रिपेयर को रखा हुआ था। इसी दौरान कबाड़ का काम करने वाले कुछ लोग उसे चोरी करके वाहन में ले जा रहे थे तो कुछ लोगों ने उन्हें देख कर पुलिस को सूचित किया। इसके बाद वाहन सहित ये चोर मौके से फरार हो गए लेकिन पुलिस ने जांच के बाद तीन को गिरफ्तार कर लिया। एक आरोपी स्थानीय जबकि दो बिहार से हैं। तीनों धर्मशाला में कबाड़ का काम करने वाले एक व्यक्ति के कर्मचारी हैं। उधर, एएसपी कांगड़ा वीर बहादुर ने आरोपियों को पुलिस रिमांड मिलने की पुष्टि की है। (अनंत ज्ञान)

होटल में खेला जा रहा था जुआ, मालिक पर केस दर्ज

अनंत ज्ञान, पालमपुर। पुलिस थाना पालमपुर के तहत होटल में जुएबाजी का मामला सामने आया है। जानकारी के अनुसार शहर के एक निजी होटल में जुआ खिलाने के जुर्म में होटल मालिक व अन्य जुआ खेलने वाले व्यक्तियों के खिलाफ अभियोग जेर धारा 13-3-67 सार्वजनिक जुआ अधिनियम के अंतर्गत पंजीकृत पुलिस थाना किया गया है। एसएचओ पालमपुर सुरेंद्र ठाकुर ने मामले की पुष्टि की है।

'घर वापसी' ग्रामीण परिवेश के परिदृश्य की साक्षात अनुभूति

पुस्तक समीक्षा

कहानी गद्य साहित्य की सबसे रोचक एवं लोकप्रिय विधा मानी जाती है जो किसी व्यक्ति के जीवन की मार्मिक एवं भावनात्मक अनुभूति कराने में सक्षम होती है। हाल ही में डाक के माध्यम से मनोज कुमार शिव द्वारा लिखित कहानी संग्रह घर वापसी मुझे भेंट स्वरूप प्राप्त हुआ। इसमें संग्रहित सभी कहानियों को मैंने बड़ी तत्परता और तन्मयता से पढ़ा। यह उनका पहला ही कहानी संग्रह है, लेकिन ऐसा लगता है कि यह काफी अनुभवी एवं कुशल कथाकार हैं, जिन्होंने साहित्य जगत में अपने पहले ही कहानी संग्रह से एक दमदार उपस्थिति दर्ज कर दी है। इस संग्रह में कुल 11 कहानी हैं जो जीवन के विभिन्न पहलुओं और सामाजिक मुद्दों को दर्शाती हैं।

वसुंधरा धर्माणी (समीक्षक)

उनकी पहली कहानी 'गरीबी का भूत' समाज में गरीबी और उससे उत्पन्न समस्याओं को दर्शाती है। लेखक ने गरीबी के दुष्परिणामों और उससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का यथार्थवादी चित्रण किया है। कथाकार ने इस कहानी के जरिए एक गरीब बच्चे की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है।

दूसरी कहानी 'इंसाफ' मंडी जिला की एक सत्य घटना से प्रेरित है जो न्याय की तलाश और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने की प्रेरणा देती है। तीसरी कहानी 'स्याथा' बहादुरपुर पहाड़ की ऊंचाई पर खूबसूरत गांव में बसे एक गरीब लोहार मंगतू की कहानी है जो बहुत स्वाभिमानी है। यह कहानी वर्तमान स्थिति को भी बयां करती है। कहानी 'मेवे वाला' में यशोदा के जीवन की दुख भरी कहानी को बयां किया है। इसमें समाज की सच्ची तस्वीर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में कथाकार ने कोई कसर नहीं छोड़ी है। 'रिटायरमेंट' कहानी में सामाजिक जीवन को बड़ी परिपक्वता के साथ उजागर किया है। कहानी 'जलेबी मेले की' पुराने बिलासपुर के गोविंद सागर झील में जल मग्न होने वाले विस्थापितों की बहुत ही मार्मिक कहानी को बयां करती है। कहानी 'गोमती का झरना' प्रकृति की सुंदरता और उसके संरक्षण पर आधारित है। प्रकृति के प्रति विशेष लगाव और उसका संरक्षण करना इस कहानी का मुख्य उद्देश्य है।

कहानी 'घर वापसी' इस संग्रह की मुख्य कहानी है, जिसमें घर लौटने और अपनी जड़ों से जुड़ने का महत्व दर्शाया गया है। 'बंटवारा' एक पारिवारिक कहानी है जो विभाजन और उसके परिणामों पर प्रकाश डालती है। 'गुरु दक्षिणा' कहानी गुरु शिष्य परंपरा पर आधारित है जिसमें गुरु के प्रति सम्मान और उनके योगदान को सराहा गया है। 'बुराई का अंत' एक नैतिक कहानी है, जिसमें यह संदेश दिया गया है कि अंत में हमेशा अच्छाई की ही जीत होती है। इस कहानी संग्रह में युवा कथाकार ने जीवन के विभिन्न पहलुओं और सामाजिक मुद्दों को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। लेखक की लेखन शैली सरल, लेकिन गहन है, जो पाठकों को कहानियों से जोड़कर रखती है।

आस्था | **मेलों में शारीरिक कष्टों, सर्पदंश, भूत-प्रेत और अन्य बीमारियों से मिलता है छुटकारा**

गुग्गा सलोह में बाबा के आशीर्वाद से ठीक होते हैं मानसिक रोगी

रीत वशिष्ट, गुग्गा सलोह (पालमपुर)

पठानकोट-मंडी नेशनल हाईवे पर पालमपुर के अरला से करीब दो किलोमीटर दूर गुग्गा सलोह पंचायत में स्थित गुग्गा जाहरवीर के आशीर्वाद से मानसिक रोगी ठीक हो जाते हैं। रक्षाबंधन के दिन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक यहां हर साल बाबा के मेले लगते हैं। हिमाचल के अलावा बाहरी राज्यों के लोग यहां शारीरिक कष्टों जैसे- सर्पदंश, भूत-प्रेत और अन्य बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए आते हैं। मंदिर में यह प्रथा करीब 160 साल से चली आ रही है। मंदिर की मान्यता के बारे में मुख्य पुजारी वेद प्रकाश ने 'अनंत ज्ञान' को बताया कि गुग्गा जाहरवीर का जन्म राजस्थान में हुआ है। जाहरवीर महाराज यहां के तब के पुजारी पफुड राम के साथ आए थे और यहां विराजमान हो गए।

यहां बाबा गुग्गा छतरी के अलावा उनकी बहन, माता और बजीर कालीवीर, शेषनाग तथा गुरु गोरखनाथ पिंडी के रूप में विराजमान हैं। बाबा जी शेषनाग के अवतार

हैं। ये हमारे कुल देवता हैं। हमें यहां सेवा करते हुए काफी अर्सा हो गया है। हमारी तीसरी पीढ़ी मंदिर में अपनी सेवा दे रही है। उन्होंने बताया कि यहां आने से दुख-संकट ठीक हो जाते हैं। यहां चेलों-जोगियों की तरह नहीं, बल्कि प्राकृतिक रूप से लोगों का इलाज होता है, बस परमात्मा में आस्था होनी चाहिए। यहां केवल दुख-संकट वाले ही नहीं, बल्कि आम संगत भी शीश नवाने आती है। यहां 80 प्रतिशत लोग केवल शीश नवाने आती है, जबकि 20 प्रतिशत लोग ही इलाज करवाने आते हैं। मान्यता है कि सांप के काटे के लोग भी यहां आकर ठीक हो जाते हैं। बाबा जी का मिट्टी प्रसाद तथा प्यास यहां से लोग ले जाते हैं। लोग यह सोचते हैं कि इन दस दिनों में ही यहां इलाज होता है, लेकिन ऐसा नहीं है। यहां जब चाहे श्रद्धालु आ सकते हैं। रविवार को व संक्रांति के दिन यहां आने का खास महत्व है। यहां लोगों के सहयोग से हर रविवार को भंडारा भी लगाया जाता है। उन्होंने बताया कि जाहरवीर आधे धरती में हैं, तो आधे धरती के ऊपर आज भी विराजमान हैं। जिस तरह मां के नवरात्रों में लोग नंगे पैर चलकर अपनी अगाध श्रद्धा दिखाते हैं, उसी तरह रक्षा बंधन से लेकर गुग्गा नवमी तक भक्तजन नंगे पैरा चलकर बाबा जी की भक्ति में लीन रहते हैं।

यहां पहुंची नगरोटा बगवां की रुचि ने बताया कि वह हर साल अपनी मां के साथ यहां आती हैं। उन्हें यहां आकर मानसिक संतुष्टि मिलती है। वहीं, एक और श्रद्धालु नीलम कुमारी ने बताया कि वह मानसिक रूप से परेशान अपनी बेटी के इलाज के लिए पिछले साल से यहां आ रही हैं। अब उसे काफी राहत मिली है। मंदिर के सेवादार अक्षय ने बताया कि यहां ओपरे या खिलाए-पिलाए का इलाज कुदरती तौर पर किया जाता है। मंदिर परिसर में मौजूद अली के पेड़ की परिक्रमा करने से ही लोग ठीक हो जाते हैं। पहले यहां मानसिक रोगियों को बांधकर रखा जाता है, लेकिन मानवाधिकारों के उल्लंघन की शिकायतों के बाद यह प्रथा बंद कर दी गई है। अब यहां केवल पेड़ की परिक्रमा ही की जाती है। यहां आने पर कुदरती तौर पर नकारात्मक चीजों का पता चल जाता है और उसके बाद पहले सांगल और उसके बाद मिट्टी-प्यास का प्रसाद तथा अंत में पेड़ की परिक्रमा करवाकर लोगों को ठीक किया जाता है। इस काम के किसी से कोई पैसे नहीं लिए जाते। लोग अपनी श्रद्धा अनुसार यहां चढ़ावा चढ़ाते हैं। उन्होंने बताया कि सांप के काटे लोगों को आज भी धागा और प्यास दी जाती है, लेकिन उसके बाद उन्हें मेडिकल सहायता लेने की सलाह भी दी जाती है। (अनंत ज्ञान)

न्यूज ब्रीफ

वृद्ध आश्रम में धूमधाम से मनाई श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। दरिद्र नारायण ट्रस्ट द्वारा संचालित वरिष्ठ नागरिक सुविधा केंद्र और वृद्ध आश्रम कृष्णा नगर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। इसमें वृद्ध आश्रम में रहने वाले वृद्धों ने बच्चों के साथ जन्माष्टमी का पावन पर्व गीत संगीत और हर्ष के साथ मनाया। सबको मिष्ठान भेंट किए गए। इस अवसर पर बच्चों ने श्रीकृष्ण और राधा की पोशाक में मनमोहक प्रस्तुतियां दी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की पावन अवसर पर कल्याण समिति हिमाचल प्रदेश के प्रधान ने प्रदेशवासियों को बधाई देते हुए उनके मंगलमय भविष्य की कामना की और प्रार्थना कि हम सब योगेश्वर भगवान के जीवन से प्रेरणा लेकर समाज और देश को महान बनाएंगे।

जन्माष्टमी पर ठाकुर द्वारा जमली धाम में लगाया झूला

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। ठाकुर द्वारा जमली धाम में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर श्रीकृष्ण के लिए झूला लगाया गया। इस अवसर पर मंदिर में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने श्रीकृष्ण को झूला झुलाया। इस अवसर पर गोशाला परिसर के सभी मंदिरों को फूल-मालाओं से सजाया गया। मंदिर कमेटी के अध्यक्ष प्रताप सिंह ने बताया कि यह झूला श्रद्धालुओं के लिए एक महीने तक दर्शनों हेतु उपलब्ध रहेगा।

गाड़ियों की पासिंग व ड्राइविंग टेस्ट कल

अनंत ज्ञान, भोरंज। उपमंडल भोरंज के अंतर्गत अगस्त माह की ड्राइविंग टेस्ट व गाड़ियों की पासिंग कंज्याण हेलिपैड के पास होगी। एसडीएम भोरंज संजय कुमार ने बताया कि गाड़ियों की पासिंग व ड्राइविंग टेस्ट 28 अगस्त को 10 से 1.30 बजे तक कंज्याण हेलिपैड के पास होगी। इसमें गाड़ियों की पासिंग व ड्राइविंग टेस्ट के लिए क्षेत्रवासी भाग ले सकते हैं।

तहसीलदार संदीप को एसडीएम बड़सर का अतिरिक्त कार्यभार

एसके ठाकुर, बड़सर। हिमाचल प्रदेश सरकार ने आंशिक फेरबदल करते हुए तहसीलदार बिझड़ी संदीप कुमार को उपमंडल अधिकारी नागरिक बड़सर का अतिरिक्त कार्यभार सौंपा है। वर्तमान में संदीप कुमार तहसीलदार ढटवाल के पद पर तैनात हैं। बड़सर उपमंडल के एसडीएम राजेंद्र गौतम आजकल हिपा में ट्रेनिंग पर हैं। इससे पूर्व तहसीलदार बड़सर धर्मपाल नेगी बड़सर एसडीएम का कार्यभार देख रहे थे। अब बड़सर का कार्यभार एसडीएम के रूप में संदीप कुमार संभालेंगे। एसडीएम के ट्रेनिंग पर जाने से बड़सर क्षेत्र के लोगों के लिए समस्या बनी हुई है। इसके अलावा कार्यालय में प्रमुख अधिकारियों के पद खाली पड़े हुए हैं। बाबा बालकनाथ मंदिर में मंदिर अधिकारी का पद स्थायी तौर पर कई सालों से खाली चल रहा है, जिसका दायित्व संदीप कुमार तहसीलदार देख रहे हैं। एसडीएम का अतिरिक्त कार्यभार मिलने पर उन्होंने कहा कि सरकार ने जो जिम्मेदारी सौंपी है, उसे पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से निभाने की भरपूर कोशिश करूंगा।

कांग्रेस सेवादल के संस्थापक को दी श्रद्धांजलि

अनंत ज्ञान, हमीरपुर। कांग्रेस सेवादल जिला हमीरपुर के अध्यक्ष मदन लाल कौंडल की अध्यक्षता में स्वतंत्रता सेनानी पद्म भूषण कांग्रेस सेवादल के संस्थापक स्व. नारायण सुब्बाराव हार्डिकर की पुण्यतिथि नादौन की ग्राम पंचायत घलूं में मनाई गई। इस अवसर कांग्रेस सेवादल के पदाधिकारियों व सदस्यों ने स्व. नारायण सुब्बाराव हार्डिकर के चित्र पर फूल अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष ने उनकी जीवनी पर प्रकाश डालकर उनके अच्छे कार्यों के लिए याद किया। इस अवसर पर 2 मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी और फल भी बांटे। नारायण सुब्बाराव हार्डिकर ने कांग्रेस सेवादल की नींव रखकर पूरे भारत वर्ष में कांग्रेस सेवादल की स्थापना की व कांग्रेस पार्टी को मजबूत करने में अहम भूमिका निभाई। इस मौके पर घलूं पंचायत के प्रधान सुनील कुमार, नादौन ब्लॉक सेवादल अध्यक्ष राजीव जस्सल, महासचिव सुभाष चंद, रघुवीर सिंह, सुनील कुमार, जागीर सिंह, अब्दुल हुसैन, हरनाम सिंह, संजीव कुमार, देवराज और पंचायत पंचायत के लोगों ने श्रद्धांजलि देकर उन्हें याद किया।

ऑपरेशन के बाद महिला की मौत पर परिजनों ने निजी अस्पताल में किया जमकर हंगामा

पांच घंटे तक डॉक्टरों को कमरे में रखा बंद

अनंत ज्ञान, नादौन

पित्ताशय के ऑपरेशन के बाद हुई महिला की मौत पर रोषित परिजनों और ग्रामीणों ने नादौन शहर के एक निजी अस्पताल में जमकर हंगामा किया। भारी संख्या में लोगों ने अस्पताल में तोडफोड़ की और एक नर्स, उसके भाई तथा एक डॉक्टर के साथ भी मारपीट की। इतना ही नहीं, करीब 5 घंटे तक दो डॉक्टर तथा एक महिला डॉक्टर एक कमरे में ही बंद रहे, जिन्हें बाहर नहीं निकलने दिया गया। पुलिस ने बड़ी मशक्कत के बाद उन्हें रात करीब डेढ़ बजे सुरक्षित बाहर निकाला।

गौर हो कि नादौन के साथ लगते ज्वालामुखी क्षेत्र के मझीन गांव के निकट दबकेड़ गांव की 23 वर्षीय कल्पना पत्नी जीवन कुमार को शनिवार रात अस्पताल में दाखिल करवाया गया था। रविवार शाम करीब 5 बजे उसके पित्ताशय का सफल ऑपरेशन हुआ। ऑपरेशन के बाद महिला ने परिजनों तथा अपनी छोटी बच्ची से बात की, परंतु कुछ ही देर बाद उसकी मौत हो गई। परिजनों का

नादौन के निजी अस्पताल में महिला की मौत के बाद गुस्साए ग्रामीण।

लोगों ने अस्पताल में तैनात डॉक्टर, नर्स और भाई से की मारपीट, की तोड़फोड़

आरोप था कि डॉक्टर ने लापरवाही की है और वह डॉक्टर को हिरासत में लेने की मांग पर अड़ गए। हालांकि अस्पताल में कुल पांच ऑपरेशन किए गए जिनमें से चार बिलकुल स्वस्थ हैं।

मौत की सूचना मिलते ही बड़ी संख्या में मौके पर पहुंचे ग्रामीणों ने जमकर हंगामा किया। भीड़ ने पहले तोड़फोड़ की और अपनी नर्स बहन को लेने आए एक युवक और उसकी बहन की भी जमकर धुनाई कर डाली। किसी तरह दोनों वहां से बचकर निकले, लेकिन बाकी स्टाफ अंदर ही फंस गया। तीनों डॉक्टरों ने एक कमरे में छिपकर अपनी जान बचाई। इस हंगामे के कारण अस्पताल में दाखिल अन्य रोगियों को भी काफी परेशानी हुई।

सूचना मिलने पर थाना प्रभारी बाबू राम शर्मा भी टीम सहित मौके पर पहुंचे, परंतु नाजुक स्थिति को देखते हुए अतिरिक्त पुलिस बल हमीरपुर से मंगवाया गया और डीएसपी नितिन चौहान भी वहां आ गए। इसी दौरान पता चला कि कश्मीर में सेना में तैनात महिला का सैनिक पति भी वहां पहुंच रहा है और लोग उसके आने तक शव न उठाने की जिद पर अड़ गए। पुलिस ने बड़ी मुश्किल से रात करीब डेढ़ बजे तीनों डॉक्टरों को सुरक्षित बाहर निकाला। लोगों ने महिला के शव को उसके पति के पहुंचने के बाद सुबह करीब साढ़े 3 बजे उठाने दिया और पुलिस ने उसे पोस्टमार्टम के लिए भेजा।

महिला अपने पीछे पति सहित एक वर्ष तथा 3 वर्ष की दो छोटी मासूम बच्चियां छोड़ गई है। डॉक्टर का इस संबंध में कहना था कि महिला को ऑपरेशन के बाद हृदयघात हुआ है। थाना प्रभारी बाबू राम शर्मा ने बताया कि मामला दर्ज कर अस्पताल का रिकॉर्ड कब्जे में ले लिया गया है। डीएसपी नितिन चौहान ने कहा कि पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का पता चलेगा। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रत्येक एंगल से मामले की जांच कर रही है।

मोदी सरकार की तरह कर्मचारियों को लाभ प्रदान करे सुक्खू सरकार : राणा

अनंत ज्ञान, हमीरपुर

पूर्व विधायक राजेंद्र राणा ने कहा है कि वित्तीय संकट का रोना रोकर हिमाचल के सरकारी कर्मचारियों के हक मारने वाली सुक्खू सरकार को केंद्र की मोदी सरकार की तर्ज पर दरियादिली दिखानी चाहिए और कर्मचारियों का भविष्य सुनिश्चित करना चाहिए। राजेंद्र राणा ने कहा कि केंद्र सरकार अपने कर्मचारियों को लगातार महंगाई भत्ते की किस्त तो दे ही रही है, लेकिन अब मोदी सरकार ने सरकारी कर्मचारियों के लिए पेंशन की एक नई योजना को मंजूरी देकर बहुत महत्वपूर्ण पहल की है।

इस योजना को एकीकृत पेंशन योजना का नाम देकर सरकारी कर्मचारियों को बहुत बड़ा तोहफा प्रदान किया है। केंद्र की नई पेंशन स्कीम में 10 साल की नौकरी के बाद न्यूनतम 10,000 रुपए मासिक पेंशन की गारंटी का प्रावधान किया जाना और 25 साल नौकरी करने के बाद सर्विस के आखिरी 12 महीने की सैलरी का 50 प्रतिशत हिस्सा पेंशन के तौर पर दिया जाना एक ऐतिहासिक निर्णय है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने फैमिली पेंशन का भी पूरा ध्यान रखा है और सरकारी कर्मचारी की सर्विस के दौरान मौत होने पर कर्मचारी के परिवार को 60 प्रतिशत हिस्सा दिए जाने का प्रावधान भी नई पेंशन स्कीम में किया गया है। इसके अलावा कर्मचारियों और सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ते के साथ-साथ रिटायरमेंट पर ग्रेच्युटी की राशि के अतिरिक्त प्रत्येक कर्मचारी को रिटायरमेंट पर एकमुश्त भुगतान किया जाने का प्रावधान करना अत्यंत सराहनीय है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने कभी भी आर्थिक संकट का हवाला देकर सरकारी कर्मचारियों के हितों पर कैंची नहीं चलाई है जबकि हिमाचल प्रदेश में सुक्खू सरकार ने सत्ता में आने के पहले दिन से ही कर्मचारी विरोधी रवैया अपनाया हुआ है और कर्मचारी के महंगाई भत्ते की किस्तें और एरियर रोक रखा है।

संस्था ने गरीब परिवारों को 76,600 रुपए की दी आर्थिक सहायता

अनंत ज्ञान, भोरंज

उपमंडल भोरंज के तहत गरीब असहाय संस्था भरेड़ी ने गरीब असहाय परिवारों में 76,600 रुपए वितरित किए हैं। गरीब असहाय संस्था की मासिक सभा संस्था के प्रधान अरुण अरोड़ा की अध्यक्षता में संपन्न हुई। इसमें सभी कार्यकारिणी के सदस्यों का सहयोग के लिए धन्यवाद किया व संस्था को और सुदृढ़ करने के लिए प्रत्येक गांव में बैठकों का आयोजन किया जाए, ताकि लोगों को अहसास हो कि संस्था ठीक से चल रही है व अधिक से अधिक लोग संस्था से लाभ ले सकें।

इस मौके पर बलबीर सिंह पुत्र किरपू राम गांव धिरवीं को बिजली के लिए 10,000 रुपए, कृष्ण चंद पुत्र मस्त राम गांव हरनौट को घर की मरम्मत के लिए 15,000 रुपए, साक्षी देवी पत्नी प्रवीण कुमार गांव कुठेड़ा को हृदय रोग के इलाज के लिए 10,000 रुपए, सुष्मा देवी पत्नी प्यार चंद गांव भोरंज को टांग के इलाज के लिए 10,000 रुपए, कश्मीर सिंद पुत्र रोशन लाल गांव टूह को हृदय रोग के इलाज के लिए 10,000 रुपए, दिनेश कुमार पुत्र प्रकाश चंद गांव साही को कैंसर के इलाज के लिए 20,000 रुपए, लता देवी पत्नी पवन कुमार गांव व डाकघर टिक्करी को फीस के लिए 1600 रुपए संस्था द्वारा दिए गए।

इस मौके पर संस्था के सदस्य हरनाम सिंह, सिमरो कौशल, वीआर शर्मा, मिलखी राम, संस्था के उपप्रधान बीसी कौशल, कश्मीर सिंह, संस्था के संस्थापक डॉ. पीसी सैणी, रमेश चंद शर्मा इत्यादि उपस्थित रहे।

जिलेभर में जन्माष्टमी पर मंदिरों में लगा श्रद्धालुओं का तांता

भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन करने के लिए मंदिरों में दिन भर लगी रही श्रद्धालुओं की भीड़। इस दौरान लोगों ने खूब फल चढ़ाए तथा कई श्रद्धालुओं ने व्रत भी रखा।

अनंत ज्ञान, हमीरपुर

शास्त्रानुसार मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म अर्ध रात्रि व्यापिनी अष्टमी तिथि को हुआ था। इस वर्ष व्यापिनी अष्टमी 26 अगस्त को है, इसलिए भगवान श्रीकृष्ण का जन्मोत्सव जिले के सभी मंदिरों में धूमधाम से मनाया जा रहा है।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर बच्चों से लेकर बुजुर्ग भी व्रत करते हैं और फल आहार ही लेते हैं। रात 12 बजे के बाद ही भोजन करते हैं। भविष्य पुराण के अनुसार जन्माष्टमी व्रत से सात जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं। हमीरपुर शहर के बीचोंबीच स्थित श्री सत्य नारायण मंदिर में भी श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पूरी श्रद्धा से मनाया जा रहा है। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी को लेकर मंदिर भव्य तरीके से सजाया गया है। मंदिर में कान्हा के लिए झूला भी लगाया गया है, जिसे मंदिर में आने वाले श्रद्धालु रस्सी खींचकर झूला रहे हैं। श्री सत्य नारायण मंदिर में कृष्ण भक्तों की भीड़ देखते ही बन रही है। क्या बच्चे, क्या महिलाएं और क्या युवा सभी श्रीकृष्ण भगवान के दर्शनों के लिए लाइनों में लगकर आर्शीवाद प्राप्त कर रहे हैं, वहीं महिलाएं झूम-झूमकर श्री कृष्ण के भजन गा रही हैं।

मंदिरों में झूला झुलाने के लिए विशेष प्रबंध

इसके अलावा मंदिर में बैंडबाज की भी व्यवस्था की गई है। मंदिर के महंत राकेश दास महात्यागी ने बताया कि सोमवार रात 12 बजे तक श्रीकृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा, जबकि मंगलवार को दोपहर 12 बजे राधा-कृष्ण की मनमोहक झांकी पूरे बाजार में निकाली जाएगी और शाम को चार बजे से लेकर रात्रि एक बजे तक भजन संध्याओं का आयोजन किया जाएगा। मंदिर में भंडारे का आयोजन बुधवार को दोपहर 12 बजे से शुरू किया जाएगा और प्रभु इच्छा तक जारी रहेगा। ऐसे में शहर के सभी कृष्ण भक्त सत्य नारायण मंदिर में सादर आमंत्रित हैं।

शहर के कई वार्डों में घरों के ऊपर से गुजर रही तारें बनी मानव जाति के लिए खतरा

अनिल कुमार, हमीरपुर

बिजली बोर्ड द्वारा डाली गई बिजली की तारें दुकानदारों और मकान मालिकों के लिए किसी जानलेवा खतरे से कम नहीं है। हालांकि बिजली बोर्ड ने काफी पहले ये बिजली की तारें डाली थीं और इन तारों के नीचे मकान बनाने के लिए मकान मालिकों को नोटिस भी दिए थे। उन नोटिसों का क्या बना, इसका तो पता नहीं, लेकिन अभी शहर के कई वार्डों में घरों के उपर से ये तारें गुहर रही हैं।

हाल ही में वार्ड नंबर दो में बिजली की हाईटेशन तारों की चपेट

शहर के कई वार्डों में घरों के ऊपर से गुजर रही तारें लोगों के लिए खतरा बन गई हैं। अभी हाल ही में हुई लड़की की मौत के बाद कमेटी बनाई गई है, जो इस पर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

वार्ड नं. दो में हुए हादसे के बाद तारें हटाने को लेकर बनाई कमेटी करेगी सर्वे

में आने से एक 14 वर्षीय नेपाली मूल की लड़की की मौत हो गई थी। बताया जा रहा है कि इस मकान मालिक को भी बिजली बोर्ड ने नोटिस दिया था, लेकिन फिर भी मकान मालिक ने तारों के नीचे चार मंजिला भवन तैयार कर लिया। हादसे के बाद बिजली बोर्ड, पुलिस विभाग और नगर परिषद हमीरपुर के अधिकारियों ने बिजली की तारों का मुआयना किया। उसके बाद एसपी हमीरपुर भगत सिंह ठाकुर के नेतृत्व में एक बैठक आयोजित की गई जिसमें बिजली बोर्ड और नगर परिषद के कर्मचारियों की एक कमेटी बनाई।

यह कमेटी आने वाले दिनों शहर के विभिन्न वार्डों में घरों के ऊपर से जा रही बिजली की तारों के बारे में रिपोर्ट तैयार करेगी। रिपोर्ट तैयार करने के बाद इस पर निर्णय लिया जाएगा कि इन समस्या का समाधान कैसे किया जाएगा। इस कार्य के लिए नगर परिषद हमीरपुर के अधिकारी भी पूरा सहयोग करेंगे। गौर रहे कि वार्ड नंबर 10 में भी एक मकान के ऊपर से बिजली की तारों से खतरा बना हुआ है। मकान मालिक का कहना है कि बिजली की तारों से दोबारा हादसे न हों, इसके लिए कमेटी बनाई गई है, जो नगर परिषद के सहयोग से विभिन्न वार्डों में ऐसे स्थान चिन्हित करेगी, जहां पर बिजली की तारें घरों के ऊपर से जा रही हैं। आने वाले दिनों में इस पर कार्य शुरू किया जाएगा और इस समस्या का सही तरीके से समाधान किया जाएगा।

-नरेंद्र अबरोल, वरिष्ठ अधिशाषी अभियंता बिजली बोर्ड

बिजली की तारों को हटाने के लिए कई बार बिजली बोर्ड के अधिकारियों को अवगत करवाया, लेकिन फिर भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। (अनंत ज्ञान)

प्रधानमंत्री की यूनिफाइड पेंशन स्कीम की मंजूरी एक ऐतिहासिक निर्णय : उषा बिरला

अनंत ज्ञान, हमीरपुर

जिला भाजपा की उपाध्यक्ष उषा बिरला ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा यूनिफाइड पेंशन स्कीम (यूपीएस) को मंजूरी देने के फैसले का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने इस ऐतिहासिक निर्णय को कर्मचारियों के हित में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दूरदर्शी कदम बताया।

इससे सरकारी कर्मचारियों का भविष्य सुरक्षित और संरक्षित रहेगा। बिरला ने प्रधानमंत्री मोदी को धन्यवाद देते हुए कहा कि सेवानिवृत्ति के पश्चात यूनिफाइड पेंशन स्कीम द्वारा मिलने वाले वित्तीय सुरक्षा लाभों से कर्मचारी और अधिकारियों का मनोबल बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि यूपीएस के तहत कर्मचारियों के भविष्य की वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित की गई है।

इस योजना के अंतर्गत, कर्मचारी और नियोक्ता दोनों द्वारा अंशदान किया जाएगा, जो एक केंद्रीय कोष में जमा होगा। इस कोष का सुरक्षित और पारदर्शी निवेश किया जाएगा, जिससे कर्मचारियों को उनकी सेवा के बाद पेंशन के रूप में एक स्थिर आय प्राप्त होगी। यह स्थिरता कर्मचारियों के लिए वित्तीय सुरक्षा का आधार बनेगी। प्रधानमंत्री हमेशा गरीब, युवा, महिला, किसान के बारे में तो निर्णय लेते हैं, लेकिन इस बार उन्होंने कर्मचारियों की बहुत पुरानी मांग का निर्णय लेते हुए एक ऐतिहासिक फैसला लिया है और इससे यह साबित करता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हमेशा देश हित के लिए निर्णय लेते हैं। जिला भाजपा उपाध्यक्ष ने कहा यूनिफाइड पेंशन स्कीम में पेंशन प्रक्रिया को पारदर्शी और स्थिर बनाया गया है।

मंडी में पूर्व सैनिकों के साथ मारपीट की घटना पर जताया आक्रोश

अनंत ज्ञान, हमीरपुर

संयुक्त मोर्चा ऑफ एक्स सर्विसमैन (जेसीओ एवं ओआर) हिमाचल प्रदेश के पूर्व सैनिकों ने एक वर्चुअल मीटिंग का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता संगठन के चेयरमैन कैप्टन जगदीश वर्मा सेवानिवृत्त ने की तथा उसका संचालन संगठन के महासचिव लेफ्टिनेंट रमेश कुमार तपवाल ने किया। इस बैठक में लगभग सभी 12 जिलों के वाइस चेयरमैन व अन्य पदाधिकारियों ने भाग लिया।

सबसे पहले चेयरमैन ने मीटिंग के एजेंडा पर प्रकाश डाला तथा उसके बाद संगठन द्वारा किए जा रहे पूर्व सैनिकों के कल्याणकारी कार्यों पर चर्चा की। बैठक में देश के दूसरे पूर्व सैनिक संगठन जो वन रैंक वन पेंशन लागू करने से उठी विसंगतियां को सरकार द्वारा दूर कराने के लिए आंदोलन करने जा रहे हैं तथा सदर मंडी में हुई पूर्व सैनिकों के साथ मारपीट के मुद्दों पर सबसे बारी-बारी अपने विचार जाने और इसके आंदोलन के बारे में सभी ने एक आवाज में यह सहमति जताई कि जब तक सभी देशभर के पूर्व सैनिक संगठित नहीं हो जाते हैं तब तक हमें मजबूर होकर दो-तीन संगठनों के साथ चलने में भारी कठिनाई कठिनाई होगी। अत: इस पर सभी ने असहमती जताई। फिर यह भी सुझाव पर सहमति बनी कि अगर प्रयासों के बाद भी भूतपूर्व सैनिक देश में इकट्ठे नहीं होते हैं तो हिमाचल प्रदेश पूर्व सैनिक संयुक्त मोर्चा राष्ट्रीय स्तर पर इस वन रैंक वन पेंशन की विसंगतियां के मुद्दे को अपने आप राष्ट्रीय स्तर पर उठाएगा।

पूर्व सैनिक संयुक्त मोर्चा ने किया वर्चुअल मीटिंग का आयोजन

इसके उपरांत मंडी में पूर्व सैनिक हवलदार नेत्र सिंह व सूबेदार कश्मीर सिंह की खनन के कार्यकर्ताओं द्वारा मारपीट व पुलिस द्वारा केस में दिखाई उदासीनता पर सभी ने चिंता जताई तथा भविष्य में इस प्रकार की घटना होने पर एक होने का संकल्प लिया।

ये रहे मौजूद : बैठक में मंडी से कैप्टन हेतराम, शिमला से हवलदार पवन कुमार चौहान, हमीरपुर से कैप्टन सुरेंद्र सिंह, बिलासपुर से कै. बालक राम शर्मा, जिला कांगड़ा से सूबेदार पवन डोगरा, सिरमौर से कैप्टन जेएस तोमर तथा नायब सूबेदार अमृतलाल (मुख्य सलाहकार) तथा कई अन्य पदाधिकारी शामिल रहे।

क्योंकि आज इन पूर्व सैनिकों की पिटाई की गई दूसरी बार दूसरे भी ऐसी घटनाओं के शिकार हो सकते हैं। इस पर चेयरमैन पूर्व सैनिकों से आहवान किया कि ऐसी घटना होने पर जिला के वाइस चेयरमैन इसका संज्ञान लेंगे और उचित कार्रवाई करेंगे तथा संगठन के पदाधिकारी भी इस प्रकार की घटनाओं पर रोक लगाने के प्रयास करेंगे ताकि भविष्य में इस प्रकार की अभद्र घटनाओं का पूर्व सैनिकों को को सामना न करना पड़े। इसके साथ ही जिला ऊना के लेफ्टिनेंट (भारतीय नौसेना) सेवानिवृत्ति एसपी शर्मा ने मांग की है कि संगठन की बैठकों में जो निर्णय लिए जाते हैं, उनका भविष्य में पालन भी उसी प्रकार से होना चाहिए। संगठन के कोषाध्यक्ष सूबेदार मेजर रोशन लाल चौहान ने मांग की कि वन रैंक वन पेंशन की विसंगतियां में वन रैंक से दूसरे रैंक के बीच में बराबर की पे का अंतर होने के मुद्दे को भी मिलाया जाए ताकि उसके ऊपर भी केंद्र सरकार की सोच विचार कर सकें।

खुशी शहर की सुंदरता बढ़ाने के लिए वार्ड नंबर 2 के चिल्ड्रन पार्क में लगाया महाराणा प्रताप का स्टैच्यू

पार्क में घूमने पहुंच रहे लोग स्टैच्यू के साथ खींच रहे सेल्फी

रवि ठाकुर, हमीरपुर

शहर के वार्ड नंबर दो के चिल्ड्रन पार्क में देश की महान हस्तियों के रूप में महाराणा प्रताप का स्टैच्यू लगा दिया गया है। ऐसे में पार्क की सुंदरता में चार चांद लग गए हैं। पार्क में घूमने पहुंच रहे लोग स्टैच्यू के साथ सेल्फी खींचकर सोशल मीडिया में डाल रहे हैं।

बता दें कि शहर के बीचों-बीच स्थित चिल्ड्रन पार्क में सुबह-शाम लोगों की काफी भीड़ रहती है। पार्क में महाराणा प्रताप के स्टैच्यू के अलावा हाथी की मूर्ति भी स्थापित की है। पार्क में जहां ओपन जिम लगाए गए हैं, वहीं पार्क के चारों ओर सुंदर फूल व पौधे भी

वार्ड नंबर 2 के चिल्ड्रन पार्क में लगा महाराणा प्रता का स्टैच्यू।

पार्क की सुंदरता को बढ़ा रहे हैं। इसके अलावा पार्क में लगाई गई सुंदर लाइटें भी शाम ढलते ही जगमगा उठती हैं। क्या बच्चे, क्या महिलाएं और क्या बुजुर्ग सभी पार्क में घूमने का खूब आनंद लेते देखे जा सकते हैं। शहर के लोग भी पार्क की सुंदरता देखकर काफी खुश हैं।

नगर परिषद हमीरपुर ने शहर के पार्कों में देश की महान हस्तियों के स्टैच्यू लगाना शुरू कर दिए हैं। बाल स्कूल मैदान हमीरपुर के सामने बनाए गए पार्क में अंतरिक्ष स्पेश यात्रियों का स्टैच्यू देखा जा सकता है, जो कि देखने में भी काफी सुंदर लग रहा है। इसके अलावा शहर के गांधी चौक के फर्स्ट फ्लोर पर स्थित महात्मा गांधी की प्रतिमा को भी नया रंग रोबन किया गया है और फर्श में भी नई टाइलें इत्यादि लगाकर सुंदर बनाया गया है, ताकि गांधी चौक देखने में भी और सुंदर लग सके। (अनंत ज्ञान)

शहर के दो नंबर पार्क में महाराणा प्रताप का स्टैच्यू लगा दिया गया है। इसी तरह बाल स्कूल के सामने वाले पार्क में स्पेश यात्रियों का स्टैच्यू लगाया गया है। गांधी चौक में फर्स्ट फ्लोर पर स्थित महात्मा गांधी के स्टैच्यू को रंग-रोबन करके सुंदर बनाया गया और फर्श में नई टाइलें लगाकर सुंदर बनाया गया है। शहर में जल्द ही अन्य जगहों पर देश के महान हस्तियों के और स्टेच्यू नजर आएंगे।

-मनोज कुमार मिन्हास नगर परिषद अध्यक्ष हमीरपुर।

स्वामी रामदेव के आयुर्वेदिक सस्ती दवाइयों के प्रचार से मल्टीनेशनल कंपनियों को हुआ घाटा

अनंत ज्ञान, हमीरपुर

स्वामी रामदेव ने भारत को ही नहीं दुनिया को योग के माध्यम से स्वस्थ रहने का मंत्र दिया और प्रचलित दवाइयों का कम से कम प्रयोग करने का संदेश दिया।

इसके अलावा पतंजलि द्वारा विकसित सस्ती आयुर्वेदिक दवाइयों का प्रचार-प्रसार किया, जिस के फलस्वरूप मल्टीनेशनल दवाइयों के निर्माताओं ने पतंजलि का संचालन करने वाले स्वामी रामदेव तथा आचार्य बालकृष्ण को न्यायालय में इसलिए घसीटा कि उन्होंने अपने प्रॉडक्ट के प्रचार-प्रसार में जो विज्ञापन दिया था, उसमें दावा किया गया था कि पतंजलि द्वारा विकसित दवाइयां पूर्ण रूप से सुरक्षित हैं, फलस्वरूप बहुराष्ट्रीय कंपनियों के दवाइयों के निर्माताओं तथा देश में उनका प्रतिनिधित्व करने वालों ने उन्हें न्यायालय में घसीटा और लंबी न्यायालय की प्रक्रिया के पश्चात न्यायालय में माफीनामा पेश करने के पश्चात माननीय न्यायालय ने चेतावनी देते हुए उन्हें बरी किया और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रतिनिधियों ने इसे अपनी जीत माना।

अराजपत्रित कर्मचारी महासंघ हिमाचल प्रदेश के पूर्व अध्यक्ष प्रेम सिंह भरमौरिया ने कहा कि देश बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा निर्मित खांसी, जुकाम व अन्य दवाइयों तथा सौंदर्य प्रसाधनों के बड़े-बड़े होर्डिंग्स तथा प्रिंट मीडिया तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में बड़े विज्ञापन प्रसारित हो रहे हैं, जिनके माध्यम से दावा किया जाता है कि उनके द्वारा निर्मित सौंदर्य पदार्थ तथा दवाइयां 100 प्रतिशत सुरक्षित तथा कारगर हैं, जब कि ऐसा कभी भी संभव नहीं है।

क्या कभी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के विरुद्ध किसी न्यायालय में मामले दर्ज किए या न्यायालय ने स्वयं सज्ञान लेते हुए उनके विरुद्ध कोई कार्रवाई अमल में लाई। मल्टीनेशनल कंपनियों द्वारा निर्मित दवाइयों का इस समय देश में सबसे बड़ा उद्योग है और उनके प्रतिनिधि देश को लूट रहे हैं। हमारा कर्तव्य बनता है कि हमारे देश के संतों योग आचार्यों द्वारा दर्शाई गई पद्धति का अनुसरण करें तथा स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करें।

ऊना में जन्माष्टमी महोत्सव पर हर तरफ भक्तिमय माहौल

डेरा बाबा रुद्रु नारी ऊना में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, अलका गोयल के भजनों से श्रोता हुए मंत्रमुग्ध

डेरा बाबा रुद्रु नारी ऊना में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, (दाएं) डेरा बाबा रुद्रु नारी ऊना में जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में कृष्ण भजन प्रस्तुत करती भजन गायक अलका गोयल।

राजेश शर्मा, ऊना

जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में जिलाभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस कड़ी में डेरा बाबा रुद्रु नारी ऊना में भी भव्य आयोजन किया गया।

डेरे को पूरी तरह से सजाया गया था और भक्तिमय माहौल बना हुआ था। डेरे में प्रसिद्ध भजन गायक अलका गोयल ने भगवान कृष्ण को समर्पित भजन प्रस्तुत करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर डेरे में हजारों की संख्या में भीड़ पहुंची थी। लोग भजनों का आनंद प्राप्त कर रहे थे। भक्तों के लिए भोजन और प्रसाद का लंगर वितरित किया जा रहा था। वेदांताचार्य सुग्रीवानंद महाराज जी भी धूने पर विराजमान थे और हजारों भक्तों ने उनके दर्शन किए।

इस अवसर पर सुग्रीवानंद महाराज के शिष्य एवं उत्तराधिकारी हेमानंद जी, ट्रस्ट के सचिव राजेंद्र भारद्वाज के अलावा कई लोग मौजूद थे।

उधर, बाबा बाल आश्रम कोटला कलां में भी रासलीला का आयोजन किया गया। इसमें कृष्ण भगवान की लीलाओं को दिखाया गया। भगवान कृष्ण की कथा का भी गुणगान किया जा रहा है। राष्ट्रीय संत बाबा बाल जी महाराज द्वारा भी श्रद्धालुओं को प्रवचन दिए गए। जिले के कई धार्मिक स्थलों, मंदिरों में जन्माष्टमी का पर्व धूमधाम से मनाया गया।

राधा कृष्ण मंदिर कोटलाकलां में भी भजन गायक अलका गोयल ने प्रभु कृष्ण जी के भजन प्रस्तुत करके समां बांध दिया। जन्माष्टमी का पर्व कई गांवों में लोगों द्वारा घरों में भी मनाया। भगवान कृष्ण के झूले लगाकर और लड्डू गोपाल जी की पूजा–अर्चना करते हुए पर्व की परंपरा को निभाते दिखे। (अनंत ज्ञान)

जैजों हादसे में मृतकों के आश्रितों को मिला मुआवजा

अनंत ज्ञान, ऊना

पंजाब के जैजों खड्ड हादसे में जान गंवाने वाले देहलां व भटोली के 11 लोगों के पारिवारिक सदस्यों को रविवार को 44 लाख रुपए की आर्थिक सहायता के चेक प्रदान किए गए हैं। यह राशि दिलवाने के लिए ऊना विधानसभा क्षेत्र के पूर्व विधायक सतपाल सिंह रायजादा स्वयं शोक संतप्त परिवारों को साथ लेकर जैजों पहुंचे हुए थे।

पंजाब सरकार से मृतकों के आश्रितों को मुआवजा दिलाने पहुंचे सतपाल रायजादा के साथ देहलां के प्रधान राजिंद्र कुमार, उपप्रधान राहुल मैनन, रोहित सहोड़, विजय राजपूत आदि भी साथ मौजूद रहे। जैजों में एक गुरुद्वारे में अखंड पाठ की समाप्ति के बाद एमपी डॉ. राज कुमार चब्बेआल, कैबिनेट मंत्री ब्रह्मशंकर जिंपा और सतपाल सिंह रायजादा की मौजूदगी में परिवार के सदस्यों को 4–4 लाख रुपए के चेक वितरित किए गए।

इस अवसर पर डॉ. राजकुमार चब्बेवाल व ब्रह्मशंकर जिम्पा ने अपने संबोधन में कहा कि यह हादसा एक दुखद याद की तरह हमेशा जहन में रहेगा। हादसे के बाद से ऊना के पूर्व विधायक सतपाल रायजादा यहां मौजूद रहे और शवों के पोस्टमार्टम से लेकर चेक दिलवाने तक रायजादा ने अहम भूमिका निभाई है। लगातार वह उनके संपर्क में रहे और रिकॉर्ड समय में यह राशि शोक संतप्त परिवारों को मिल पाई है।

इस दौरान सतपाल सिंह रायजादा ने कहा कि विधानसभा क्षेत्र का हर इंसान उनके परिवार का हिस्सा है। यह एक बेहद दुखद हादसा था। परिवार की दुख की घड़ी में वह उनके साथ रहे। परिवार से वादा किया गया था कि संस्कार की सारी प्रक्रियाओं के बाद उन्हें राशि दिलवाई जाएगी। यह वादा पूरा किया गया है।

क्षतिग्रस्त रामपुर पुल का लिया जायजा

ऊना। सदर के पूर्व विधायक और प्रदेश कांग्रेस उपाध्यक्ष सतपाल रायजादा ने सोमवार को क्षतिग्रस्त रामपुर पुल का जायजा लिया। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों के साथ इस पुल के पास वैकल्पिक व्यवस्था बनाए जाने की भी चर्चा की। उन्होंने कहा कि रिकॉर्ड समय में इसका कार्य पूरा किया जाएगा।

चोरों ने किया नकदी और आभूषणों पर हाथ साफ

अनंत ज्ञान, बंगाणा

पुलिस थाना बंगाणा के तहत पड़ते ग्राम पंचायत पिपलू में एक घर में चोरी की वारदात सामने आई है। पिपलू पंचायत के मुख्य बाजार चौक में रेन शेल्टर के साथ लगते घर में अज्ञात चारों ने नकदी सहित आभूषणों पर हाथ साफ किया है। बताया गया है कि वारदात में चोरों ने 72 हजार रुपए की नकदी और 23 हजार रुपये के गहनों पर हाथ साफ किए हैं। पुलिस ने शिकायत के बाद आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

पुलिस सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार पवन कुमार पुत्र जगदीश चंद पिछले कुछ दिन से अपने निजी काम के चलते चंडीगढ़ गए हुए थे। इस बीच अज्ञात चोरों ने उनके घर में सेंधमारी कर दी। घर के दरवाजे का ताला तोड़कर कमरे में रखी नकदी तथा कुछ गहने लेकर फरार हो गए हैं। चोरी की वारदात की सूचना मिलते ही पवन कुमार भी अपने घर पहुंचे।

इस बीच उन्होंने रविवार को बंगाणा पुलिस में चोरी की शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस थाना प्रभारी ने टीम सदस्यों सहित मौके पर पहुंच घटना की पूरी जानकारी प्राप्त की। एएसपी संजीव भाटिया ने बताया कि मकान मालिक बीते 12 दिन से घर से बाहर रहा, इस बीच अज्ञात लोगों ने मौका पाकर चोरी की वारदात को अंजाम दिया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। आगामी जांच जारी है।

'सोमभद्रा सेतु' एक पुल जो विश्वास भरे विकास का प्रतीक बन गया

अनंत ज्ञान ब्यूरो, ऊना

ऐसे तो हर पुल विकास की एक नई कहानी कहता है, लेकिन उनमें भी कुछ सेतु ऐसे होते हैं जो साधारण निर्माण से बढ़कर हजारों लोगों के लिए जीवन में स्थायी बदलाव का हेतु बन जाते हैं। ऊना जिले के हरोली में स्थित सोमभद्रा सेतु विकास की ऐसी ही एक उम्दा दास्तान है। हरोली को ऊना के रामपुर से जोड़ते हुए सोमभद्रा नदी, स्थानीय नाम स्वां नदी पर 33.58 करोड़ से बना यह 773.30 मीटर लंबा पुल करीब 20 हजार की आबादी के लिए विश्वास भरे विकास का प्रतीक बन गया है।

हरोली की प्रधान रमन कुमारी कहती हैं कि इस पुल ने न केवल बरसात के मौसम में होने वाली

कठिनाइयों से मुक्ति दिलाई है, बल्कि हरोली और ऊना के बीच आवागमन को सरल बनाने के साथ ही स्थानीय लोगों के जीवन में आशा और विकास का नया द्वार खोल दिया है।

रास्ता भी...मुकाम भी : वहीं, रोड़ा गांव के संजीव कुमार बताते हैं कि सोमभद्रा सेतु के बनने से लोगों को हरोली से ऊना आने–जाने के लिए 11 किलोमीटर की अतिरिक्त यात्रा से छुटकारा मिला है। ऊना से हरोली की दूरी पहले करीब 16 किलोमीटर थी, जिसके लिए घालूवाल होकर जाना पड़ता था, इस पुल के बनने से यह दूरी कम होकर महज 7 किलोमीटर रह गई है।

धर्मपुर की प्रधान सुभद्रा चौहान कहती हैं कि चाहे किसानों को अपनी उपज मंडी तक पहुंचाने की सुविधा हो, नौकरीपेशा लोगों को अपने कार्यस्थल तक जाने की सहूलियत हो या छोटे व्यापारियों का सामान लाने–ले जाने की सुविधा हो, सोमभद्रा सेतु ने हर किसी के लिए एक नया रास्ता खोला है। सबकी आशाओं को एक मुकम्मल मुकाम दिया है।

पुल बना पसंदीदा सेल्फी प्वाइंट : वहीं, दुलैहड़ गांव की सुनीता बग्गा, जो महिला एससी विंग की ब्लॉक प्रधान भी हैं, उनका कहना है कि यह पुल विकास परियोजनाओं में विभिन्न विभागों के आपसी तालमेल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। लोक निर्माण विभाग ने इसका निर्माण किया है। पुल इतना सुंदर बना है कि यह लोगों के लिए पसंदीदा सेल्फी प्वाइंट बन गया है। बता दें, पुल को आधुनिक तकनीक और भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए 'इंजीनीयरिंग मार्वल' की तरह तैयार किया गया है। 773.30 मीटर स्पैन के इस पुल के दोनों ओर पैदल चलने वालों के लिए सुंदर पथ बनाए गए हैं। आधुनिक डिजाइन की सोलर लाइटें इसे और भी आकर्षक बनाती हैं।

उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री के विजन का सुफल

हरोली की गोंदपुर जयचंद पंचायत के प्रधान अनूप अग्निहोत्री का कहना है कि यह पुल उपमुख्यमंत्री एवं हरोली के विधायक मुकेश अग्निहोत्री के विजन का सुफल है। यह पुल इस बात का प्रत्यक्ष उदाहरण है कि कैसे कोई निर्माण एक असाधारण उपलब्धि बन सकता है। यह पुल केवल एक संरचना भर नहीं है, बल्कि यह हजारों दिलों को जोड़ने और उनके कष्टों को दूर करने का माध्यम भी बना है। हरोली के पंजावर के रहने वाले कांग्रेस के ऊना जिले के प्रधान रणजीत राणा बताते हैं कि यह पुल इस बात का गवाह है कि किसी लीडर की प्रगतिशील सोच कैसे एक साधारण पुल को विकास और विश्वास का आदर्श बना सकती है। मुकेश अग्निहोत्री की दूरदर्शिता और समर्पण ने जनता के जीवन में स्थायी बदलाव लाने का कार्य किया है और सोमभद्रा सेतु इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। साल 2007 में उन्होंने तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री वीरभद्र सिंह के हाथों इसका नींव पत्थर रखवाया था। श्री अग्निहोत्री ने इसके लिए सारी धनराशि उपलब्ध करवा कर इसे पूरा कराने की सुनिश्चितता दी। पुल साल 2018 में जनता को समर्पित किया गया।

हरोली विधानसभा क्षेत्र को दो सब डिवीजन मिलने पर लोग गदगद

अनंत ज्ञान, ऊना

जिले के हरोली विधानसभा क्षेत्र के लोगों को सरकार से सौगात मिली है। जन्माष्टमी के पावन अवसर पर हरोली वासियों के लिए उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने एक और सौगात दी है। इस पर क्षेत्र के लोगों ने उपमुख्यमंत्री का आभार जताया है। जन्माष्टमी से एक दिन पहले राज्य सरकार की कैबिनेट बैठक में हरोली विधानसभा के खड्डु में एक नहीं, बल्कि दो विभागों के उपमंडल कार्यालय प्रदान किए गए हैं। इनके बड़े कार्यालय पहले ही क्षेत्र में मौजूद हैं। इसके चलते खड्डु में जल शक्ति विभाग के उपमंडल की घोषणा की गई और लोक निर्माण विभाग का भी यहां अब सब डिवीजन खोला जा रहा है। इससे पूर्व दोनों विभागों के यहां पर दो–दो कार्यालय पहले से हैं। लोक निर्माण विभाग एवं जल शक्ति विभाग के हरोली और टाहलीवाल में उपमंडल कार्यालय हैं। घोषणा के बाद इनकी संख्या अब तीन–तीन हो जाएगी।

क्षेत्र के कांग्रेस नेता पवन ठाकुर, सुमन ठाकुर, विपिन कुमार, रंजीत राणा, मुकेश कुमार आदि ने उपमुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया है। बता दें कि उपमंडल कार्यालय में एसडीओ सहित स्टाफ की तैनाती होने से क्षेत्र में दोनों विभागों से जुड़े जनहित कार्य समय पर संपन्न होंगे। स्थानीय लोगों को भी विभागों से संबंधित किसी भी शिकायत के लिए हरोली या फिर ऊना की दौड़ नहीं लगानी पड़ेगी।

बताना जरूरी है कि इससे पूर्व यहां लोक निर्माण विभाग और जल शक्ति विभाग के मंडल कार्यालय भी हाल ही में खोले गए हैं, जबकि कैबिनेट बैठक में उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री के विधानसभा हलके की दोनों प्रमुख मांगों पर मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मुहर लगाई गई है। इसके अलावा विकासात्मक योजनाओं को लेकर अहम निर्णय लिए गए हैं।

मुकेश ने की जानकारी साझा

उधर, खड्डु में लोक निर्माण विभाग व जल शक्ति विभाग के उपमंडल कार्यालय खुलने के संबंध में उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर भी जानकारी को साझा किया है।

कुटलैहड़ वेलफेयर फाउंडेशन के शिविर में जांचा 110 लोगों का स्वास्थ्य

विनोद शर्मा, लठियानी

शौर्य चक्र विजेता (मरणोपरांत) अमर शहीद ब्रजेश कुमार की याद में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। कुटलैहड़ वेलफेयर फाउंडेशन की ओर से पीएम श्री राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय धुंदला में लगाए गए इस शिविर में 110 मरीजों की जांच कर उन्हें दवाइयां भी दी गईं।

शिविर में देवभूमि अद्वैता हार्ट एंड मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल ऊना के विशेषज्ञ चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ ने अपनी सेवाएं दीं। अमर शहीद ब्रजेश कुमार की पत्नी श्वेता शर्मा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की।

फाउंडेशन की ओर से मुख्यातिथि श्वेता शर्मा, देवभूमि अद्वैता हार्ट एंड मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल ऊना की निदेशक मोनिका सिंह, विशेषज्ञ चिकित्सकों और हिमाचल प्रदेश रेडक्रॉस स्टेट पैट्रेन (महामहिम राष्ट्रपति द्वारा नामित) सुरेंद्र ठाकुर को सम्मानित किया गया। शिविर में सभी के लिए चायपान व भोजन की व्यवस्था भी की गई थी। कुटलैहड़ वेलफेयर फाउंडेशन के अध्यक्ष सुशील ठाकुर, वरिष्ठ उपाध्यक्ष योगराज कौशल, महासचिव अंकित कौशल ने शिविर के सफल आयोजन के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।

शिविर में ग्राम पंचायत धुंधला के उपप्रधान रमन शर्मा, एसएमसी के प्रधान अशोक कुमार सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। (अनंत ज्ञान)

अमर शहीद ब्रजेश कुमार की पत्नी श्वेता शर्मा को सम्मानित करते आयोजक

हेरू में निशुल्क पौधे वितरित किए

पौधे वितरण कार्यक्रम में विभाग के कर्मचारी और स्थानीय लोग।

अनंत ज्ञान, लठियानी

उपमंडल बंगाणा के लठियानी पंचायत के हेरू गांव में वन विभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान ग्रामीणों को निशुल्क खेर के पौधे वितरित किए। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य क्षेत्र में जैव विविधता को बढ़ावा देना और पर्यावरण संरक्षण को सुदृढ़ करना था।

इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में वन अरण्यपाल हमीरपुर, निशांत संधोतरा ने शिरकत की। उनके साथ वन अधिकारी वन मंडल सुशील राणा सिंह, वन रक्षक प्रवीण, वन खण्ड अधिकारी चरणजीत सिंह, आसिफ भट्टी, अजय कुमार और विजय कुमार भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि निशांत संधोतरा ने कहा, 'जैव विविधता योजना के तहत खेर के पौधों का वितरण पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। खेर के पौधे न केवल पर्यावरण को हरा–भरा बनाए रखने में मदद करेंगे बल्कि वे क्षेत्र की जैव विविधता को भी समृद्ध करेंगे।'

गांव हेरू में लठियानी क्षेत्र के ग्रामीणों ने इस प्रकार के अयोजन का विभाग का धन्यवाद किया। इस अवसर पर कुलदीप कुमार, प्रवीणा कुमारी, सतीश कुमार, रमेश, सुखदेव, राकेश, जगदीश, विद्यासागर, बलराज, शशी शर्मा और मुकेश व अन्य ग्रामवासी मौजूद रहे। गांववासियों ने बताया कि वे इन पौधों का अच्छे ढंग से देखभाल करेंगे। वन विभाग के अधिकारियों ने भी इस पहल को सफल बनाने के लिए ग्रामीणों को पौधों की देखभाल के संबंध में आवश्यक जानकारी दी।

सूडोकु 0038 (सरल)

5		9		8	3	2		
	2		4					8
3	8		5	2	6	1		
	7						9	5
9		3	6		8	7		4
2	6						1	
		5	2	7	1		8	6
6					4		7	
		8	9	6		4		2

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं।
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3 गुणा 3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनवृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें।
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।
- पहेली का केवल एक ही हल है।

सूडोकु 0037 का हल

8	2	5	3	6	7	9	1	4
4	6	1	8	9	2	3	7	5
3	7	9	1	5	4	6	8	2
1	3	7	4	2	9	5	6	8
6	5	2	7	1	8	4	9	3
9	8	4	6	3	5	1	2	7
2	4	6	9	8	3	7	5	1
5	1	3	2	7	6	8	4	9
7	9	8	5	4	1	2	3	6

अनंत ज्ञान

आज का राशिफल

बॉबी गोस्वामी, पुजारी,श्री चामुंडा नंदीकेश्वर धाम

आज का पंचांग

27 अगस्त, 2024, मंगलवार

विक्रमी संवत : 2081, **शक संवत :**1946 (क्रोधी), **मास :** श्रावण, **तिथि** नवमी : (1:35): **नक्षत्र** रोहिणी(03:38), **पक्ष :** कृष्ण **योगः** हर्शण (8:30) **शुभ मुहूर्त :** अभीजित (11:56-12:47), **राहुकाल** (03:32 -05:11)।

विशेष दिन

- 27 अगस्त 2024 : गोगा नवमी आज।
- 27 अगस्त 2024 : नंद महोत्सव आज।
- 28 अगस्त 2024 : राष्ट्रीय विचारशील दिवस।

मेषः कारोबार में चल रहे तनाव व आर्थिक मंदी से परेशान रहेंगे। कर्ज संबंधित प्रक्रिया को पूरा करने में लगे रहेंगे। व्यर्थ के दिखावे और आडंबरों से दूर रहें।

वृषभः आज का दिन परिवार के लिए महत्त्वपूर्ण है। आपकी बुद्धिमानी से सम्मान मिलेगा तथा व्यापार में उन्नति होगी। वाहन सावधानी से चलाएं।

मिथुनः अपने दिल की बात कहने का अवसर मिलेगा। माता-पिता के साथ किसी जरूरी मुद्दों पर चर्चा होगी। स्वाध्याय में रुचि बढ़ेगी।

कर्कः समय पर काम करना सीखें। व्यापार बदलने का मन होगा। अपने काम पर ध्यान दें। यात्रा हो सकती है। आर्थिक प्रयासों में सफलता मिलने के योग हैं।

सिंहः आर्थिक तनाव के कारण समाज में आप का अपयश होगा। कार्यक्षमता में कमी आएगी।

कन्याः प्रयास करने से परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। व्यापार में नई योजनाएं बनेंगी। खान-पान में सावधानी रखें। जवाबदारी के कार्य सफलता के साथ पूरे होंगे।

तुलाः नौकरी में प्रयास सार्थक होंगे। ऋण कैसे चुकाया जाये इस ओर ध्यान देना चाहिए। कानूनी मामले आपके पक्ष में हल होंगे।

वृश्चिकः कार्यस्थल पर वाद-विवाद से बचकर रहें। साझेदारी की समस्या का निराकरण होगा। आर्थिक पक्ष मजबूत होगा।

धनु : व्यापार में वृद्धि होकर आर्थिक क्षेत्र में सुधार की संभावना है। आपके कार्यों की प्रशंसा होगी।

मकरः व्यापारिक नए कार्यों को करने से लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। पुरानी उधारी, लेनदारी में सफलता मिलेगी।

कुंभः नौकरीपेशा जातकों के लिए स्थानांतरण या पदोन्नति की संभावना है। क्रोध पर नियंत्रण रखें।

मीनः आप क्यों व्यर्थ समय गंवा रहे हैं। अपनी जिम्मेदारी से विमुख न हों। सामाजिक कामों में रुचि बढ़ेगी। आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

गुग्गा नवमी पर विशेष | गुग्गा जाहरवीर के भक्त अपने घरों में अखंड जोत जलाकर जागरण करते हैं

लोक देवता के नाम से विख्यात है गुग्गा जाहरवीर

गुरदेव कुमार, दौलतपुर चौक

गुग्गा जाहरवीर हिंदू, मुस्लिम, सिख संप्रदायों की सहानुभूति व श्रद्धा अर्जित कर एक धर्मनिरपेक्ष लोक देवता के नाम से पीर के रूप में प्रसिद्ध हुए। गुग्गा जाहरवीर का जन्म राजस्थान के ददरेवा (चुरू) चौहान वंश के राजपूत शासक जैबर की पत्नी बाछल के गर्भ से गुरु गोरखनाथ के वरदान से भादो शुदी नवमी को हुआ था। किवदंती के अनुसार गुग्गा जाहरवीर की मां बाछल देवी निसंतान थी। संतान प्राप्ति के सभी यत्न करने के बाद भी संतान सुख नहींमिला। गुरु गोरखनाथ गोगामडी के टीले पर तपस्या कर रहे थे। बाछल देवी उनकी शरण मे गईं तथा गुरु गोरखनाथ ने उन्हें पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया और कहा कि वे अपनी तपस्या पूरी होने पर उन्हें ददरेवा आकर प्रसाद देंगे, जिसे ग्रहण करने पर उन्हे संतान की प्राप्ति होगी।

तपस्या पूरी होने पर गुरु गोरखनाथ बाछल देवी के महल पहुंचे। उन दिनों बाछल देवी की सगी बहन काछल देवी अपनी बहन के पास आई हुई थी। गुरु गोरखनाथ से काछल देवी ने प्रसाद ग्रहण कर लिया और दो दाने अनभिज्ञता से प्रसाद के रूप में खा गई। काछल देवी गर्भवती हो गई। बाछल देवी को जब यह पता चला तो वह पुन: गोरखनाथ की शरण मे गई।

गुरु बोले, देवी मेरा आशीर्वाद खाली नहीं जाएगा, तुम्हें पुत्ररत्न की प्राप्ति अवश्य होगी। गुरु गोरखनाथ ने चमत्कार से एक गुगल नामक फल प्रसाद के रूप में दिया। प्रसाद खाकर बाछल देवी गर्भवती हो गई और तदुपरांत भादो माह की नवमी को गुग्गा जाहरवीर का जन्म हुआ। गुगल फल के नाम से इनका नाम गुग्गा जाहरपीर पड़ा।

चौहान वंश में राजा पृथ्वीराज चौहान के बाद गुग्गा वीर और ख्याति प्राप्त राजा थे। गुग्गा जाहरवीर का राज्य सतलुज सें हांसी (हरियाणा) तक था। गोगामेडी में गुग्गा जाहरवीर का मंदिर एक ऊंचे टीले पर मस्जिदनुमा बना हुआ है, इसकी मीनारें मुस्लिम स्थापत्य कला का बोध कराती हैं। मंदिर के मध्य में गुग्गा जाहरवीर का मजार है। सांप्रदायिक सद्भावना के प्रतीक गुग्गा जाहरवीर के मंदिर का निर्माण बादशाह फिरोजशाह तुगलक ने कराया था। फिरोजशाह तुगलक हिसार होते हुए सिंध प्रदेश को विजयी करने जाते समय गोगामेडी में ठहरे थे। रात के समय बादशाह तुगलक व उसकी सेना ने एक चमत्कारी दृश्य देखा कि मशालें लिए घोड़ों पर सेना आ रही है। तुगलक की सेना में हाहाकार मच गया।

तुगलक की सेना के साथ आए धार्मिक विद्वानों ने बताया कि यहां कोई महान हस्ती आई हुई है, वह प्रकट होना चाहती है। फिरोज तुगलक ने लड़ाई के बाद आते गोगामेडी में मस्जिदनुमा मंदिर का निर्माण करवाया और पक्की मजार बन गई। तत्पश्चात मंदिर का जीर्णोद्वार बीकानेर के महाराज काल में करवाया गया। गुग्गा जाहरवीर का यह मंदिर आज हिंदू, मुस्लिम, सिख व ईसाइयों में समान रूप से श्रद्धा का केंद्र है। सभी धर्मों के भक्तगण यहां गोगा मजार के दर्शनों हेतु भादव मास में उमड़ पड़ते हैं। राजस्थान का यह गोगामेडी नाम का छोटा सा गांव भादव मास में एक नगर का रूप ले लेता है और लोगों का अथाह समुद्र बन जाता है। गोगा भक्त पीले वस्त्र धारण करके अनेक प्रदेशों से यहां आते हैं। सर्वाधिक संख्या उत्तर प्रदेश व बिहार के भक्तों की होती है।

नर–नारियां व बच्चे पीले वस्त्र धारण करके विभिन्न साधनों से गोगामेडी पहुंचते हैं। भक्तजन अपने–अपने निशान जिन्हें गोगाछड़ी भी कहते हैं, लेकर मनौति मांगने नाचते–गाते ढप व डमरू बजाते व कुछ एक सांप लिए भी आते हैं। गुग्गा जाहरपीर को सांपों के देवता के रूप में भी माना जाता है। हर धर्म व वर्ग के लोग गुग्गा जाहरपीर की छाया चढ़ाकर नृत्य की मुद्रा में सांकल खाते व पदयात्रा करते तथा गोरखनाथ टीले से लेटते हुए गुग्गा जाहरवीर के समाधि स्थल तक पहुंचते हैं। नारियल, पताशे का प्रसाद चढ़ाकर मन्नते मांगते हैं।

श्रीकृष्ण (जन्माष्टमी) के दूसरे दिन की पुण्य तिथि नवमी ही गोगा नवमी नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन वीर गुग्गा जाहरवीर का जन्मोत्सव मनाया जाता है। इनकी जन्मस्थली ददरेबा नामक स्थान है, जो राजस्थान के चूरू जिले में स्थित है। इस दिन गुग्गा जाहरपीर के भक्त अपने घरों में अखंड जोत जलाकर जागरण करते हैं और अपने परंपरागत वाद्य यंत्रों की ध्वनि के साथ गुग्गा जाहरपीर की शौर्यगाथा और जन्मकथा का श्रवण करते हैं। प्राचीन मान्यताओं के अनुसार गुग्गा जाहरपीर महाराज को गोगावीर, गुगालवीर, गोगागर्भी ओर जाहरजहरी नाम से भी जाना जाता है। बाबा की पूजा सामग्री में लौंग, जायफल, कपूर, गुग्गल और गाय का घी प्रयोग में लिया जाता है। प्रसाद के रूप में हरी दूब और चने की दाल समर्पित की जाती है। (अनंत ज्ञान)

> **जब** तक हम स्वयं के साथ शांति नहीं बना लेते, तब तक हम बाहरी दुनिया में शांति प्राप्त नहीं कर सकते। -दलाई लामा

संपादकीय

पक्ष और विपक्ष की भूमिका

हिमाचल विधानसभा का मानसून सत्र एक बार फिर शुरू होने वाला है। जाहिर है सत्ता पक्ष और विपक्ष ने इसके लिए काफी तैयारियां की होंगी। सत्ता पक्ष जहां नई नीतियां बनाने तथा मसलों को सुलझाने पर जोर देना चाहेगा तो वहीं, विपक्ष सत्ता पक्ष को घेरने के लिए आतुर रहेगा। विपक्ष सरकार की कमजोरियों को उजागर करने का पूरा मंसूबा पाले हुए होगा। दूसरी ओर सत्ता पक्ष ने विपक्ष के सवालों की बौछारों की काट निश्चित रूप से निकाल ली होगी। सरकार ने जिस मंशा से इस मानसून सत्र को अब तक का सबसे लंबा मानसून सत्र बनाया, जिसमें कुल 10 बैठकें होनी हैं पर विपक्ष सत्र शुरू होने से पहले पानी फेरता हुआ नजर आ रहा है। मानसून सत्र से सरकार की ओर से सर्वदलीय बैठक बुलाई गई थी। इस बैठक में सत्र के संचालन को लेकर रणनीति बननी थी, लेकिन ऐन मौके से पहले विपक्ष ने इस महत्वपूर्ण बैठक से ही किनारा कर लिया। विपक्ष के नेता जयराम ठाकुर अपनी बीमारी का हवाला देकर नहीं आए और बाकी भाजपा विधायकों ने इस बैठक में आना गंवारा नहीं समझा। सियासी माहिर इसके कई तरह के मायने निकाल रहे हैं। दबी जुबान में चहुंओर चर्चा हो रही है कि विपक्ष शायद इस बार यह सेशन चलने न दे। वह सरकार को घेर कर उसकी फजीहत करना चाहता है। हालांकि इसमें कितनी सच्चाई है इसका खुलसा सत्र शुरू होने के साथ ही हो पाएगा। अगर विपक्षी सदस्य सदन में सही तरीके से आए तो समझो सदन सुचारु रूप से चलता रहेगा, वरना इसके चलने में भी संदेह है। इन सब बातों के पीछे एक अहम सवाल यह है कि क्या विपक्ष का यह रवैया गैर जिम्मेदाराना नहीं है ? विपक्ष आम तौर पर सर्वदलीय बैठक से कभी कन्नी नहीं काटता है, लेकिन यहां तो स्थिति ही उलट हो गई है। विधानसभा सत्र को सुचारु रूप से चलाने के लिए विपक्ष का आचरण एकदम सही होना चाहिए और उसे सर्वदलीय बैठक से किनारा नहीं करना चाहिए। विपक्ष को सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर निर्माणात्मक आलोचना करनी चाहिए।

उसे सदन में शांति और अनुशासन बनाए रखना चाहिए और व्यक्तिगत हमलों से बचना चाहिए। विपक्ष को सरकार के साथ सहयोग करना चाहिए और प्रदेश हित में निर्णय लेने में मदद करनी चाहिए। यही नहीं, अपने मतभेदों को शालीनता से व्यक्त करना चाहिए और सदन की गरिमा बनाए रखनी चाहिए। सर्वदलीय बैठक से किनारा करना उचित नहीं है, क्योंकि यह विपक्ष को सरकार के साथ मिलकर विधायी कार्यों में सहयोग करने और राज्य के हित में निर्णय लेने का अवसर प्रदान करता है। इसके बजाय, विपक्ष को सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए और अपने विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करना चाहिए। सत्ता पक्ष और विपक्ष को विधानसभा में कैसा बर्ताव करना चाहिए यह सवाल भी जनमानस में उठ रहे हैं। सत्ता पक्ष को जहां सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना चाहिए तो वहीं, विपक्ष की आलोचनाओं का सम्मान करना और उन पर ध्यान देना भी उसका कर्तव्य होता है। विधायी कार्यों में पारदर्शिता और खुलापन बनाए रखना तथा विपक्ष के साथ सहयोग करना और प्रदेश हित में निर्णय लेना सत्ता पक्ष का ही काम होता है। दोनों पक्षों को सदन की गरिमा बनाए रखनी चाहिए तथा व्यक्तिगत आक्षेपों और हमलों से बचना चाहिए। शांति और अनुशासन बनाए रखना चाहिए। प्रदेश हित में निर्णय लेने के लिए पक्ष और विपक्ष को मिलकर काम करना चाहिए।

विधानसभा सत्रों का बहिष्कार एक राजनीतिक रणनीति हो सकती है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप जनता के पैसे की बर्बादी होती है और विकास के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित नहीं किया जा सकता है। विधानसभा सत्रों का बहिष्कार करने से सदन की कार्यवाही प्रभावित होती है, जिससे जनता के पैसे की बर्बादी होती है। सत्र के बहिष्कार के कारण विकास संबंधी मुद्दों पर चर्चा और निर्णय लेने में बाधा आती है। जनता विधायकों से विकास के मुद्दों को लेकर उम्मीदें रखती है, जो बहिष्कार के कारण पूरी नहीं हो पाती हैं। विधानसभा सत्रों का बहिष्कार लोकतंत्र की गरिमा पर प्रभाव डालता है और जनता के विश्वास को कम कर सकता है। हालांकि, यदि विपक्ष के पास सरकार की नीतियों या कार्यक्रमों के खिलाफ गंभीर आपत्तियां हैं, तो उन्हें शांतिपूर्ण और निर्माणात्मक तरीके से अपनी बात रखनी चाहिए, न कि बहिष्कार करके। उम्मीद की जानी चाहिए कि यह मानसून सत्र सुचारु रूप से चलेगा और जनहित के फैसले इस सत्र में लिए जाएंगे। ■

आज के दिन की प्रमुख हस्ती

भारतीय पेशेवर पहलवान, कुश्ती प्रमोटर और अभिनेता

दलीप सिंह राणा एक भारतीय पेशेवर पहलवान, कुश्ती प्रमोटर और अभिनेता हैं। इनका जन्म 27 अगस्त 1972 को हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले के धिराइना में हुआ। इनके पिता ज्वाला राम और इनकी माता तांडी देवी हैं। इन्हें डब्ल्यूडब्ल्यूई में द ग्रेट खली के नाम से जाना जाता है। इन्होंने अपनी पेशेवर कुश्ती की शुरुआत 2000 ई. में की । खली पेशेवर कुश्ती करियर की शुरुआत करने से पहले पंजाब पुलिस के सहायक उप-निरीक्षक थे। खली ने चार हॉलीवुड फिल्मों, दो बॉलीवुड फिल्मों और कई टेलीविजन शो में भी काम किया है। खली का जन्म एक बेहद ही गरीब परिवार में हुआ। खली सात भाई-बहनों में से एक है। खली को अपने परिवार की मदद करने के लिए पत्थर तोड़ने जैसे काम करना पड़े। वह एक्रोमेगाली से पीड़ित हैं। एक्रोमेगाली एक ऐसी बीमारी है जिसके कारण शरीर में वृद्धि हार्मोन की संख्या बहुत अधिक हो जाता है, जिससे शरीर में हड्डियों का आकार भी बढ़ जाता है, इससे हाथों, पैरों और चेहरे की हड्डियों में सामान्य से भिन्न विकास होने लगता है। खली सुरक्षा गार्ड की नौकरी भी कर चुके हैं। जब खली हिमाचल प्रदेश के शिमला में एक सुरक्षा गार्ड के रूप में नौकरी कर रहे थे, तो उसी समय पंजाब के एक पुलिस अधिकारी की नजर खली पर पड़ी। तब उन्होंने खली को 1993 में पंजाब पुलिस में शामिल करवाया। खली अक्तूबर 2010 से जनवरी 2011 तक टेलीविजन रियलिटी शो बिग बॉस में भी दिखाई दिए, बिग बॉस में वे पहले रनर-अप के रूप में चुने गए। बिग बॉस ने केवल खली के लिए विशेष व्यवस्था की, जिसमें उन्हें फिट करने के लिए एक कस्टम-मेड बिस्तर भी शामिल था। ■

दलीप सिंह राणा

दिन अष्टमी है सुहाना

अनिल शर्मा नील, निचली भटेड़ बिलासपुर

हे कृष्णा ! आया है यह कैसा जमाना
ले अवतार धरा पे तुम्हें पड़ेगा आना।
बढ़ गया है अत्याचार, मची है चहूँओर हाहाकार
त्राहिमाम कर रहा है यहां सारा जमाना।
नित हो रहे बलात्कार, प्रशासन भी है लाचार
नारी की आबरू बचाने तुम्हें होगा आना।
आया है संकट भारी, अदृश्य है यह बीमारी
बेबस लाचार सृष्टि को पड़ेगा तुम्हें बचाना
बदल गया खान पान, बीमार हुआ इंसान
जिंदगी इंसान की अब तो है बचाना।
भटक गया इंसान राह, बढ़ गई चाह
भटके हुए इंसान को राह है दिखाना।
बिगड़ गया लिवास, हुआ है इंसान निराश
निराश इंसान को आस की ज्योति दिखा जाना।
काम क्रोध लोभ बढ़ गया है मद मोह
स्वार्थी इंसान को अब परोपकारी है बनाना।
जन्म ले होगा आना, अंधेरा भी है मिटाना
भाद्रपद कृष्ण पक्ष दिन अष्टमी है सुहाना।
देवकी नंद के कष्ट हरने जन्म लियो
जन्माष्टमी का त्योहार बड़े हर्ष से है मनाना।

पाठकों से अनुरोध है कि वे अपनी प्रतिक्रिया, सुझाव, आलेख कविताएं और अपनी बात कॉलम के लिए सामग्री *editoranantgyaan@gmail.com* पर या व्हाट्सऐप नंबर 8894521702 पर भेज सकते हैं।

विनाशकारी युद्धों के साये में मानव जीवन

लेखक : राकेश मनहास
वरिष्ठ प्रबंधक, केसीसी बैंक थुरल

यदि इतिहास के पन्नों का अवलोकन किया जाए, तो हम पाएंगे कि युद्ध प्राचीन काल से ही मानव संस्कृति का हिस्सा रहे हैं। चाहे महाभारत हो या राम रावण युद्ध, बिना लड़ाई के जीवन शायद संभव ही नहीं था। धर्म युद्ध सदैव धर्म और मानवता की सुरक्षा के लिए लड़े गए, लेकिन विश्व में अनेक ऐसे युद्द हुए या अभी भी जारी हैं, जो मानव जीवन और प्राकृतिक संसाधनों को मिटाने में लगे हैं। इन युद्दों से सैन्य और नैतिक विनाश हुआ और न्याय और धर्म का अंत हुआ। परिवारों, दोस्तों और भाई-भाई के रिश्तों के बीच विश्वासघात और विघ्न उत्पन्न हुए। इससे पर्यावरण में अत्यधिक हिंसा, रक्तपात और नाश का दृश्य सामने आया और इंसान के अंदर हिंसक भावना घर करती गई। दूसरों पर हावी होने की इच्छा हमारी प्रकृति का मूल है और इसलिए युद्ध हमारे जीवन का एक हिस्सा है। हालांकि, यह हमारे अपने हितों के लिए प्रतिकूल है,लेकिन हम मानवता को अलग नजरिए से देखें, तो हम पाते हैं कि युद्ध हमें नष्ट कर देता है। अपनी सारी तकनीकी प्रगति के साथ, हम धरती पर स्वर्ग बना सकते थे, लेकिन हम इसके विपरीत देखते हैं कि हम इसके बजाय अधिक से अधिक युद्धों और संघर्षों में उलझे रहते हैं।

सभी युद्धों का आधार मानवीय अहंकार है, जो हमें एक दूसरे के खिलाफ आंकता है, हमें निरंतर प्रतिस्पर्धा में डालता है। परिणामस्वरूप, हम उस दशा तक पहुंच जाते हैं जहां हम देखते हैं कि युद्ध का चलन तेजी से जीवन का अभिन्न अंग होता जा रहा है। सिकंदर पोरस का युद्ध, छोटी रियासतों के राजाओं का एक दूसरे पर आक्रमण करना, मुगलों और अंग्रेजों के खिलाफ युद्ध इत्यादि अनगिनत किस्से इतिहास पर लगे कलंक हैं। इसके अतिरिक्त प्रथम विश्व युद्ध यूरोप में होने वाला एक वैश्विक युद्ध था जो 28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 2018 तक लड़ा गया। इस युद्ध ने रूस, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोप के अधिकांश देशों को उलझा दिया था। युद्ध में केंद्रीय शक्तियों जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी और तुर्की का मुकाबला फ्रांस, इंग्लैंड, रूस, इटली, जापान और 1917 के बाद संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ हुआ। यह युद्ध मुख्यतः मित्र राष्ट्रों और केंद्रीय शक्तियों के बीच हुआ, जिसमें मित्र राष्ट्रों की विजय हुई। इस युद्ध के भयंकर परिणामों के बावजूद इंसान ने सबक नहीं लिया और 1939 से 1945 तक एक और नरसंहार करता विश्व युद्ध किया। इसे द्वितीय विश्व युद्ध के नाम से जाना जाता है।

यूरोप में ही द्वितीय विश्व युद्ध एक सितंबर, 1939 को शुरू हुआ, जब जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण किया। ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस ने 3 सितंबर को जर्मनी पर युद्ध की घोषणा करके जवाब दिया। यूएसएसआर और जर्मनी के बीच युद्ध 22 जून, 1941 को ऑपरेशन बारबारोसा के साथ शुरू हुआ। युद्द हमेशा मानसिक और भावनात्मक आघात पहुंचाता है। युद्ध वर्तमान और आने वाली पीढ़ी पर बुरा असर डालता है। किसी भी देश में होने वाले युद्ध प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से दुनिया पर तनाव का माहौल बनाते हैं। युद्धों से शहरों का बड़े पैमाने पर विनाश भी शामिल है और इसका देश की अर्थव्यवस्था पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है।

यदि आज विश्व की स्थिति पर ध्यान दिया जाए और वर्तमान में जिस तरह से कुछ देश अपना पूरा ध्यान, सैन्य शक्ति और सामग्री का दुरुपयोग कर रहे हैं वो आने वाली पीढ़ियों प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अहित कर रहे हैं। अब आज के दौर में चल रहे रूस और यूक्रेन के मध्य चल रहे युद्ध को ही देख लीजिए जो 2014 से शुरू हुआ था और आज तक चला हुआ है। 24 फरवरी 2022 को एक बार फिर रूस ने युद्ध के एक प्रमुख विस्तार में यूक्रेन के कुछ हिस्सों पर आक्रमण किया और कब्जा कर लिया। तब से लेकर आज तक दोनों देश एक दूसरे पर हमले पर हमला बोल रहे हैं और कई तरह के दावे कर रहे हैं। कभी यूक्रेन के कुछ हिस्सों पर रूस का कब्जा हो जाता है तो कभी यूक्रेनी सेना रूस के अंदर घुस जाती है। इस युद्ध की दिल दहला देने वाली तस्वीरें अक्सर समाचारों में देखने को मिल रही हैं। दोनों और से आधुनिक तरीके से बमबारी और मिसाइलों के प्रयोग भयंकर तवाही मचा रहा है। एक और जहां रूस और यूक्रेन में पहले से ही जंग चल रही है, तो वहीं इसरायल एक तरफ हमास से लड़ रहा है तो दूसरी तरफ अब ईरान सामने हैं। वहीं यमन में सऊदी अरब की ईरान से अलग लड़ाई है। इतिहास गवाह है कि हर युद्ध का अंत समझौते के साथ होता है तो क्यों फिर यह वजीर अपने अहंकार के लिए बेगुनाहों की जान ले रहे हैं। क्यों राष्ट्रीय संपदा का विनाश किया जा रहा है।

इस नुकसान का जिम्मेदार कौन होगा और देश को फिर से पुरानी स्थिति में आने के लिए कितना समय लगेगा। बहुत से सवाल हैं जिसका जवाब शायद किसी के पास न हो। इसलिए जरूरत है युद्धों के स्थान पर मानव जीवन के मूल्यों को समझना चाहिए और समस्त मानवता के हित में मिलजुल कर काम करना चाहिए। युद्धों से सिर्फ भय और असुरक्षा उत्पन्न होती है। युद्ध को रोकने के लिए राजनीतिक वैज्ञानिकों और अंतरराष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञों द्वारा सुझाई गई सामान्य रणनीतियों में हथियार नियंत्रण और कूटनीति शामिल हैं, जिनका कठोरता से पालन अनिवार्य होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ एक कूटनीतिक और राजनीतिक अंतरराष्ट्रीय संगठन है, जिसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना, राष्ट्रों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करना, अंतरराष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना और सदस्य राष्ट्रों के कार्यों के समन्वय के लिए एक केंद्र के रूप में सेवा करना है।

जरूरत है कि संयुक्त राष्ट्र संघ अपनी भूमिका का सही निर्वहन करे, ताकि जान और माल की सुरक्षा सुनिश्चित हो। आजकल जिस तरह के हालात हैं, युद्ध बहुत आसान है। किसी और के बच्चों को लड़ने और मरने के लिए भेजना बहुत आसान है। दुश्मन को अमानवीय बनाना बहुत आसान है। अब जरूरत है अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की स्थापना को पूर्ण समर्थन देने की ताकि किसी भी युद्ध के अंत में राष्ट्रीय नेताओं पर सभी गंभीर युद्ध अपराधों के लिए मुकदमा चलाया जा सके। गंभीर अपराध करने वाले सभी नेताओं को अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए। किसी भी निर्वाचित नेता पर महाभियोग चलाएं जो अवैध, निवारक युद्ध को बढ़ावा देते हैं, ताकि तमाम युद्धों के स्थान पर विश्व में शांति स्थापित हो और मानव मूल्य उच्च स्तर पर विराजमान हो।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

नजरिया

'बलात्कार और हत्या' विकृत समाज की निशानी

लेखक : मनीष वर्मा 'मनु'
स्वतंत्र टिप्पणीकार

सन 1978 में एक घटना हुई थी, जिसमें नौसेना के एक अधिकारी के बेटे की हत्या कर दी गई थी और उनकी बेटी को बलात्कार करने के पश्चात मार दिया गया था। उस वक्त पूरा देश इस घटना से मर्माहत और आक्रोशित था। इस घटना में रंगा और बिल्ला नाम के अपराधियों को फांसी की सजा सुनाई गई थी। निर्भया कांड के बाद भी पूरे देश में एक अजीब सा आक्रोश दिखा था। निर्भया मामले में पूरे देश में एक आवाज उठी थी कि इस जघन्यतम मामले में दोषियों को बख्शा नहीं जाए और उन्हें ऐसी सजा दी जाए जो नजीर बने, पर अफसोस क्या ऐसा हो पाया ? नहीं न! उसके बाद भी बलात्कार की घटनाएं होती रहीं।

आज कोलकाता में जो घटना हुई है क्या आप कह सकते हैं कि ऐसी घटना दोबारा नहीं होगी ? नहीं कह सकते हैं। हम सिर्फ और सिर्फ कहने के लिए बराबरी की बातें करते हैं। वास्तविकता कुछ और ही है। हमने महिलाओं को कमजोर समझ रखा है। जब चाहा उनके साथ जबरदस्ती कर ली। आज भले ही पूरे देश में कोलकाता कांड के खिलाफ एक जन आक्रोष है और घटना घटित होने के दो चार दिनों के भीतर ही इस कांड में शामिल अपराधियों की खोज और उन्हें उचित सजा दिलाने की जिम्मेदारी सीबीआई को दे दी गई है। पर इस घटना के बाद भी इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। उत्तर बिहार के एक जिले में एक घटना घटती है।

जहां एक लड़की को अपराधियों ने उसके घर से उसके मां बाप के सामने से घसीट कर ले जाते हैं और बलात्कार करने के पश्चात क्रूरता पूर्ण तरीके से उसकी हत्या कर दी जाती है। बलात्कार करने के बाद हत्या कर देने के मामले बढ़ गए हैं। शायद यह ट्रेंड निर्भया मामले के बाद कड़े कानून बनाने के पश्चात हुआ है। जब सबूत ही नहीं रहेगा, तो अधिकांश मामलों में तो लोग बच ही जाएंगे! जाति, धर्म और समाज से परे देश व्यापी आंदोलन चल रहा है। आशा करते हैं कि इससे समाज में जागरूकता बढ़ेगी, परंतु उम्मीद कम है। कोलकाता का ही मामला लें। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट जो सोशल मीडिया पर आ रही हैं उसे देखकर और सुनकर क्या आपको ऐसा लगता है कि इस घटना को अंजाम किसी एक व्यक्ति ने दिया है ? पकड़े गए व्यक्ति ने शुरुआत में कहा कि मैं दोषी हूं, मैंने गलत किया है, मुझे फांसी पर चढ़ा दो। अब जो बातें आ रही हैं मुझे फंसाया गया है। ऐसा वो कह रहा है। आखिर किसे बचाने की कोशिश हो रही है ? आखिर क्यों लोगों की भीड़ अस्पताल में हमला कर तोड़ फोड़ मचा रही है ? आखिर क्यों सुप्रीम कोर्ट को इस मामले में स्वतः संज्ञान लेना पड़ा ? क्यों बड़े-बड़े वकीलों की फौज सरकार की तरफ से लगाई गई ? बहुत सारे सवाल हैं जिनका जवाब दिया जाना है।

एक महिला की बलात्कार के बाद क्रूरता पूर्ण तरीके से हत्या कर दी जाती है। मामला सिर्फ शायद यह नहीं है पर कुछ और भी बातें हैं। इस रहस्य से भी पर्दा उठना है। हमारे लिए तो अस्पताल एक मंदिर है और उस मंदिर में इस तरह की घटना घट जाए, भरोसे पर चोट है। खैर! अपने आप को उस घटना से थोड़ा जोड़ कर देखें तब शायद आप पीड़िता के दर्द और उसके परिवार की व्यथा को समझ पाएंगे।

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

पहाड़ी कविता

कान्हा सबका

डॉ. कौमार्या मनोज

आ गयो अपना कृष्ण कन्हैया ,
आ गयो अपना माखन चोर ।
लल्ला लल्ला कहते कहते ,
मां यशोदा खूब मचावे शोर।।
वो है कि अपनी लीला मस्त है,
हर रोज दिखावे चमत्कार ।
माता यशोदा लोरी सुनाती,
नंद लुटाते अपना प्यार ।।
गोरी छुप-छुप लीला देखे ,
कान्हा दिखाए निश्चल प्यार।
विघ्न मिटाता कान्हा सबका,
जैसे सबका वो है संसार ।।
मुझे ज़िद दर्शन की तेरी ,
कष्टों को मेरे निवार करो।
तुझे चढ़ाऊं लड्डू पेड़े ,
कुछ मेरा भी उद्धार करो।।
कल मेरे घर आना कान्हा ,
माखन खूब बना रखूंगा ।
आंखें तरस रहीं देखन को ,
थोड़ी झलक दिखा के जाना।।

अम्मा बोलो न, क्यों हो रहा आजकल नैतिक मूल्यों का पतन ?

लेखिका : डॉ. अंकिता चौधरी
सुंदरनगर, हिप्र

इस बदलते परिवेश में मूल्य तो जैसे हाथों से रेत की तरह फिसलते जा रहे हैं। आओ हम सब इस गंभीर विषय को एक खूबसूरत कहानी के द्वारा समझने का प्रयास करते हैं। एक मां अपने सात बच्चों की परवरिश में कोई कमी नहीं छोड़ती। उनके खाने-पीने से लेकर हर छोटी से छोटी जरूरत का बखूबी ध्यान रखती है और बड़ी मेहनत मशक्कत कर उन्हें पढ़ा लिखा कर निश्चित समय आने पर उनका विवाह कर अपनी जिम्मेदारियों से फारिग हो जाती है अपने परिवार के साथ बच्चों को हंसी खुशी जीवन बिताता देख चैन की सांस लेती है और उनके सुख में ही अपनी खुशी को तलाश कर अपना जीवन गुजारती है। समय बीतता गया बच्चों के बच्चे भी बड़े हो गए और सब उन्हें प्यार से 'अम्मा' कहकर बुलाने लगे।

वक्त हाथों से रेत की तरह फिसलता गया और अम्मा अपने जीवन के कई उतार-चढ़ाव से गुजरने लगी देखते ही देखते अम्मा के बेटे बहू एवम दामाद और अंत में पति भी इस संसार से अलविदा हो गए और यह सब मंजर अम्मा चुपचाप अपनी आंखों से देखती रही एक भी आंसू न टपकाया अम्मा ने आंखों से। मजबूत दीवार सी अम्मा अपने बच्चों के बच्चों को जिनके माता-पिता अब इस दुनिया में न रहे थे पाल पोसकर बड़ा करने लगी धीरे-धीरे वक्त गुजरा और बच्चे बड़े होकर नौकरी करने बाहर चले गए। अम्मा की बात करे तो अब अम्मा भी पहले की तरह न रही उनका शरीर भी अब उनका साथ न देता। अम्मा बच्चों की याद को फोन पर पूछती कि मुझे मिलने कब आओगे, तो बच्चे कहते कि अम्मा जल्द आएंगे, बोलकर टाल देते।

बेटा बहू नौकरीपेशा होने के कारण उन्हें समय न दे पाते, अम्मा धीरे-धीरे अकेलेपन से घिर गई। वक्त गुजरता गया और अम्मा अपनी उम्र के आखिरी पड़ाव पर पहुंच गईं, अब अम्मा का शरीर भी अम्मा का साथ छोड़ने लगा, एक दिन अम्मा भरी दुपहरी में छत्त पर झाड़ू लगाने गई और वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी, जब डॉक्टर को दिखाया तो पता चला कि अम्मा का एक तरफ का अंग फालिस मार गया है, फिर क्या था परिवार के सभी सदस्यों को मानों सांप सूंघ गया हो। बड़ा सवाल यह था कि अम्मा की देखभाल कौन करेगा ? इस पर छोटी बहू बोली कि मैं नौकरी के साथ अम्मा को नहीं संभाल सकती। इस पर बड़ी बहू ने तपाक से जवाब दिया कि हम खुद बीमार रहते हैं, तो हमारे बस से बाहर है। बहू तो पराए घर से आई थी, पर बेटे तो अपने थे। हाय किसी को भी अम्मा पर दया न आई। कुल मिलाकर अम्मा सबके लिए गंभीर समस्या बन गई।

सब दुआ करते कि अम्मा को जल्द मुक्ति मिले और हम भी चैन की सांस लें। जब बेटा-बहू काम पर जाते तो वह अम्मा को नींद की गोली खिला देते ,ताकि अम्मा दर्द से चीख चिल्लाकर मोहल्ले को इकट्ठा न कर दे, यह वही अम्मा थी, जिसने अपने सात बच्चों को बिना शिकन के पाल पोसकर, इस लायक बना दिया कि वो अपना जीवन हंसी खुशी बीता सके और आज उसी अम्मा के लिए किसी के पास वक्त नहीं था। सुबह का समय था अम्मा को चाय बिस्कुट खिला सब अपने अपने काम पर निकल गए, अम्मा एक कोने में सामान की तरह पड़ी अपने अंतिम दिन गिन रही थी। जैसे-जैसे नाते रिश्तेदारों को पता चलता सब अम्मा का हाल पूछने पहुंच जाते। अम्मा का रुतबा पूरे गांव में था, उनके जैसी भली औरत ढूंड पाना आसान न था। मिलने जुलने वालों का सिलसिला लगातार जारी था, यह समाज औपचारिकता निभाने में माहिर है, देखने तो सब आते पर सेवा करने कोई नहीं। होश में आने पर अम्मा दर्द से कराहने लगती। उनके बच्चे उनकी चीख पुकार सुनकर उन्हें गाल पर चांटा जमा देते। इससे वो सहम कर चुप हो जाती। अम्मा मन ही मन प्रार्थना करती कि हे प्रभु मुझे मुक्ति दे, इस जीवन से।

मैं और अपने बच्चों को कष्ट नहीं देना चाहती। अम्मा जब ठीक थी तब भी उनकी स्थिति कुछ खास ठीक न थी, गर्मियों के महीनों में अम्मा बिना बिजली के एक कमरे में पड़ी रहती, जबकि घर के दूसरे हिस्से में बेटा बहू और उनके बच्चे कूलर की ठंडी ठंडी हवा खाते रहते और अम्मा पर जरा तरस न आता। वह अंधेरा होने पर टॉर्च की रोशनी से अपना काम चलाती और पसीने से तर-बतर बिस्तर पर सुबह होने का इंतजार करती। अम्मा इस उम्मीद में रहती कि जिन बच्चों के बच्चों को उसने पाल पोसकर बड़ा किया, वह आएंगे और उसका ख्याल रखेंगे। इसी उम्मीद में अम्मा उनके हिस्से वाले घर में झाड़ू लगाकर साफ सफाई कर देती और सोचती, जब आएंगे तो घर साफ न हुआ तो बच्चों को कैसा महसूस होगा। बस यही सोच अम्मा एक दिन भर दुपहरी में अम्मा छत्त पर झाड़ू लगाने लगी और फिर क्या था लू की चपेट में आते ही वह बेहोश हो गई और जब होश आया तो डॉक्टर बोले कि इनका दायां अंग फालिस मार गया है फिर क्या था ऐसा सुनते ही सबको लकवा मार गया।

अब समस्या यह थी, कि अम्मा की देखभाल का जिम्मा कौन उठाएगा ? अम्मा को गांव वाले घर में रखना तय हुआ, जहां वो पहले से ही रहती थी। दिन जैसे तैसे गुजर रहे थे सब इसी इंतजार में थे कि कब अम्मा जाए और वो सब चैन की सांस लें। सब अपने अपने कामों में व्यस्त रहते और अम्मा दवाई खाकर एक कोने में सामान की तरह पड़ी रहती। अम्मा जिनके सिर से पल्लू न सरका आज उनके बाल कटाकर खटिया पर लिटा दिया गया। पर आज अम्मा शांत थी। सिर्फ सांसों की मध्यम आवाज साफ कानों में पड़ रही थी। अचानक वातावरण में असीम शांति छा गई थी। अम्मा की आंखें आसमान की ओर टकटकी लगाए रह गईं और इसी के साथ उन्होंने इस संसार को अलविदा कह दिया अम्मा के अंतिम सफर की तैयारी में कोई कमी न रहे इसके लिए सारे इंतजाम बखूबी किए गए थे। चंदन की लकड़ी से लेकर गुलाब मोगरा सब अर्थी पर सज गए(

(ये लेखिका के निजी विचार हैं)

प्रिय पाठकों

प्रदेशभर से आपके पत्र हमें हर सप्ताह मिल रहे हैं। बहुत सारे पाठकों ने 'अनंत ज्ञान' समाचार पत्र की भूरि-भूरि प्रशंशा की, जिसके लिए हम आपके तहेदिल से धन्यवादी हैं। यह आपका ही प्रेम है जो हमें नित नई ऊंचाइयों पर ले जा रहा है। कई पाठकों ने हमें जंगली जानवारों, ट्रैफिक जाम, नशाखोरी, अवैध खनन, वन और खनन माफिया, बंदरों द्वारा किसानों की फसलों को चट करना, बसों की समस्या, गंदगी और शौचालय तथा आपदा से हुए नुकसान जैसे मुद्दे अखबार के माध्यम से उठाने के अपने बहुमूल्य सुझाव दिए हैं। इन सुझावों पर 'अनंत ज्ञान' ने अमल करना शुरू कर दिया है। निश्चित रूप से आपकी हर समस्या का समाधान करवाया जाएगा। आपकी बात शासन-प्रशासन के पास पहुंचाई जाएगी। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में मीडिया समाज के प्रति हमेशा अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाता आया है। मीडिया आज भी तथ्यात्मक और निष्पक्ष रिपोर्टिंग में विश्वास रखता है, ताकि जनता को सही जानकारी मिले। मीडिया को लोगों की समस्याओं और मुद्दों को उठाना चाहिए। हम भी इसी ध्येय के साथ आगे बढ़ रहे हैं। सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की आलोचना करना और उन्हें जवाबदेह ठहराना मीडिया का ही काम होता है। मीडिया अपने खबरों के माध्यम से लोगों को शिक्षित और जागरूक करता रहता है ताकि वे अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों के बारे में जान सकें। 'अनंत ज्ञान' निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से अपनी पत्रकारिता को अंजाम दे रहा है। हमारे पत्रकार लोगों की समस्याएं उठाने में सक्षम हैं। वे हमेशा तथ्यात्मक रिपोर्टिंग को तवज्जो देते हैं। हम आम लोगों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हैं। आपका प्यार और विश्वास 'अनंत ज्ञान' के ऊपर इसी तरह से बना रहे इन्हीं कामनाओं के साथ आपसे अखबार के माध्यम से जल्द ही रू-ब-रू होंगे।
धन्यवाद। **संपादक**

पाठकों के पत्र...

मैं जिला ऊना के वार्ड नंबर एक में रहता हूं। मेरा स्थायी घर कोसरियां ग्राम पंचायत में है। महोदय हमारे स्थायी निवास गांव में जंगली जानवरों की समस्या प्रमुख है। यहां साथ लगता जंगली क्षेत्र है। बंदरों की समस्या से सब परेशान हैं। यहां अधिकांश लोग कृषि व्यवसाय से भी जुड़े हैं और किसानों की समस्याएं भी अधिक हैं। इन सभी समस्याओं को दूर करने के लिए अनंत ज्ञान समाचार पत्र के माध्यम से भी प्रयास किया गया है। इस पत्र में कृषि संबंधी जानकारी के कई समाचार भी प्रकाशित हुए हैं। गांव में अखबार का डिजिटल संस्करण भी पढ़ता हूं। डिजिटल संस्करण काफी रोचक लगा है। अखबार की प्रति लेने के लिए ऊना जिला मुख्यालय भी जाना पड़ता है। अनंत ज्ञान समाचार पत्र क्षेत्र के कई आसपास के गांवों में हॉकर्स के पास उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। आपसे आग्रह है कि अगर कोई व्यवस्था हो पाए तो कोडरा, बछरेटू से शाहतलाई आदि रूट पर समाचार पत्र पहुंचने की व्यवस्था की जाए। इसके अलावा समाचार पत्र में रोजगार संबंधी समाचार और जानकारी होनी चाहिए।

आर्यन, ऊना

मैं जिला ऊना के दौलतपुर चौक नगर पंचायत का स्थायी निवासी हूं। महोदय हमारे क्षेत्र में जाम की समस्या प्रमुख है। यहां बाजार में वाहनों के आने जाने के लिए पर्याप्त चौड़ा रास्ता नहीं है। अक्सर लोग जाम में फंस जाते हैं। यहां लोग कृषि व्यवसाय से भी जुड़े हैं और किसानों की समस्याएं भी हैं। इन समस्याओं को दूर करने के लिए अनंत ज्ञान समाचार पत्र के माध्यम से प्रयास किया गया है। हमारी जानकारी पर कुछ समाचार प्रकाशित होते रहे हैं। प्रिंट के साथ अब तक आपका डिजिटल संस्करण भी पढ़ता हूं। अखबार की प्रति नियमित मिल रही है। अभी ब्रांडिंग की जरूरत है, इसमें हिमाचल की खबरें और रोचक तथ्य होते हैं। अनंत ज्ञान समाचार पत्र क्षेत्र के कई आसपास के गांवों में उपलब्ध नहीं हो पा रहा है। आपसे आग्रह है कि अगर कोई व्यवस्था हो पाए तो भद्रकाली, कुनेरन और घनारी आदि क्षेत्र में समाचार पत्र पहुंचने की व्यवस्था की जाए। इसके अलावा समाचार पत्र में रोजगार संबंधी समाचार और जानकारी होनी चाहिए।

सन्नी शर्मा, दौलतपुर चौक, ऊना

मैंने सोचा था कि इतने बड़े-बड़े समाचार पत्रों में नया समाचार पत्र कहां तक चल पाएगा, लेकिन अनंत ज्ञान ने शुरुआत में ही बहुत से लोगों के दिलों में जगह बना ली। मेरा यह मानना है कि अनुभवी स्टाफ के बिना यह संभव नहीं हो पाता। मैं रोजाना अनंत ज्ञान ई पेपर पढ़ती हूं और मुझे एक ही ई पेपर में पूरे हिमाचल की खबरें मिलती है और खबरों को भी काफी विस्तार और सही तरीके से लिखा गया होता है। मैं मंडी में कॉरपोरेट सेक्टर में जॉब करती हूं और अनंत ज्ञान आज के समय में हर पाठक की पसंद और चर्चा में रहने वाला अखबार बन गया है, लेकिन ऐप में ई पेपर बहुत ही देरी से अपडेट होता है जिसके लिए मेरी आपसे गुजारिश है कि यदि इसे समय से अपडेट कर दिया जाए तो पूरा पेपर समय से पढ़ा जा सकता है। देरी से अपडेट होने के कारण आधा पेपर पढ़ने को रह जाता है।

प्रियंका गर्ग

पाठक अपने पत्र और सुझाव यहां भेज सकते हैं
Email : editoranantgyaan@gmail.com
***Whatsapp no. :* 88945-21702**

अनंत ज्ञान
प्रकाशक एवं मुद्रक डॉ. दिलीप धाकड़ द्वारा फोकस हिमाचल मीडिया प्रा. लि. के लिए बायोसर्ट इंटरनेशनल प्रा. लि. प्लॉट नंबर 8, फेज-2 इंडस्ट्रियल एरिया, नगरोटा बगवां, जिला कांगड़ा (हि.प्र.), पिन नंबर-176047 से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक समरजीत, समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन के लिए पीआरबी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
आरएनआई संदर्भ संख्या-HPHIN01099
ई-मेल : anantgyaanmedia@gmail.com
फोन नंबर : 01892-299098

न्यूज ब्रीफ

जन्माष्टमी पर पकवाना के लोक नर्तक दल का धमाल

अनंत ज्ञान, बालीचौकी। जन्माष्टमी के अवसर पर मंडी सराज लोक नर्तक दल पकवाना के कलाकारों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुति पेश की। मंडी सराज लोक नर्तक दल पकवाना बालीचौकी के अध्यक्ष खोर सिंह ठाकुर ने बताया कि दल के सदस्यों ने पारंपरिक वाद्य यंत्रों के साथ पारंपरिक परिधानों में नाटी की प्रस्तुति दी। लोक नर्तक दल ले प्रमुख खोर सिंह ने बताया कि प्रति वर्ष उनका सांस्कृतिक दल जन्माष्टमी को सराज घाटी के पारम्परिक परिधानों टोपी, चोला व कलगी पहन कर संस्कृति को जीवंत रखने का प्रयास करते हैं। खोर सिंह ने कहा कि उक्त कार्यक्रम का आयोजन भाषा एवं संस्कृति विभाग जिला मंडी के तत्वावधान में किया जाता है।

जन्माष्टमी पर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर। जोगिंद्रनगर जन्माष्टमी उपलक्ष्य पर श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ के सातवें दिन कथा व्यास पीठाधीश्वर ने विभिन्न प्रसंगों पर प्रवचन दिए। कथा व्यास प्रभु दयाल शास्त्री ने कृष्ण के अलग-अलग लीलाओं का वर्णन किया गया। सनातन धर्म सभा मंदिर के अध्यक्ष जुगल किशोर गुप्ता ने बताया कि जन्माष्टमी पर आकर्षक झांकियां भी निकाली गई।

जन्माष्टमी पर बच्चों ने पेश की मनमोहक झांकी

अनंत ज्ञान, सरकाघाट/मंडी। एसपीएस इंटरनेशनल स्कूल तताहर और एसपीएस इंटरनेशनल स्कूल चंदेश में जन्माष्टमी का पावन पर्व मनाया गया। दोनों स्कूलों में बच्चों ने भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़ी विभिन्न लीलाओं का मनमोहक अभिनय और सुंदर झांकियां प्रस्तुत कीं, जिनसे दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। इस अवसर पर स्कूल के महाप्रबंधक सुरेंद्र कुमार, प्रधानाचार्य नरेंद्र, अधीक्षक नेक राम, निदेशक प्रेम चंद ठाकुर और समाजसेवी प्रकाश चंद ने बच्चों की प्रस्तुतियों की प्रशंसा की।

ब्रह्माकुमारीज ने सुंदरनगर में मनाई जन्माष्टमी

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। ब्रह्माकुमारीज शाखा सुंदरनगर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर कुमारी आराध्या और आरव द्वारा शानदार नृत्य प्रस्तुति दी गई।

कुमारी साक्षी और साध्वी ने भी अपने कृष्ण प्रति प्रेम प्रकट करने के लिए सुंदर नृत्य प्रस्तुत किया।कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी दया ने जन्माष्टमी का आध्यात्मिक अर्थ समझाया गया।

स्कूटी चोरी पर पुलिस ने 4 दिन तक नहीं की छानबीन

अनंत ज्ञान, पंडोह। साहब जी मै बहुत गरीब हूं, अनपढ़ हूं, मुझे लिखना नहीं आता है। आप ही लिख दो ना.. मैं क्या करूं.. मेरी स्कूटी चोरी हो गई है। आप मेरी स्कूटी मुझे दिला दो.. कौन चोरी कर गया.. पुलिस चोर को पकड़ ही लेती है। मेरी स्कूटी चोरने वाले को भी पकड़ लो। मैंने काम पर जाना है.. कल भी नहीं गया था। यह कहानी नहीं एक निर्धन अनपढ़ मजदूर की पंडोह पुलिस चौकी में लगाई दुःख भरी सच्ची गुहार है। मगर तब भी पंडोह पुलिस को इस पर दया नहीं आई। उसको क्या पता कि एफआईआर क्या होती है, मिसिंग क्या होता है और कैसे लिखा जाता है। वो इस इंतजार में है कि पुलिस उसकी स्कूटी ढूंढ निकालेगी। यह मामला पंडोह क्षेत्र की ग्राम पंचायत तांढ़ी के गांव जागर के देवी राम का है। जो मजदूरी करता है। आने जाने के लिए स्कूटी का प्रयोग करता है। 22 अगस्त 2024 को कोई स्कूटी पर हाथ साफ कर गया है। स्कूटी नम्बर एच पी-32 बी 6669 है जिसे ये दो दिनों तक अपने स्तर पर तलाश करते रहे मगर कहीं पता नहीं चला। इस संबंध में चौकी प्रभारी पंडोह राजेंद्र कुमार ने बताया कि आवेदन आया है। मैं अभी व्यस्त हूं। मिसिंग डाल दी गई है।

घटोत्कच आशु की जगीश डावणू संपन्न

अनंत ज्ञान, मंडी। घटोत्कच आशु देवता कमेटी ढावणू ने डावणू मेला का आयोजन भाषा एवं संस्कृति विभाग मंडी के सहयोग से किया गया। बता दें कि इस बार घटोत्कच आशु देवता डावणू की जगीश डावणू जाच चार दिन में संपन्न हुई। इस मौके पर क्षेत्र के अन्य देवी देवताओं ने भी शिरकत की।

लुहाखर पंचायत प्रधान पर जानलेवा हमला

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। नशे के खिलाफ आवाज उठाने वाले बल्ह क्षेत्र की ग्राम पंचायत लुहाखर के प्रधान टेक चंद पर जानलेवा हमले का मामला आया है। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ मामला दर्ज कर आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रधान ने पुलिस को दी शिकायत में क्षेत्र के तीन व्यक्तियों जिसमें एक पूर्व सैनिक भी है के खिलाफ आरोप लगाते हुए कहा क गत रविवार रात 8 बजे के करीब वह अपनी कार के माध्यम से अपने घर जा रहा था । इस दौरान तीन लोगों ने हमलावर होकर गाली गलौज और मारने की धमकियों के साथ मारपीट करने लग गए। इस संबंध में रिवालसर पुलिस चौकी पहुंच कर अपना विरोध दर्ज करवाते हुए आरोपियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की मांग की है। मामले की पुष्टि डीएसपी हेडक्वार्टर मंडी देवराज ने की है।

छोटी काशी में जय कन्हैया लाल...

पुष्पराज, मंडी

श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर जहां देश भर में भव्य त्योहार का आयोजन किया जाता है, वहीं छोटी काशी मंडी में भी हर वर्ष इस उपलक्ष्य पर शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है।

छोटी काशी में कोई भी त्योहार हो उसे बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है। सोमवार को सनातन धर्म सभा मंडी से इस शोभायात्रा का आगाज हुआ। हर वर्ष की तरह श्री कृष्ण जी की पालकी सनातन धर्म सभा से इस यात्रा का आगाज होता है जिससे पुरी छोटी काशी देव धुन से गुंजायमान हो जाती है।

शोभायात्रा को देखने के लिए लोग अपने घर की छतों और बरामदे में निकल पड़े और कुछ प्रभु के चरणों में अपनी हाजिरी लगाने के लिए शोभा यात्रा का हिस्सा बन गए। शोभा यात्रा ने पुरे शहर की परिक्रमा की और भक्तों ने राधे कृष्णा और राधे राधे नाम जपते हुए प्रभु चरणों में हाजिरी लगाई चौहाटा बाजार में शोभायात्रा पहुंचते ही भक्तों का जनसैलाब सा उमड़ उठा और भक्तों ने प्रभु के भजनों पर खूब आनंदित होकर झूमते हुए शोभायात्रा में अपनी हाजिरी लगाई। छोटी काशी की यह विशेषता है कि यदि यहां पर कोई भी धार्मिक आयोजन शोभा यात्रा का आयोजन हो तो मंडी वासी उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। वहीं शोभा यात्रा में बच्चों ने भी हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की नारे लगाते हुए श्री कृष्ण जन्माष्टमी के इस पावन त्योहार पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। शोभा यात्रा में राधा कृष्ण और लड्डू गोपाल की झांकियां भी निकाली गई और लोगों ने इन झांकियों को निहारते हुए जय कारा लगाया। सनातन धर्म सभा के अध्यक्ष रवि वैद्या ने जानकारी देते हुए बताया कि भक्तों के निमंत्रण पर इस बार महाकाली चामुंडा स्कूल बाजार और महाकाली मां पुरानी मंडी ने भी इस शोभा यात्रा में भक्तों को दर्शन दिए। उन्होंने बताया कि इस शोभा यात्रा में जिस प्रकार से लोगों का जनसैलाब उमड़ा उन्होंने यह प्रमाण दे दिया की सनातन कितना मजबूत है। साथ ही उन्होंने मंडी वासियों के सहयोग के लिए सबका आभार प्रकट किया।(अनंत ज्ञान)

शोभायात्रा में राधा कृष्ण और लड्डू गोपाल की झांकी।

ओशीन शर्मा व नित्य शर्मा।

मिधाश कपूर और माइसा कपूर

कृष्ण के रूप में कियान कपूर ।

यशवी।

महाकाली चामुंडा और मां पुरानी मंडी शोभायात्रा में शिरकत करते हुए।

गाड़ी घर पर पार्क और गड़ामोड़ टोल प्लाजा पर दो बार कटा टोल

उमेश भारद्वाज, सुंदरनगर

किरतपुर-मनाली फोरलेन पर सुंदरनगर के एक कारोबारी के साथ वाहन रजिस्ट्रेशन नंबर को लेकर हैरान कर देने वाला फर्जीबाड़ा सामने आया है। मामले में एक ही नंबर एचपी-31बी-1899 की दो गाड़ियां सड़क पर फर्राटा भर रही हैं। एक ही नंबर से दो वाहनों को लेकर कारोबारी ने अब पुलिस महानिदेशक शिमला को एक शिकायत भी प्रेषित कर दी है।

जानकारी देते हुए शिकायतकर्ता रमन सैनी पुत्र सेठी राम सैनी निवासी लेक व्यू होटल नजदीक कंट्रोल गेट, तहसील सुंदरनगर जिला मंडी का कहना है कि उनके पिता के नाम पर महिंद्रा एक्सयूवी नंबर एचपी-31बी-1899 का संचालन किया जाता है। इस गाड़ी पर टोल टैक्स के लिए फास्ट टैग उनके फोन नंबर के माध्यम से कंपनी के पास रजिस्टर्ड हैं। टोल टैक्स कटने का हर मैसेज उनके फोन नंबर पर प्राप्त होता है। बीते रविवार को सुबह उन्हें एक मैसेज प्राप्त हुआ कि उनकी गाड़ी का किरतपुर-मनाली फोरलेन पर स्थित गड़ामोड़ टोल प्लाजा पर 155 रुपए बतौर उनके बैंक खाते से बतौर टोल टैक्स काट लिए गए हैं। जबकि उनकी गाड़ी उस समय घर पर ही पार्क की हुई थी। इसके उपरांत

घर पर मौजूद पीड़ित की गाड़ी ।

उसी दिन रात के समय उन्हें एक बार फिर गाड़ी घर पर ही मौजूद होने के बावजूद गड़ामोड टोल प्लाजा पर 85 रुपए टोल टैक्स के रूप में काट लिए।

इस दौरान जब उन्होंने किरतपुर-मनाली फोरलेन पर स्थित गड़ामोड़ टोल प्लाजा पर मौजूद टोल टैक्स की आईटी टीम से घटना को लेकर संपर्क किया तो उनके होश उड़ गए। सीसीटीवी फुटेज में उनकी गाड़ी के रजिस्ट्रेशन नंबर एचपी-31बी-1899 की ही तरह एक ऑल्टो कार उसी दिन सुबह 9:36 पर गड़ामोड़ टोल प्लाजा से गुजरते हुए टोल टैक्स 155 रुपए काटे गए, लेकिन ऑल्टो कार के आगे का नंबर एचपी-31बी-1899 और पीछे एचपी31बी 1999 नंबर प्लेट पर लिखा था। शिकायतकर्ता का कहना है कि उनकी गाड़ी के रजिस्ट्रेशन नंबर की तरह एक अन्य गाड़ी सड़कों पर घूम रही है।

श्री कृष्ण की शिक्षा को जीवन में उतारना चाहिए

कविता, पधर

जन्माष्टमी पर विश्व हिंदू परिषद जिला जोगिंद्रनगर द्वारा पधर मुख्यालय में भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया।

यह शोभायात्रा शिव मंदिर से शुरू होकर नारला गुप्त गंगा से वापस स्मुदायिक भवन पधर में समाप्त हुई। जानकारी देते हुए उन्होंने कहा कि श्री कृष्ण जन्मोत्सव का हमारी सनातन संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान है। इस पवित्र परंपरा के अनुरूप देशभर में जन्माष्टमी का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। श्री कृष्ण ने गीता के माध्यम से जो महत्वपूर्ण शिक्षा दी है उसे हम सबको अपने जीवन में उतारना चाहिए। इस दौरान विश्व हिंदू परिषद के स्थापना दिवस पर सामुदायिक भवन पधर में कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। साथ ही सत्संग व जन जागरण अभियान के माध्यम से समाज के सभी लोगों को जोड़ने के लिए जागरूक किया। हिंदू समाज को एकजुट करना, मजबूत करना, हिंदू धर्म की सेवा और सुरक्षा करने के साथ साथ गौ हत्या और धर्मांतरण जैसे मामलों को रोकना है। इस अवसर पर प्रखंड अध्यक्ष डॉक्टर सुदर्शन अवस्थी, धर्म प्रसार प्रमुख नरेंद्र शर्मा आदि मौजूद थे।

जन्माष्टमी पर शहर भर में निकाली शोभायात्रा

अनंत ज्ञान, करसोग। पुराना बाजार करसोग बाजार स्थित नरसिंह मंदिर में जन्माष्टमी की तैयारियां शुरू हो गई है। सोमवार को करसोग शहर में शोभायात्रा निकाली गई।

मंदिर कमेटी के प्रधान जितेंद्र शर्मा ने बताया कि शोभायात्रा के दौरान कई झांकियां भी निकाली गई। इसमें राधा कृष्ण की झांकी निकाली गई।

चरस उपलब्ध करवाने वाला आरोपी कुल्लू से काबू

अनंत ज्ञान, सरकाघाट

सरकाघाट पुलिस द्वारा नशे को जड़ से खत्म करने को लेकर चलाए जा रहे अभियान को एक बार फिर बहुत बड़ी सफलता हाथ लगी है।

पुलिस ने तीन दिन पहले नाका लगाकर 2 किलो 43 ग्राम चरस सहित दो युवाओं को गिरफ्तार किया था। गहन पूछताछ के बाद उन्होंने तीसरे आरोपी का नाम बताने के बाद उसे भी हिरासत में ले लिया था। इसी गहन पूछताछ के दौरान पुलिस यह जानने में जुटी थी कि इतनी भारी भरकम चरस आखिरकार लाई कहां से गई थी और कैसे लाई गई थी रिमांड के दौरान तीनों पकड़े गए आरोपी युवाओं ने इसका राज उगला।

आरोपी के साथ पुलिस टीम।

पुलिस ने एसएचओ रजनीश ठाकुर की अगुवाई में टीम गठित करके नशा उपलब्ध करवाने वाले मुख्य सरगना को उसके घर पहुंच कर दबोच लिया। चौथे आरोपी की पहचान 28 वर्षीय राजकुमार पुत्र मोतीराम गांव पाटी विशालाधार आनी जिला कुल्लू के रूप में हुई है। पुलिस ने आरोपी को अदालत में पेश किया जहां से उसे एक दिन के पुलिस रिमांड पर भेज दिया है।

गौरतलब है कि सरकाघाट पुलिस ने बीती 23 अगस्त को रात 2 बजे चंदरुही पुल पर एक सफेद मारुति कार से दो युवाओं से 2 किलो 43 ग्राम चरस बरामद की थी। उनकी निशानदेही पर तीसरे आरोपी को गिरफ्तार किया गया था। अब इन्हें चरस पहुंचाने वाले चौथे आरोपी को भी हिरासत में ले लिया गया है। डीएसपी सरकाघाट संजीव गौतम ने मामले की पुष्टि करते हैं बताया कि सरकाघाट को नशा मुक्त क्षेत्र बनाना पुलिस का एकमात्र लक्ष्य है और किसी भी नशे के तस्कर को बक्शा नहीं जाएगा।

विधि चंद पैरा वर्कर और मल्टीपर्पज वर्कर यूनियन के प्रधान

अनंत ज्ञान, सरकाघाट

जल शक्ति विभाग के पैरा वर्कर और मल्टीपर्पज वर्कर की महत्वपूर्ण बैठक विधि चंद की अध्यक्षता में सरकाघाट में संपन्न हुई।

बैठक में पैरा कर्मचारियों के वेतन संबंधी समस्याओं और अन्य मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई। बैठक में मुख्य रूप से पैरा कर्मचारियों के अनुबंध अवधि को 12 वर्ष से घटाकर 8 वर्ष करने की मांग की गई।

इसके अलावा यह भी प्रस्ताव रखा गया कि सभी पैरा कर्मचारियों को जल शक्ति विभाग के अधीन लाया जाए ताकि उन्हें समय पर वेतन और अन्य लाभ प्राप्त हो सकें।

पैरा वर्कर और मल्टी पर्पज वर्कर मांगों को लेकर बैठक करते हुए।

बैठक के दौरान पैरा वर्कर और मल्टीपर्पज वर्कर यूनियन का एक संयुक्त गठबंधन बनाया गया, जिसमें सुनील कुमार को मुख्य संरक्षक, विधि चंद को अध्यक्ष, गौरव ठाकुर और विवेक सिंह को उपाध्यक्ष, अशोक कुमार को महासचिव, विकेश कुमार को सचिव, दिवेंदर कुमार को कोषाध्यक्ष, विनय कुमार को सलाहकार और अक्षय कुमार को मीडिया प्रभारी चुना गया। इसके अलावा, महिला विंग के अध्यक्ष पद पर सुनीता कुमारी और महासचिव पद पर किरण कुमारी को शामिल किया गया।

बला बला ऐप से हुई बुकिंग पर पुलिस ने किया चालान

अनिल शर्मा, मंडी

देवभूमि टैक्सी ऑपरेटर यूनियन के सदस्यों ने बस स्टैंड के बाहर गुप्त सूचना के आधार पर एक निजी वाहन एक स्विफ्ट डिजायर बस स्टैंड के बाहर सवारी बैठा रही थी।

यूनियन के सदस्यों द्वारा गाड़ी को रोका गया तो पूछताछ करने पर पाया कि बला बला मोबाइल ऐप के माध्यम से चंडीगढ़ के लिए बुकिंग करवाई है। पुलिस की सहायता से इसका चालान करवाया गया। यूनियन के प्रधान भूपेश ठाकुर ने बताया कि इन गाड़ियों के 10,000 रुपए का जुर्माना करवाया गया।

गाड़ी का चालान करवाते हुए।

देवभूमि टैक्सी ऑपरेटर यूनियन की कार्यकारिणी सदस्य उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री से मिले और मोबाइल ऐप बला बला के बारे में अवगत करवाया गया। उपमुख्यमंत्री ने हमारी शिकायत सुनी व शिकायत पत्र के बारे में शिमला में डिस्कस करने की बात कही।

मजदूरों के शोषण के खिलाफ उतरेगा इंटक

अनंत ज्ञान, मंडी। जिला युवा इंटक की कोर कमेटी की बैठक सौली खड्ड में आयोजित कि गई जिसमें ब्लॉक स्तर के पदाधिकारियों को चुनने के लिए बुलाया गया था।

बता दें की युवा इंटक जिला अध्यक्ष की कमान हाल ही में अंकुश मोहन को सौंपी गई थी जिसके बाद ब्लॉक स्तर पर अब पदाधिकारियों को चुनने के लिए इस बैठक में बुलाया गया था। हिमाचल प्रदेश इंटक के महासचिव उमेश शर्मा ने बताया कि बैठक का मुख्य उद्देश्य संगठन को संगठित करना और मजबूत करने की रूपरेखा तैयार करना था।

झूठी गारंटियां बनी कांग्रेस के गले की फांस : दिलीप

कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए विधायक।

अनंत ज्ञान, सरकाघाट

भाजपा मंडल सरकाघाट की मंडल स्तरीय सदस्यता अभियान कार्यशाला भाजपा मंडल अध्यक्ष सुदेश चंदेल की अध्यक्षता शिव विलास होटल सरकाघाट में आयोजित की गई। कार्यशाला में सरकाघाट के विधायक दिलीप ठाकुर विशेष तौर पर उपस्थित रहे। संगठन की ओर से मंडी संसदीय क्षेत्र संगठन मंत्री सुरेश शर्मा, भाजपा जिला महामंत्री राजेंद्र भुट्टो, सदस्यता अभियान प्रभारी सरकाघाट मंडल सुरेंद्र पाल का मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं को मिला। दिलीप ठाकुर ने कहा कि झूठी गारंटी कांग्रेस सरकार के गले की फांस बन गई है।

पल्लवी भारतीय सेना में बनी लेफ्टिनेंट

अभिषेक शर्मा, जोगिंद्रनगर। ग्राम पंचायत रोपड़ी के भैला गांव की पल्लवी ने भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनी हैं। पल्लवी ने परमानेंट कमीशन की परीक्षा पास कर भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनी। पल्लवी इससे पहले 4 साल बीएससी नर्सिंग शिमला में कर रही थी। उसके पिता राम सिंह बीएसएफ में सेवारत हैं। उसकी माता इन्द्रा देवी गृहिणी है। उन्होंने कमीशन का टेस्ट पास करके यह पद हासिल किया।

वन रैंक-वन पेंशन की विसंगतियों के लिए होगा आंदोलन

अनंत ज्ञान, मंडी

संयुक्त मोर्चा ऑफ एक्स सर्विसमैन (जेसीओ एवं ओ आर) हिमाचल प्रदेश के पूर्व सैनिकों ने एक वर्चुअल मीटिंग का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता संगठन के चेयरमैन कै. जगदीश वर्मा सेवानिवृत्त ने की तथा उसका संचालन संगठन के महासचिव लेफ्टिनेंट रमेश कुमार तपवाल ने किया।

बैठक में 12 जिलों के वाइस चेयरमैन व अन्य पदाधिकारीगण ने भाग लिया। सबसे पहले चेयरमैन ने मीटिंग के एजेंडा पर प्रकाश डाला तथा उसके बाद संगठन द्वारा किए जा रहे पूर्व सैनिकों के कल्याणकारी कार्यों पर चर्चा की। बैठक में देश के दूसरे पूर्व सैनिक संगठन जो एक रैंक एक पेंशन लागू करने से उठी विसंगतियां को सरकार द्वारा दूर कराने के लिए आंदोलन करने जा रहे हैं।

बैठक में सुझाव दिया कि अगर प्रयासों के बाद भी सभी पूर्व सैनिक देश में इकट्ठे नहीं होते हैं, तो हिमाचल प्रदेश पूर्व सैनिक संयुक्त मोर्चा राष्ट्रीय स्तर पर एक रैंक एक पेंशन की विसंगतियां के मुद्दे को अपने आप राष्ट्रीय स्तर पर उठाएगा। मंडी में पूर्व सैनिक हवलदार नेत्र सिंह व सूबेदार कश्मीर सिंह की खनन कार्यकर्ताओं द्वारा मारपीट व पुलिस द्वारा केस में दिखाई उदासीनता पर सबने चिंता जताई। जिला ऊना के लेफ्टिनेंट (भारतीय नौसेना) सेवानिवृत्ति एसपी शर्मा ने मांग की कि संगठन बैठकों में जिन निर्णयों को लेते हैं उनका भविष्य में पालन भी उसी प्रकार से होना चाहिए। संगठन के कोषाध्यक्ष सूबेदार मेजर रोशन लाल चौहान ने मांग की कि ओआरओपी की विसंगतियां में वक रैंक से दूसरे रैंक के बीच में बराबर की पे का अंतर होने के मुद्दे को भी मिलाया जाए, ताकि उसके ऊपर भी केंद्र सरकार की सोच विचार कर सके।

सफलता गांव दुगराईं की हेमा कुमारी ने चुना स्वरोजगार व आत्मनिर्भरता का रास्ता

हिम कुक्कुट पालन योजना स्वरोजगार का बन रही साधन

अनंत ज्ञान, चैलचौक

प्रदेश सरकार की हिम कुक्कुट पालन योजना ग्रामीण क्षेत्रों में स्वरोजगार का महत्वपूर्ण साधन बन रही है। इससे न केवल वे आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बन रहे हैं, अपितु प्रोटीनयुक्त पौष्टिक आहार की जरूरतें भी पूरी कर पा रहे हैं।

ग्रामीण लोगों की आय बढ़ाने के दृष्टिगत पशुपालन के साथ मुर्गी पालन को जोड़ते हुए प्रदेश सरकार द्वारा हिम कुक्कुट योजना प्रारंभ की गई है। योजना के तहत मुर्गी पालन पर कुल पूंजी निवेश का 60 प्रतिशत अनुदान सरकार की ओर से दिया जाता है और किसानों द्वारा सिर्फ 40 प्रतिशत ही खर्च किया जाता है। सबसे पहले लाभार्थी किसान को सरकारी पोल्ट्री फार्म में लगभग 15 दिनों से एक महीने तक प्रशिक्षण करवाया जाता है। उसके उपरांत लाभार्थी किसान को मुर्गी के 3000 चूजे दिए जाते हैं। यह चूजे एक-एक हजार की तीन किस्तों में उपलब्ध करवाए जाते हैं।

मुर्गी पालन करती हुए महिला।

गोहर उपमंडल के दुगराईं गांव की रहने वाली हेमा देवी ने इस योजना के तहत आत्मनिर्भरता की राह चुनी है। वर्ष 2022-23 में पशुपालन विभाग के निर्देशन में उन्होंने सुंदरनगर के सरकारी पोल्ट्री फार्म में मुर्गी पालन पर 15 दिनों का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने बताया कि जुलाई, 2024 में उन्हें विभाग द्वारा तीन हजार चूजों की पहली किस्त के तौर पर मुर्गी के एक हजार चूजे दिए गए।

कृषि व पशुपालन वाले किसान हो रहे लाभान्वित : चंदेल

पशु चिकित्सा अधिकारी गोहर डॉ. नवनीत चंदेल का कहना है कि हिम कुक्कट पालन योजना तहत उपमंडल में ऐसे किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है जिनका प्राथमिक व्यवसाय कृषि व पशुपालन है। इससे किसानों को खेतीबाड़ी के साथ-साथ अतिरिक्त आय के बेहतर साधन उपलब्ध हुए हैं।

मिल रही सबसिडी

हेमा कुमारी का कहना है कि बाजार में चिकन की मांग अधिक होने पर उन्हें अच्छे दाम मिल जाते हैं तथा एक हजार मुर्गों पर 50 हजार रुपए से एक लाख रुपए तक अनुमानित लाभ अर्जित कर लेते हैं। उनका कहना है कि मुर्गी शैड के लिए भी सरकार की ओर से उन्हें एक लाख 60 हजार रुपए सबसिडी प्रदान की जा रही है। लोग कल्याणकारी योजनाओं का लाभ अवश्य उठाएं।

उपलब्ध करवाए चूजे

किसान को 88 हजार की राशि जमा करवाने पर उन्हें एक हजार मुर्गी चूजे के अतिरिक्त चूजों के आहार के लिए 60 फीड बैग, आहार भंडारण के लिए 30 फीडर तथा पानी के लिए 30 ड्रिंकर विभाग के द्वारा उपलब्ध कराए गए। दूसरी तथा तीसरी किस्त में 81 हजार रुपए जमा करवाने पर लाभार्थी को विभाग द्वारा एक हजार मुर्गी चूजे तथा 60 फीड बैग प्रति किस्त उपलब्ध करवाए जाएंगे।

दो भाइयों में आपसी मारपीट पर केस दर्ज

अनंत ज्ञान, सुंदरनगर। कांगू क्षेत्र के धनोग गांव में दो भाइयों में जमीनी विवाद को लेकर हुई मारपीट पर क्रॉस प्राथमिकी दर्ज की गई है।

जानकारी के अनुसार अनुसार थाना में दर्ज कराई प्राथमिकी में देवराज पुत्र स्व. जीत राम निवासी गांव धनोग डाकघर कांगू ने कहा कि वह अपने मकान के लिए सीढ़ियों की सैंटरिंग करा रहा था। इस दौरान बड़ा भाई हंसराज वहां आया और गाली-गलौज करने लगा। देव राज का आरोप है कि बड़े भाई ने उसे जान से मारने की भी धमकी दी। दूसरी तरफ हंसराज ने दर्ज कराई प्राथमिकी में कहा कि उसने देवराज से कहा कि वह जहां पर निर्माण कार्य करा रहा है वहां न करे। जिसको लेकर उसने मारपीट की। डीएसपी भारत भूषण ने बताया दोनों पक्षों की ओर से एफआईआर दर्ज कर जांच शुरु कर दी गई है।

हादसे में 9 माह के बच्चे की मौत

अनंत ज्ञान, जोगिंद्रनगर

जोगिंद्रनगर-चौंतड़ा नेशनल हाईवे पर ढेलू गदियाडा के पास कार चालक द्वारा सड़क किनारे खड़े लडभडोल के सिमस गांव के 2 युवकों को टक्कर मार कर, कार के खाई में लुढ़कने से 9 माह के बच्चे अविनाश पुत्र अजय निवासी झुंडता बिलासपुर की दर्दनाक मौत की घटना पेश आई है। जबकि चार अन्य की गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें टांडा मेडिकल कॉलेज रैफर कर दिया है।

हादसा उस समय पेश आया जब भडोल की सिमस पंचायत के उसी गांव के संदीप कुमार तथा अमित कुमार अपनी बाइक के साथ ढेलू गदियाड़ा के पास सड़क किनारे खड़े थे तभी ब्रेजा कार जिसे गौरव चला रहा था सड़क किनारे खड़ी बाइक को टक्कर मारते हुए उनकी कार खाई में लुढ़क गई जिससे संदीप कुमार पुत्र ज्ञान चंद, अमित कुमार पुत्र सुरेंद्र पाल गांव सिमस तथा कार में सवार चालक गौरव कुमार पुत्र गुड्डू राम, अंशुल पुत्र गुड्डू राम दोनों आपस में सगे भाई बताए जाते है, उनके घर मेहमान आए बिलासपुर के झुंडता के 9 माह के अविनाश पुत्र अजय कुमार की मौत हो गई। थाना प्रभारी शकिनी कपूर ने मामले की पुष्टि करते हुए कहा कि पुलिस ने मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है।

क्षतिग्रस्त गाड़ी और बाइक ।

मणिमहेश यात्रा

डल में शाही स्नान कर भक्तों ने किए भोलेनाथ के दर्शन

ओपी शर्मा, भरमौर

उत्तर भारत की सुप्रसिद्ध धार्मिक यात्रा मणिमहेश का सोमवार को कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर विधिवत रूप से आगाज हो गया है। इन दो दिनों में करीब 1 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र मनीमहेश डल झील में डुबकी लगाकर शाही स्नान किया।

हालांकि अभी तक आधिकारिक रूप से सही आंकड़ा नहीं मिल पाया है। इस दौरान भरमौर से लेकर मणिमहेश तक शिव भक्तों की लंबी भीड़ लगी रही। सोमवार को कृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर देश-विदेश के शिव भक्तों ने पवित्र मणिमहेश डल झील में शाही स्नान करके भगवान भोलेनाथ के दर्शन किए। अब यह यात्रा 11 सितंबर राधा अष्टमी तक चलेगी इस दौरान देश-विदेश के लाखों श्रद्धालु यहां पर आकर पवित्र डल झील में शाही स्नान करके भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

जन्माष्टमी पर छोटे न्हौण का शुभ मुहूर्त 3:40 पर तड़के शुरू हुआ और दोपहर 2:40 तक

यात्रा के दौरान एक लकड़ी के पुल से गुजरते हुए लोग।

चला। इस दौरान देश-विदेश से एक लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने पवित्र मनीमहेश डल झील में शाही स्नान किया।

सोमवार को आधिकारिक रूप से मणिमहेश यात्रा का आगाज हो गया है। अब यह यात्रा 11 सितंबर तक चलेगी। हालांकि यहां पर श्रद्धालुओं का मई महीने से ही आने का सिलसिला जारी है और अब तक लाखों श्रद्धालु यहां पर जाकर भगवान भोलेनाथ के दर्शन कर चुके हैं। उधर शास्त्रों में भी जन्माष्टमी पर यहां पर शाही स्नान करने का विशेष महत्व है। जिस दौरान जम्मू कश्मीर के हजारों श्रद्धालु यहां पर इस घड़ी में स्नान करते हैं।

राधा अष्टमी के शाही स्नान के दौरान इस मौके पर पुलिस प्रशासन को भी भारी भीड़ को कंट्रोल करने में कड़ी में सकट करनी पड़ी आलम यह बना रहा कि यहां पर शिव भक्तों की लंबी कतारे लगी रही। जिन्हें छोटे-छोटे पुलियों से पार करवाने के लिए काफी लंबा समय लग रहा। इस दौरान भरमौर से लेकर हतसार तक शिव भक्तों की लंबी तादात लगी रही।(अनंत ज्ञान)

नहीं हो रहा रजिस्ट्रेशन

भरमौर प्रशासन की ओर से मनीमहेश में जाने वाले श्रद्धालुओं का रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक किया हुआ है। बावजूद इसके यहां आने वाले श्रद्धालु रजिस्ट्रेशन नहीं करवा पा रहे हैं। जानकारी के मुताबिक अब तक मात्र 3000 श्रद्धालु ही रजिस्ट्रेशन करवा पाए हैं।

दो दिनों में बढ़ा शिव भक्तों का सैलाब

मणिमहेश यात्रा के दौरान पहले के मुकाबले कई गुना ज्यादा शिव भक्तों ने भरमौर की ओर रुख किया है। जिसके कारण पिछले दो-तीन दिनों से कई जगह कई किलोमीटर तक लंबा जाम भी लग रहा और शिव भक्त जाम में फंसे रहे।

जानकारी के मुताबिक इस मर्तबा मौसम के साफ होने व गर्म न्हौण होने के चलते देश के कोने-कोने से श्रद्धालुओं ने मणिमहेश की ओर रूख किया है। हालांकि इसको लेकर खुद प्रशासन को भी इसका अंदाजा नहीं था। जिसके चलते शुरुआती दिनों में कुछ अव्यवस्थाएं भी देखने को मिली हैं।

श्रद्धालुओं ने किया शाही स्नान : एसडीएम

इस विषय पर मणिमहेश न्यास के अध्यक्ष व कार्यकारी एडीएम भरमौर कुलबीर सिंह राणा ने कहा है कि पिछले दो दिनों में लगभग 1 लाख से अधिक श्रद्धालु ने मणिमहेश में जाकर पवित्र डल झील शाही स्नान किया है। उन्होंने कहा है कि इस बार उम्मीद से अधिक शिव भक्तों ने भरमौर की ओर रुख किया है। प्रशासन की ओर से सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। श्रद्धालुओं को किसी भी तरह की परेशानी ना हो इसके लिए सभी तैयारियां कर ली गई हैं।

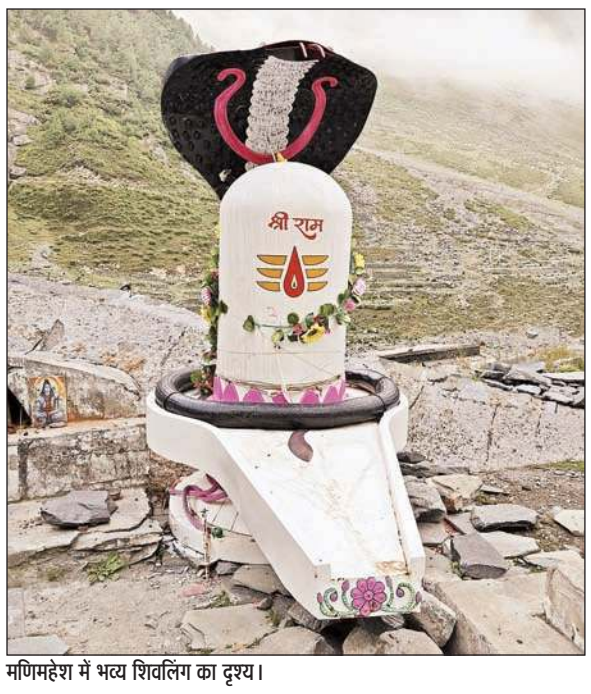

मणिमहेश में भव्य शिवलिंग का दृश्य।

डीएसपी जितेंद्र ने संभाला ट्रैफिक व्यवस्था का जिम्मा

अनंत ज्ञान, चंबा

मणिमहेश यात्रा के दौरान अब ट्रैफिक व्यवस्था का जिम्मा डीएसपी हेडक्वार्टर चंबा जितेंद्र चौधरी संभालेंगे। मणिमहेश यात्रा के दौरान रास्ते में जाम ना लगे इस व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए रविवार को ही डीएसपी हेड क्वार्टर जितेंद्र चौधरी ने कमान संभाल ली है। अब पठानकोट भरमौर नेशनल हाईवे पर महत्वपूर्ण जगहों पर चंबा पुलिस के जवान तैनात किए गए हैं जो ट्रैफिक व्यवस्था को देखेंगे। कैट व्यवस्था को सुचारु करने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल को भी डेप्लॉय किया जा सकता है। इस सड़क पर चलने वाले बड़े वाहनों की आवाजाही दिन को बंद कर दी गई है ताकि मणिमहेश यात्रा में आने वाले श्रद्धालुओं को जाम में न

ट्रैफिक व्यवस्था संभालने के दौरान डीएसपी जितेंद्र व अन्य।

फंसना पड़े। बड़े वाहनों को अब रात में चलाया जाएगा।

गौरतलब है पिछले दिनों पठानकोट भरमौर नेशनल हाईवे पर लगातार तीन दिन तक भारी जाम लगा रहा। इस समस्या के बाद स्वयं पुलिस कप्तान चंबा ने भी दोबारा भरमौर पहुंचकर पुलिस प्रबंधन की तैयारियों का जायजा लिया और उसके बाद स्थानीय डीएसपी हेडक्वार्टर को ट्रैफिक व्यवस्था संभालने की जिम्मेदारी दी है। बग्गा से लेकर खड़ामुख कई जगह सड़क तंग होने के कारण यहां पर जाम की समस्या उत्पन्न हो रही है।

जानकारी के मुताबिक यहां पर जो पहले पुलिस जवान तैनात किए गए थे, वह दूसरे जिलों से आए हुए थे जिन्हें यहां की भौगोलिक परिस्थितियों का अच्छी तरह से ज्ञान नहीं था। इसके बाद अब डीएसपी हेड क्वार्टर जितेंद्र चौधरी ने पठानकोट-भरमौर नेशनल हाईवे पर महत्वपूर्ण जगहों पर स्थानीय पुलिस के जवानों को तैनात किया है। ताकि समय रहते ही इस व्यवस्था को संभाला जा सके और मणिमहेश श्रद्धालु जाम में न फंसे इसके पुख्ता इसके पुख्ता प्रबंध किए जा सके।

इस विषय पर मणिमहेश यात्रा के दौरान ट्रैफिक व्यवस्था के इंचार्ज डीएसपी जितेंद्र चौधरी ने कहा है श्रद्धालुओं को अब जाम की समस्या से दो-चार नहीं होना पड़ेगा। उन्होंने कहा है कि पठानकोट भरमौर नेशनल हाईवे पर महत्वपूर्ण जगहों पर स्थानीय पुलिस के जवानों को तैनात किया गया है जिन्हें यहां की भौगोलिक परिस्थितियों का पूरी तरह से इल्म है ।

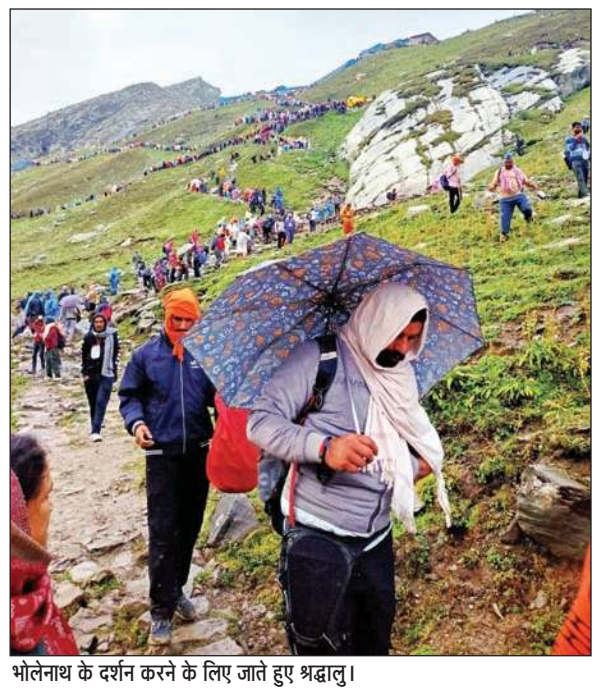

भोलेनाथ के दर्शन करने के लिए जाते हुए श्रद्धालु।

न्यूज ब्रीफ

लोगों ने भव्य भंडारे का किया आयोजन

अनंत ज्ञान, डलहौजी। आने जाने वाले मणिमहेश यात्रियों के लिए हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी बनीखेत के वार्ड नंबर चार के लोगों ने एनएच 154 ए पर भव्य लंगर का आयोजन किया। जहां सैकड़ों आने जाने वाले मणिमहेश यात्रियों ने प्रसाद रूपी भोजन ग्रहण किया। इस आयोजन के बारे में लंगर कमेटी के प्रधान बिल्लू ने जानकारी देते हुए बताया कि वार्ड नंबर 4 हर वर्ष भव्य लंगर का आयोजन करवाया जाता आ रहा है इसी कड़ी में इस वर्ष भी आज सुबह से ही समस्त सेवादारों द्वारा विधिवत लंगर तैयार कर शिव को भोग लगाने के उपरांत लंगर शुरू किया गया जिसमें सैकड़ो आने जाने वाले श्रद्धालुओं ने प्रसाद रूपी भोजन ग्रहण किया।

बच्चों को बताई श्रीकृष्ण की लीलाएं

अनंत ज्ञान, चुवाड़ी। राइजिंग स्टार पब्लिक स्कूल चुवाड़ी में जन्माष्टमी का महोत्सव बहुत धूमधाम से मनाया गया। इस मौके पर बच्चे कृष्णा तथा राधा की पोशाक पहनकर स्कूल आए थे। बच्चों ने कई तरह के कार्यक्रम पेश किए। स्कूल के प्रशासनिक अधिकारी विजय पॉल ने बच्चों को श्री कृष्ण की लीलाओं के बारे में बच्चों को बताया तथा अपनी संस्कृति के साथ जुड़े रहने तथा अपने संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। इस मौके पर स्कूल की प्रधानाचार्या उषा चाढ़क व अन्य स्टाफ मौजूद रहा।

भरमौर में जातर मेला शुरू, झंडा चढ़ाने के बाद होगा विधिवत आगाज

अनंत ज्ञान, भरमौर

मंगलवार से भरमौर में सात दिवसीय ऐतिहासिक जातर मेला शुरू हो जाएगा। इस जातर मेले का आगाज बरसों पुराने ऐतिहासिक दियार के पेड़ पर झंडा चढ़ाने के बाद होगा। भगवान भोलेनाथ के गुर इस वर्षो पुराने दियार के पेड़ पर चढ़कर चोटी पर पहुंचकर झंडा लहराएगें। इसके बाद विधिवत रूप से यह मेला शुरू हो जाएगा।

जानकारी के अनुसार 7 दिनों तक चलने वाले इस मेले में हर दिन का मेला अलग-अलग देवताओं को समर्पित होगा। जिस दिन जिस देवता का मेला होगा उस दिन उस देवता के लिए रात्रि जगराते का

आयोजन भी किया जाएगा।

आठवण मेला दंगल के रूप में मनाया जाएगा। इसके बाद यहां पर अगले एक सप्ताह तक रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा वह दिन में स्थानीय कलाकारों व महिलाओं द्वारा पारंपरिक नृत्य व सांस्कृतिक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे।

बहरहाल कृष्ण जन्माष्टमी से लेकर राधा अष्टमी तक यहां पर मेले का आयोजन होगा जिसमें दूर से आने वाले श्रद्धालु व यात्री भी इसका लुत्फ उठा सकेंगे।

दंगल प्रतियोगिता के बाद यहां पर पूरा एक सप्ताह प्रदेश के अलग-अलग कोनों से प्रसिद्ध कलाकार रात्रि सांस्कृतिक कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुतियां देंगे वह लोगों का मनोरंजन करेंगे।

बारिश से लोक निर्माण विभाग तीसा को हुआ 2 .31 करोड़ का नुकसान

आजम डार, चुराह

हिमाचल प्रदेश में मानसून के दौरान काफी नुकसान हुआ है हालांकि चंबा जिला में भी मानसून की भारी बारिश से लोकनिर्माण विभाग मंडल तीसा को काफी नुकसान हुआ है।

लोकनिर्माण विभाग तीसा में भारी बारिश से कई सड़कों को नुकसान झेलना पड़ा है। उसके अलावा कई पुलिया और अन्य ब्रेस्ट बाल को नुकसान हुआ है जिसका आंकलन करके रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेजी गई है ताकि पैसा समय पर आने से उन्हे ठीक करवाया जा सके।

भारी बारिश से लोकनिर्माण

जानकारी देते हुए जोगिंद्र कुमार।

विभाग मंडल तीसा को दो करोड़ 31 लाख का नुकसान विभिन क्षेत्रों में हुआ है हालंकी जितने मार्ग बंद हुए थे उन्हे सभी को खोल दिया गया है लेकिन भारी बारिश से लोकनिर्माण विभाग तीसा को काफी नुकसान उठाना पड़ा है।

विभाग को तीसा में भारी बारिश से कई सड़कों का नुकसान झेलना पड़ा

वहीं दूसरी और लोकनिर्माण विभाग मंडल तीसा के अधिशासी अभियंता जोगिंद्र कुमार का कहना है मानसून की भारी बारिश से लोकनिर्माण विभाग की सड़कों और ब्रेस्ट बाल सहित पूलियों का नुकसान हुआ है, जबकि कुल दो करोड़ 31 लाख के आसपास आंकलन करके उचाधिकारियो को रिपोर्ट भेज दी है ताकि पैसे आने पर कार्य शुरू करवाया जा सके ।

समोट गांव से 69 वर्षीय वृद्ध महिला लापता

बबलू पठानिया, चुवाड़ी /भटियात

पुलिस थाना चुवाड़ी के अंतर्गत गांव समोट से बीते 21 अगस्त दोपहर से एक 69 वर्षीय वृद्ध महिला लापता है। जिसकी शिकायत महिला के परिजनों द्वारा 22 अगस्त को पुलिस चौकी सिंहुता में दर्ज करवाई गई किंतु अभी तक लापता महिला का कोई भी सुराग नहीं मिल पाया है। जिसको लेकर समस्त परिवार एवं रिश्तेदार अच्छे खासे परेशान है।

परिजनों ने बताया कि 21 अगस्त को परिवार में किसी बात को लेकर 69 वर्षीय संतोष कुमारी पत्नी तिलक राज गांव व डाकघर समोट जिला चंबा किसी पारिवारिक बात को लेकर खफा हो गई और घर से बिना बताए कहीं चली गई जिससे देर शाम तक जब वह घर नहीं लौटी ।

उन्होंने जाकर खुद ढूंढा किंतु संतोष कुमारी का कोई पता नहीं चला। अगले ही दिन 22 अगस्त को परिजनों ने पुलिस चौकी सिंहुता में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई किंतु अभी तक लापता महिला का कोई भी सुराग नहीं मिल पाया है।(अनंत ज्ञान)

बनीखेत में बस से मोटरसाइकिल सवार की भिड़ंत

अनंत ज्ञान, डलहौजी

पुलिस थाना डलहौजी के अंतर्गत बनीखेत में आर्मी कॉलोनी अशोक विहार के मुख्य द्वार के पास एक पंजाब रोडवेज की बस एवं मणिमहेश जा रहे मोटरसाइकिल की भिड़ंत का मामला प्रकाश में आया है।

जानकारी अनुसार डलहौजी से पठानकोट जा रही पंजाब रोडवेज की बस (पीबी 35कयू - 9432) जैसे ही बनीखेत के साथ लगती आर्मी कॉलोनी अशोक विहार पहुंची तो वहीं दूसरी और से आ रहे मणिमहेश यात्रियों का जत्था जो मोटरसाइकिल पर सवार था।

वहीं ड्राइवर के कहे अनुसार न पर रखें ड्रम वे उन्हें क्रॉस कर रही थी इस दौरान मोड़ पर से अचानक मोटरसाइकिल सवार आ गए जो जिनमें मोटरसाइकिल सवार ने मोटरसाइकिल (जेके 02 एएच-9671) को नियंत्रित करने हेतु जैसे ही ब्रेक लगाई तो बस से जा टकराई ।

गनीमत यह रही की

बेहोशी की हालत में पड़ा हुआ युवक।

मोटरसाइकिल सवार हेलमेट पहन रखी थी, जिससे शरीर पर कोई गंभीर चोट नहीं आई। इसी दौरान बस की सवारी एवं मोटरसाइकिल सवार के दोस्तों ने बिना समय गवाएं उसे गाड़ी में डालकर स्थानीय प्राथमिक हेल्थ सेंटर बनीखेत पहुंचा जहां डॉक्टर ने बिना समय गंवाए उसे प्राथमिक की देकर नागरिक अस्पताल डलहौजी रेफर कर दिया।

स्थानीय डॉक्टर कंवर विश्व दीपक ने जानकारी देते हुए बताया कि जख्मी व्यक्ति जिसका नाम अमन सैनी पुत्र बाबूराम गांव पखोचक्क तहसील एवं जिला पठानकोट पीठ बाजू एवं टांगों पर अंदरूनी चोटें आई है। दोनों पक्षों में आपसी सहमति हो गई है।

समस्याओं से प्रभावित हो रहे श्रद्धालु : जियालाल

अनंत ज्ञान, भरमौर

पिछले कई वर्षों से मणीमहेश मेला हो रहा हैं लेकिन जितनी बुरी हालत इस बार हुई है यह कभी देखा नहीं गया। पूर्व में चाहे बीजेपी की सरकार रही हो या कांग्रेस की सरकार रही हो लेकिन इस बार मणिमहेश मेले की दुर्गति हुई है।

यह बात पूर्व विधायक एवं भाजपा के नेता जियालाल कपूर ने कही है। उन्होंने कहा है कि यह सोचा भी नहीं था। लोगों को यहां पर मेले के दौरान मूलभूत सुविधाएं भी मुहैया नहीं हो पाई है।

उन्होंने आरोप लगाया है कि मणिमहेश मेले के दौरान यहां पर लोगों को पिछले दिनो कई घंटों तक पीने का पानी भी नसीब नहीं हुआ। मेले के दौरान कई घंटे बिजली गुल हो रही है। जिसका जवाब संबंधित अधिकारी नहीं दे रहे है। लोगों को यहां पर लुटा जा रहा है। 20 रुपए एंट्री फीस के नाम पर जो लोगों से पैसा लिया जा रहा है वह कहां जा रहा है और यह पैसा क्यों लिया जा रहा है। इसका टेंडर कब हुआ प्रशासन इसका भी हिसाब दे। इस दौरान मणिमहेश यात्रा के दौरान बस स्टैंड के साथ टैक्सी स्टैंड का टेंडर करने के बाद यहां पर जाम की समस्या और बढ़ गई है। जबकि इस मेले के दौरान ट्रस्ट को कई जगह से अच्छा खासा पैसा आता है। उन्होंने कहा कि मेले के दौरान बिजली विभाग द्वारा बार-बार बिजली के कट लगाए गए हैं। जिससे यहां की छवि काफी खराब हुई है। भरमौर को पूरी तरह से बेसहारा छोड़ दिया गया है। यहां के स्थानीय विधायक भी पिछले कई दिनों से यहां से गायब हैं। इस दौरान प्रशासन व पुलिस की विफलताओं के कारण पिछले दिनों 15-15 घंटे मणिमहेश श्रद्धालु जाम में फंसे रहे।

एनएच विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए जियालाल कपूर ने कहा है कि पिछले कई महीनों से जो मलवा सड़कों पर गिरा हुआ है। उसको विभाग नहीं उठा पाया है। जियालाल कपूर ने कहा है कि इस बार मणिमहेश यात्रा के दौरान जो रजिस्ट्रेशन कर यात्री पर लगाया गया है उसे रजिस्ट्रेशन कर के पक्ष में नहीं है। जयालालपुर ने कहा है कि स्थानीय विधायक वर्तमान में जम्मू में बैठे हुए हैं।

व्यक्ति की खाई में गिरने से हुई मौत, मामला दर्ज

अनंत ज्ञान, सलूनी

सलूनी उपमंडल की ग्राम पंचायत बयाना के कंदला गांव का एक व्यक्ति सोमवार सुबह घास काटने के लिए गया हुआ था घास काटते वक्त व्यक्ति का पैर फिसला और गहरी खाई में जा गिरा जिस कारण व्यक्ति की मौके पर मौत हो गई ।

जानकारी अनुसार बयाना पंचायत का राजीव बोहरा स्पुत्र प्रकाश बोहरा उम्र 58 वर्ष गांव कंदला डाकघर सुरंगानी सोमवार सुबह दवारु नाला की तरफ जंगल में घास लाने के लिए गया हुआ दोपहर तक राजीव बोहरा घर वापस नहीं लौटा तो पत्नी शीला देवी जंगल की ओर ढूंढने के लिए गई परंतु उसे कहीं भी पति दिखाई दिया। जिसके बाद उसने गांववासियों को बताया और गांव वासियों ने जंगल में राजीव बोहरा की तलाश शुरू की तो रास्ते में एक जगह मिट्टी उखड़ी हुई दिखाई दी तो उन्होंने नीचे जाकर देखा तो राजीव बोहरा वहां पर गिरा हुआ था और मौके पर ही मौत हो गई थी ग्राम पंचायत बयाना के उप प्रधान अजय भारद्वाज मौके पर पहुंचे और उन्होंने पुलिस चौकी सुरंगानी को सूचित किया पुलिस ने मौके पर पहुंचकर परिजनों के बयान दर्ज किये और शव का पोस्टमार्टम करवाने के लिए चंबा ले गई। डीएसपी सलूनी रंजन शर्मा ने मामले की पुष्टि की है।

पानी से भरे गड्ढे दे रहे हादसे को न्योता

मुकेश कुमार, डलहौजी

आज हुई बारिश ने जहां एक तरफ बीते कुछ दिनों से हो रही बारिश ने एनएच 154ए पर स्थित एनएचपीसी चौक के साथ लगते पर खेरी पुल के पास बड़े-बड़े भारी गड्ढे पानी से भरे तालाब में तब्दील हो गए हैं।

वही एक और पुल के पिलर भी अज्ञात बहन ने तोड़ दिए हैं जिससे रास्ते में कीचड़ से दो पहिया वाहनों की दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा बना हुआ है। इसी पानी और कीचड़ से आने जाने वाले राहगीरों एवं वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

बताते चलें कि एनएचपीसी ने जहां एक और अपने नाम से बीच रास्ते में बड़े-बड़े होल्डिंग टांग कर अपने नाम की ब्रांडिंग तो कर दी

खस्ताहालत सड़क।

किंतु रास्ते पर पड़े भारी गड्ढे दिखाई नहीं दिए जिसका आने जाने वाले राहगीर तथा वाहन चालक परेशानी का सामना उठा रहे हैं।

काबिले गौर है कि खैरी पुल से वाया पद्दर मुख्य बाजार का रास्ता भी बीते कुछ समय पहले एनएचपीसी द्वारा तैयार करवाया गया था जो मौजूदा समय में ऐसा लगता है रास्ते में पड़े गड्ढे न हो बल्कि बड़े-बड़े गड्ढों के बीच रास्ता हो जिसको लेकर स्थानीय लोगों ने कई बार एनएचपीसी प्रबंधन एवं स्थानीय प्रशासन को भी अवगत करवाया है किंतु नतीजा ज्यों के त्यों ही है।

स्थानीय लोगों ने एनएचपीसी प्रबंधन एवं स्थानीय प्रशासन से मांग है कि जल्द से जल्द खैरी पुल से वाया पद्दर मुख्य बाजार बनीखेत का रास्ता दुरुस्त करवाया जा सके ताकि आम लोगों के समक्ष आ रही विभिन्न समस्याओं का समाधान हो सके।

स्थानीय ग्राम पंचायत प्रधान अरुण राणा ने भी स्थानीय प्रशासन एवं एनएचपीसी से गुहार लगाई है कि वे इस रास्ते की हालत को देखते हुए जल्द इसे ठीक करवाने की कृपा करें।

हरि नाम संकीर्तन के साथ देवता की जलेब में लिया भाग

तलाडा पंचायत में हर्षोल्लास के साथ मनाया जन्माष्टमी महोत्सव, रोट कंढा में निकाली कान्हा व भगवान गर्गाचार्य की झांकी

अनंत ज्ञान, सैंज

सैंज घाटी की पंचायत तलाडा के रोट कंढा में संसार के पालनकर्ता एवं सोलह कलाधारी कृष्ण भगवान के जन्म दिवस पर जन्माष्टमी का ऐतिहासिक एवं धार्मिक महोत्सव बड़े हर्ष उल्लास के साथ मनाया गया।

हजारों की तादाद में पधारे श्रद्धालुओं ने हरि नाम संकीर्तन के साथ देवता की जलेब में भाग लिया। ढोल-नगाड़ों व शंख की करतल ध्वनी के साथ कंढा गांव में निकाली गई देवता की रथ यात्रा में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की भागीदारी ज्यादा रही। रोट क्षेत्र में जन्माष्टमी का महोत्सव कुछ अलग तरीके से मनाया जाता है। यहां भगवान कृष्ण के कुल गुरु महामुनि गर्गाचार्य जी की शोभायात्रा निकाली जाती है। देवता के कारदार मेहर सिंह सुमन ने बताया कि सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व वाले उत्सव लगभग चार सौ सालों से मनाया जा रहा है। तीन दिनों तक मनाए जाने वाले इस जन्माष्टमी महोत्सव में मटकी फोड़, सांस्कृतिक कार्यक्रम के अलावा देव कारबाई निभाई जाती है।

रोट कंढा में कृष्ण भगवान के जन्म दिवस पर जन्माष्टमी के ऐतिहासिक एवं धार्मिक महोत्सव में देवता की जलेब में मौजूद लोग।

देवता के पुजारी ओमप्रकाश शास्त्री ने बताया कि भगवान श्रीकृष्ण का जन्म कारागार में हुआ था। कंस को जब आकाशवाणी सुनाई दी कि वासुदेव और देवकी की संतान उसका वध करेगी, तो उसने दोनों को जेल में डाल दिया। महामुनी गर्गाचार्य द्वारा लिखित गर्ग संहिता के गो लोक खंड में नवें अध्याय के नवें श्लोक में नारद जी के मुख से इस घटना का उल्लेख मिलता है। उन्होंने बताया कि कान्हा का जन्म भाद्रपद कृष्णाष्टमी बुधवार को रोहिणी नक्षत्र में अर्धरात्रि को हुआ था। योगीराज श्रीकृष्णा और महर्षि गर्गाचार्य जी का गुरु शिष्य के अलावा पुरोहित यजमान का भी संबंध है। उन्हीं की याद में रोट क्षेत्र में सदियों से जन्माष्टमी का महोत्सव मनाया जा रहा है, जबकि लोग भगवान से सुख समृद्धि के लिए मन्नत व आशीर्वाद मांगा।

उधर, जन्माष्टमी महोत्सव में रंगारंग कार्यक्रम के अलावा हजारों लोगों को प्रसाद के तौर पर भंडारे का आयोजन भी किया गया। पंचायत प्रधान मोहर सिंह व उपप्रधान सुभाष ने बताया कि मेला शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। सुभाष ने बताया कि तीन दिनों तक पंचायत में रंगारंग कार्यक्रम के अलावा आए हुए मेहमानों की खूब खातिरदारी की जाएगी। बहरहाल जन्माष्टमी महोत्सव को लोगों ने बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया।

भगवान श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर कारसेवा दल संस्था के सदस्य सेवादार क्षेत्रीय अस्पताल कुल्लू में लोगों को प्रसाद के रूप में खीर का प्रसाद वितरित करते हुए।

न्यूज ब्रीफ

पुजारी संघ को बनाया जाए दशहरा कमेटी का सदस्य

कुल्लू। पुजारी कल्याण संघ जिला कुल्लू ने प्रदेश के मुख्यमंत्री व दशहरा कमेटी के अध्यक्ष सीपीएस सुंदर ठाकुर से मांग की है कि पुजारी कल्याण संघ को भी दशहरा कमेटी का सदस्य बनाया जाए। संघ के अध्यक्ष धनी राम चौहान ने कहा कि पुजारी देव समाज का प्रमुख अंग है बावजूद इसके पुजारी संघ को उपेक्षित रखा गया है। न ही आजतक बार-बार मांग करने पर दशहरा कमेटी का संघ को सदस्य बनाया गया है और न ही पुजारियों को भत्ता दिया जाता है। गुर, बजयंत्री को दशहरा पर्व के दौरान भत्ता दिया जाता है, जबकि पुजारी कल्याण संघ की बार-बार की मांग पर भी उन्हें उपेक्षित किया जा रहा है। पुजारी दुखी होगा, तो देवता भी सुखी नहीं हो सकते हैं। पुजारी के बिना कोई भी देव कार्य शुरू नहीं होते हैं। पुजारी 24 घंटे देवता के पास ड्यूटी देते हैं, चाकरी करते हैं और पूजापाठ के साथ पहरेदारी करते हैं फिर भी न जाने सरकार हर वर्ष पुजारियों के साथ अन्याय क्यों कर रही है। पुजारी की देव समाज में अहम भूमिका है और पुजारी के बिना कोई भी देव कारज नहीं होता, फिर भी संघ को दरकिनार किया जा रहा है, जो बहुत बड़ा धोखा है। होना तो ऐसा चाहिए था कि पुजारी को हर तरह की सुविधा प्रदान होनी चाहिए थी, जबकि यहां सब उल्टा है। एक बार जिला पुजारी संघ व सभी खंडों के संघ फिर से प्रदेश के मुख्यमंत्री व दशहरा कमेटी के अध्यक्ष से गुहार लगाते हैं कि पुजारी कल्याण संघ की जायज मांगों को माना जाए, जब पुजारी खुश होंगे, तो देवता भी खुश होते हैं। उन्हें पूरी उम्मीद है कि इस बार उन्हें न्याय मिलेगा।

31 को होगा 28वां महाविशाल भगवती जागरण

कुल्लू। आगामी 31 अगस्त को कुल्लू जिला के भुंतर में 28वां महाविशाल भगवती जागरण का भव्य आयोजन होने जा रहा है। जागरण का आयोजन भुंतर में स्थित न्यू सूद पार्किंग स्थल में होने जा रहा है। 31 अगस्त को सबसे पहले ज्योति लाने के लिए आयोजन स्थल से प्रस्थान करेंगे और हर वर्ष की भांति मां की पावन ज्योति को वैष्णो माता मंदिर कुल्लू से रामशिला, आखड़ा बाजार, ढालपुर कुल्लू, ज्वाला माता मंदिर शमशी, सैनिक चौक भुंतर से होते हुए न्यू सूद पार्किंग तक लाया जाएगा। इस दौरान ज्वाला माता मंदिर शमशी में ज्योति स्वागत, गणपति पूजन, ज्योति पूजन व कलश पूजन का किया जाएगा और उसके बाद रात्रि 9 बजे के बाद जागरण शुरू किया जाएगा। इस दौरान मां भगवती की स्तुति एवं गुणगान के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायिका जॉनी ठाकुर, सुप्रसिद्ध गायक करवैल राणा, गायिका एवं सूत्रधार सिमरन भारद्वाज, मां तारा रानी कथा वाचक रितेश अग्निहोत्री एवं शिवा आर्ट ग्रुप करनाल अपनी अपनी प्रस्तुति पेश करेंगे। इसके बाद रविवार एक सितंबर को शिव मंदिर भुंतर में भंडारे का आयोजन किया जाएगा।

260 किलो प्लास्टिक के कचरे को बोरियों में भरा

कुल्लू। कुल्लू कॉलेज की रोवर्स एवं रेंजर्स यूनिट व रोटरी क्लब कुल्लू की ओर से कुल्लू के बिजली महादेव मंदिर के जंगल सहित मंदिर परिसर में 2 दिवसीय पौधरोपण व सफाई (प्लास्टिक मुक्त) अभियान चलाया गया। इस अभियान में कुल्लू कॉलेज के लगभग 30 स्काउट्स ने अपने रोवर स्काउट लीडर प्रो. ज्योति चरन तथा रेंजर स्काउट लीडर प्रो. संगीता कौंडल तथा रोटरी क्लब कुल्लू के अध्यक्ष इंजीनियर अंशुल पराशर, रोटेरियन इंजीनियर राजीव सिंह, रोट्रेक्टर रोहित, रोट्रक्टर संध्या तथा रोट्रक्टर अमृतांश ने भाग लिया। प्रो. ज्योति चरन ने कहा कि इस 2 दिवसीय सफाई अभियान को कुल्लू कॉलेज के प्रिंसिपल एवं ग्रुप लीडर डॉ. मनदीप शर्मा के सुझाव पर रोटरी क्लब कुल्लू के अध्यक्ष अंशुल पराशर के सहयोग से किया गया। इसके अंतर्गत स्काउट्स एवं रोट्रक्टर्स ने खराहल के कराटे गांव से लेकर बिजली महादेव मंदिर परिसर व रास्ते से प्लास्टिक के कचरे को इक्कट्ठा किया तथा मंदिर आने-जाने वाले श्रद्धालुओं एवं स्थानीय लोगों को प्लास्टिक के बुरे प्रभावों के प्रति जागरूक किया गया। दूसरे दिन रविवार को एक पौधा मां के नाम अभियान के तहत बिजली महादेव मंदिर के साथ लगते जंगल में पौधरोपण किया। लगभग 260 किलो प्लास्टिक के कचरे को बड़ी-बड़ी बोरियों में भरकर जंगल से नीचे लाया गया, जिसे नगर परिषद कुल्लू के कर्मचारियों के पास दिया। प्रो. ज्योति चरन ने बताया कि वे 2016 से ही हर साल यहां से प्लास्टिक के कचरे को साफ करते आ रहे हैं। तो वहीं, रोटरी क्लब कुल्लू 2022 से ही इस अभियान को छेड़े हुए है।

हरे कृष्णा हरे कृष्णा... से गूंजा मनाली, भजन-कीर्तन का दौर रहा जारी

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू

जिला कुल्लू में सोमवार को जगह-जगह जन्माष्टमी की धूम रही। कुल्लू स्थित भल्याणी गांव में श्रीकृष्ण मंदिर में भजन-कीर्तन का दौर जारी रहा। वहीं, आनी स्थित बटाला के श्रीकृष्ण मंदिर में सुबह से शाम तक जहां भक्तों की भीड़ लगी रही साथ ही रात को भजन-कीर्तन का दौर जारी रहा। इसके अलावा सैंज, मणिकर्ण, भुंतर सहित अन्य जगहों पर जन्माष्टमी पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए।

उधर, जन्माष्टमी के अवसर पर मनाली में भी कार्यक्रम आयोजित किए गए। मंदिरों में लोगों की भीड़ उमड़ी। भजन-कीर्तन का दौर चलता रहा। लोगों ने व्रत रखकर श्रीकृष्ण की आराधना की। मालरोड मनाली में रविवार शाम जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर एस्कॉन संस्था ने एक धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें लोकगायिका नीरू चांदनी ने भजनों से माहौल को भक्तिमय बना दिया। बारिश के बावजूद लोगों की भीड़ उमड़ी। नीरू ने ..हरे कृष्णा हरे कृष्णा... भजन गाकर लोगों को झुमाया। इसके अलावा दुर्गा मंदिर में जन्माष्टमी पर भजन-कीर्तन किया। श्रीकृष्ण को झूला झुलाने के लिए यहां पालना भी लगाया गया। दिनभर यहां लोग झूला झुलाने पहुंचे। मंगलवार को जन्माष्टमी के उपलक्ष्य पर मनाली में भंडारे का आयोजन किया जाएगा। जन्माष्टमी पर अन्य मंदिरों में भी लोगों की भीड़ देखने को मिली। व्रत रखने वाले लोग मंदिर पहुंचे और आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर छोटे-छोटे बच्चे श्रीकृष्ण और राधा रानी की भेष में नजर आए।

ठावा मंदिर में धूमधाम से मनाया जन्माष्टमी पर्व

मोहन कपूर, पतलीकूहल

जिला कुल्लू की उझी घाटी के विभिन्न स्थानों में जन्माष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। मुरलीधर भगवान श्री कृष्ण की भूमि ठावा में सुबह आरती उपरांत भजन-कीर्तन का दौर शुरू हुआ, जो मंगलवार सुबह तक चलेगा।

इस दौरान मंदिर का वातावरण राधा व कृष्ण के भजनों से गुंजायमान हो गया। राधा कृष्ण के दर्शनों के लिए कुल्लू सहित देश-विदेश के पर्यटक भी ठावा पहुंचे हैं। जन्माष्टमी से पूर्व की रात विष्णु मंदिर दुआड़ा में भगवान विष्णु की प्रतिमा को विराट रूप में सजाया गया। मान्यता अनुसार भगवान विष्णु ने कृष्ण अवतार से पूर्व उनकी माता देवकी व पिता वासुदेव को अपने विराट रूप के दर्शन देकर कृतार्थ किया था। उसी संदर्भ में हर वर्ष भगवान विष्णु

मंदिर दुआड़ा में जन्माष्टमी पर्व के एक दिन पूर्व भगवान की प्रतिमा को विराट रूप में सजाया जाता है। जन्माष्टमी के दिन व्रत के नियमों का पालना करने एवं भगवान विष्णु के विराट रूप के दर्शनों के लिए श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। उझी घाटी के हरिपुर गांव में माधोराय जी के मंदिर के प्रांगण में जन्माष्टमी की धूम मची रही मंदिर को फूलों से सजाया गया। भगवान माधोराय के कारदार सुभाष ठाकुर ने बताया कि माधोराय प्रांगण में हर वर्ष जन्माष्टमी हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है, मगर जन्माष्टमी मनाने के लिए इस वर्ष ग्रामीणों की ओर से विशेष प्रयास किए गए हैं। मंदिरों को फूलों एवं लाइटों से सजाया गया है व शास्त्र अनुसार मंगलवार सुबह भगवान श्री के जन्म तक भजन-कीर्तन यहां चलता रहेगा। मंगलवार को भी मंदिर में जन्माष्टमी मनाई जाएगी। वहीं, नीलकंठ महादेव मंदिर पतलीकूहल में भी जन्माष्टमी हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। भगवान भोलेनाथ के प्रांगण में शिव भक्तों ने भगवान श्री कृष्ण के 5251वें जन्म उत्सव पर राधा कृष्ण के भजन गाकर उन्हें याद किया।

राज्य स्तरीय सीनियर वुशु प्रतियोगिता में दूसरे स्थान पर रहा कुल्लू जिला

21वीं राज्य स्तरीय सीनियर वुशु प्रतियोगिता में कुल्लू के खिलाड़ी व अन्य।

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू

21वीं राज्य स्तरीय सीनियर वुशु प्रतियोगिता में कुल्लू ने दूसरा स्थान हासिल किया।

वुशु संघ कुल्लू के महासचिव लुदर चंद ने बताया कि 21वीं राज्य स्तरीय सीनियर वुशु प्रतियोगिता 24 व 25 अगस्त को प्रतियोगिता का आयोजन हिमाचल प्रदेश वुशु संघ द्वारा माता भद्रकाली मंदिर भराड़ी सुंदरनगर में किया गया, जिसमें 9 जिलों के 200 वुशु खिलाड़ियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में कुल्लू के 10 वुशु खिलाड़ियों ने भाग लिया, जिसमें राष्ट्रीय वुशु खिलाड़ी अक्षित ने ताऊलु इवेंट चनक्वान और दाऊशू इवेंट में दो स्वर्ण पदक हासिल किए। सानशू में 48 किलोग्राम भार वर्ग में मनोज ठाकुर रजत पदक, 56 किलोग्राम भार में प्रवीण कुमार कांस्य पदक, 60 किलोग्राम भाग वर्ग में योगेंद्र ठाकुर रजत पदक, 65 किलोग्राम भार वर्ग में झाबे राम रजत पदक, 70 किलोग्राम भार में मीनेश ठाकुर स्वर्ण पदक, प्रशांत रजत पदक, महिला वर्ग में 48 किलोग्राम भार वर्ग में वंदना ठाकुर ने रजत पदक हासिल किया। इस प्रतियोगिता के शुभारंभ के अवसर पर मुख्यातिथि एसपी मंडी साक्षी वर्मा रह, जबकि समारोह की अध्यक्षता राज्यकर एवं आबकारी विभाग मंडी की सहायक आयुक्त शैलजा शर्मा ने की।

रोहित को पांगी छात्र कल्याण संघ की कमान

कुल्लू। पांगी छात्र कल्याण संघ कुल्लू की नई कार्यकारिणी गठित की गई। यह कार्यकारिणी शैक्षणिक सत्र 2024-25 के लिए बनाई गई। अध्यक्ष पद के लिए दो उम्मीदवार होने के कारण चुनाव प्रक्रिया को अपनाना पड़ा।

इसमें रोहित 30 मतों से जीत हासिल कर अध्यक्ष बने। रोहित को 104 और सुनील को 74 मत मिले। महासचिव और उपाध्यक्ष पद पर निर्विरोध उम्मीदवार चुने गए। महासचिव मनोज और उपाध्यक्ष रोहित (साच) को चुना गया। नवनियुक्त अध्यक्ष रोहित ने कहा कि जिला कुल्लू में अध्ययनरत पांगी क्षेत्र के विद्यार्थियों के हकों और बुनियादी शिक्षा के लिए कार्यकारिणी कार्य करेगी। छात्र हित के मुद्दों को बिना भेदभाव के पारदर्शिता के साथ उठाया जाएगा।

पदोन्नति लिपिक के पद जल्द भरे सरकार

अनंत ज्ञान, आनी

हिमाचल प्रदेश सीमित भर्ती कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों की बैठक शिमला में प्रदेशाध्यक्ष एलड़ी चौहान की अध्यक्षता में आयोजित हुई। बैठक में शिमला सहित छह जिलों के पदाधिकारी उपस्थित रहे, जिसमें कई महत्वपूर्ण मांगें अध्यक्ष के समक्ष समाधान के लिए रखी गईं। मांग रखी कि वर्ष 2010 से सभी विभागों के बाहरवीं उत्तीर्ण चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की पदोन्नति लिपिक के पद के लिए जो 20 प्रतिशत कोटा दिया गया है।

वर्ष-2022 के बाद उसके तहत कोई भर्ती नहीं हुई है और न ही सरकार इस प्रक्रिया को शुरू कर रही है, जिससे पात्र कर्मचारियों में खासा रोष व्याप्त है, एलड़ी चौहान ने कहा कि सीमित सीधी भर्ती कर्मचारी संघ में वर्तमान में जो पदाधिकारी हैं, वो कर्मचारियों की मांगों पर संगठन के कार्यों में उनकी क्लर्क के पद पर पदोन्नति होने के बाद अपनी भागीदारी सुनिश्चित नहीं कर रहे हैं, इसलिए आज जिलाधीश शिमला कार्यालय में कार्यरत सूरज शर्मा को इस संगठन में महासचिव की जिमेदारी दी गई है, जिसे तुरंत प्रभाव से लागू समझा जाएगा तथा 22 सितंबर को पुन: संगठन की बैठक होगी, जिसमें संगठन का पुनर्गठन भी किया जाएगा। एलडीआर प्रक्रिया के तहत लिपिक व कनिष्ठ कार्यालय सहायक के पदों को भरने के लिए मांगपत्र सचिव कार्मिक को दिया जा चुका है तथा जल्द ही हर विभागाध्यक्ष से उनके विभागों में 20 प्रतिशत एलडीआर कोटे के तहत रिक्त पड़े लिपिक व जेओए के पदों की रेक्रिरेमेंट राज्य चयन आयोग को भिजवाने बारे पत्र जारी किए जाएंगे। प्रदेश सरकार से मांग है कि जल्द सभी विभागों सहित आयोग को इस भर्ती प्रक्रिया को शुरू करने बारे निर्देश जारी करे।

हिमाचल प्रदेश सीमित भर्ती कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों की बैठक में मौजूद लोग।

नालियों को चौड़ा करने का कार्य प्रगति पर

अनंत ज्ञान ब्यूरो, कुल्लू

सुल्तानपुर और लोरन के बीच इन दिनों नालियों को दुरुस्त करने का कार्य किया जा रहा है।

पिछले 2-3 दिनों से अप्पर सुल्तानपुर और लोरन के बीच वाले रास्ते में इन दिनों पुरानी नालियों को चौड़ा करने और दुरस्त करने का कार्य किया जा रहा है। हांलाकि नालियों को चौड़ा करने के कार्य के लिए मजदूरों के द्वारा पहले पुरानी और संकरी नालियों को तोड़ा जा रहा है, जिसके चलते राहगीरों को

चलने में थोड़ी बहुत परेशानी पेश आ रही है। नालियों को दुरुस्त करने के लिए रास्तों पर लगे पैबर को भी हटाया गया है, ताकि नालियों के आकार को थोड़ा बढ़ाया जा सके। इस जगह पर काफी समय से नालियों को दुरुस्त करने की मांग स्थानीय लोगों के द्वारा लगातार की जा रही थी और अब संबंधित विभाग के द्वारा नालियों को दुरुस्त करने के साथ-साथ चौड़ा भी करने का कार्य किया जा रहा है और इस कार्य में विभाग के 5 से सातमजदूर लगातार नालियों को ठीक करने का कार्य करने में जुटे हुए हैं।

आयोजन लाहौल-स्पीति के वयोवृद्ध इतिहासकार तोबदन ने कार्यशाला में की शिरकत, टांकरी लिपि की दी जानकारी

वर्णमाला लेखन और नाम लिखने का किया अभ्यास

सुरेंद्र तिबोगपा, कुल्लू

कुल्लू के जिला मुख्यालय में स्थित अटल सदन भवन में टांकरी लिपि प्रशिक्षण कार्यशाला के दूसरे दिन प्रशिक्षुओं की संख्या पहले दिन के मुकाबले ज्यादा संतोषजनक रही।

सोमवार को टांकरी लिपि कार्यशाला में उपस्थित प्रशिक्षुओं को वर्णमाला के शेष अक्षरों के साथ-साथ अपना-अपना नाम लिखने के बारे में अभ्यास करवाया गया। टांकरी

विशेषज्ञ यतिन पंडित ने दूसरे दिन की कार्यशाला के दौरान उपस्थित सभी प्रशिक्षुओं को टांकरी लिपि के अक्षरों की यात्रा के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी साथ ही टांकरी लिपि में अक्षरों का इस्तेमाल किस तरह से हुआ है और इसे किस तरह से पढ़ा और लिखा जाए। इस बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान उन्होंने सभी प्रशिक्षुओं को अपने-अपने नाम को किस तरह से और कैसे लिखना है इस बारे में पूरी जानकारी दी। इसके साथ-साथ बारहखड़ी, अंक को कैसे लिखें, महीनों के नाम किस तरह से लिखें और टांकरी लिपि में लेखन के अभ्यास के बारे में जानकारी प्रदान की। इस दौरान प्रशिक्षुओं में भी टांकरी लिपि प्रशिक्षण के प्रति खासा उत्साह देखा गया।

टांकरी लिपि प्रशिक्षण के दौरान लाहौल-स्पीति के वयोवृद्ध इतिहाकार तोबदन सहित सेवानिवृत्त नायब तहसीलदार हीरालाल ठाकुर भी इस अवसर पर विशेष रुप से उपस्थित रहे। कार्यशाला के दौरान इतिहासकार तोबदन ने प्रशिक्षण प्राप्त करने आए सभी प्रशिक्षुओं को टांकरी लिपि के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी और साथ ही टांकरी को लेकर अपने अनुभव को भी साझा किया। इस दौरान टांकरी लिपि सिखा रहे यतिन पंडित ने टांकरी लिपि में लिखे गए अभिलेखों को पढ़ना क्यों जरूरी है। इस बात पर भी सभी का ध्यान आकर्षित किया। (अनंत ज्ञान)

सोलन में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की धूम, मंदिरों में लगा भक्तों का तांता

भावना शांडिल , सोलन

श्री कृष्ण जन्माष्टमी का पर्व सोलन मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्रों में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। मंदिरों में दिन भर भक्तों का तांता लगा रहा। भक्तों ने उपवास रखकर श्रीकृष्ण को मिश्री मक्खन का प्रसाद चढ़ाया। सोलन के माल रोड में स्थित कृष्ण मंदिर को भी विशेष रूप से सजाया गया है, जहां सुबह से श्री कृष्ण की पूजा करने के लिए भक्तों का तांता लगा रहा। शहर के मंदिरों में भजन-कीर्तन का आयोजन भी किया गया, जो शाम आठ से 12 बजे तक चला।

हाउसिंग कॉलोनी स्थित महाकालेश्वर मंदिर में भी जन्माष्टमी के पर्व को लेकर भजन-कीर्तन का आयोजन किया गया। मंदिर में 1 सितंबर को भंडारे का आयोजन भी किया जाएगा। इसी तरह गंज बाजार स्थित सनातन धर्म मंदिर, राजगढ़ मार्ग पर स्थित हरि मंदिर में भी जन्माष्टमी के पर्व को लेकर रौनक रही। माल रोड स्थित श्री कृष्ण मंदिर के पुजारी ने बताया कि जन्माष्टमी के दिन मंदिर को फूलों और आम के पत्ते से सजाया गया। जन्माष्टमी के दिन मंदिर में शाम को कीर्तन का आयोजन किया गया, जिसमें कृष्ण भगत कृष्ण की भक्ति में लीन रहे, जिन भक्तों ने उपवास रखा उन्होंने मंदिर में ही भगवान श्री कृष्ण के जन्म के बाद उपवास खोला। वहीं, सोलन बाजार में भी जन्माष्टमी पर्व को लेकर रौनक देखने को मिली। पूरे बाजार में अलग-अलग दुकानों में राधा-कृष्ण के वस्त्र देखने को मिले। वहीं, बाजार में छोटे बच्चे कोई राधा तो कोई कृष्ण की वेशभूषा में नजर आए। (अनंत ज्ञान)

माल रोड सोलन स्थित राधा-कृष्ण मंदिर।

हाउसिंग कॉलोनी स्थित महाकालेश्वर मंदिर में जन्माष्टमी को लेकर सजाया गया मंदिर।

श्रीकृष्ण की लीलाओं का किया व्याख्यान

अनंत ज्ञान, राजगढ़

सनातन धर्म मंदिर राजगढ़ में कृष्ण जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिवस पर कृष्ण भगवान के प्राकटय दिवस पर भक्तों द्वारा नाचकर खूब उत्सव मनाया गया। कथावाचक आचार्य विजय भारद्वाज ने व्यास पीठ से कृष्ण भगवान की लीलाओं का व्याख्यान कर भक्तों को भाव विभोर किया।

भक्ति की तीन धाराएं विश्वास, संबंध और समर्पण है। इन तीन चीजों का समावेश जरूरी है। इसी प्रकार जीवन में कष्ट देने वाले तीन मूल कार्य काम, क्रोध और मोह से दूर रहना जरूरी है। उन्होंने आगे कहा कि हम जैसे कर्म करते हैं, वैसे ही फल की प्राप्ति होती है। इसलिए मनुष्य को चाहिए की वह शुभ कर्म कर इस मनुष्य देह को सफल व सार्थक बनाए। भक्ति, ज्ञान, वैराग्य और त्याग का संयोग ही भागवत है। कलयुग में हर प्राणी के लिए श्रीमद् भागवत कथा सर्वश्रेष्ठ है प्रार्थना एसी संस्कृति है, जिससे भगवान को प्राप्त किया जा सकता है।

राजगढ़ में आयोजित भागवत कथा सुनते भक्तजन।

हिंदू धर्म में देवी-देवताओं में सबसे ज्यादा श्रीकृष्ण की महिमा

अनंत ज्ञान, नाहन

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय नाहन में कृष्ण जन्माष्टमी के त्योहार पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बहन कुंजना सिंह ने उपस्थित सभी भाई-बहनों को कृष्ण जन्माष्टमी की बधाई देते हुए अपने कुछ अनुभव साझा किए।

केंद्र की संचालिका बीके रमा दीदी ने भी कार्यक्रम में आए सभी भाई-बहनों को कृष्ण जन्माष्टमी के पर्व की शुभकामनाएं दीं और कहा कि श्री कृष्ण जन्म से ही इतने महान थे, तो अवश्य उन्होंने पूर्व जन्म में कोई महान पुण्य किया होगा। श्री कृष्ण जन्म से ही महान थे क्योंकि श्री कृष्ण की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हैं, उनकी तरह हमें अपने मन को भी शुद्ध और पवित्र बनाना होगा। श्री कृष्ण जी में 64 से ज्यादा गुण थे। वह गुणों के धनी थे। बीके दीपशिखा दीदी ने जन्माष्टमी का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए कहा कि हिंदू धर्म में देवी-देवताओं में सबसे ज्यादा श्री कृष्ण की महिमा होती है। उनके हर एक अंग की प्रशंसा कमल के समान करते हैं।

इसका अर्थ है उनका हर करम दिव्य था। अगर उनके राज्य में हमको आना है, तो उनके जैसा बनना होगा। वह 16 कला संपूर्ण थे। हमें केवल श्री कृष्ण के गायन में ही मगन नहीं होना है, बल्कि उनके साथ संस्कार के मिलन की रास मनानी होगी।

न्यूज ब्रीफ

नेसंग के झरने के पास मिले शव की नहीं हुई पहचान

जीता सिंह नेगी, रिकांगपिओ। तीन रोज पूर्व 23 अगस्त को नेसंग गांव के क्योथांग स्थान पर झरने के पास मिले अज्ञात शव का अभी तक शिनाख्त नहीं हो पाया है। पुलिस ने शव के शिनाख्त के लिए फोटो सभी थानों सहित अन्य जनपदों और लोगों को दी गई हैं। शव का पोस्टमार्टम आईजीएमसी शिमला में करवाया गया। शव के शिनाख्त के लिए शव को क्षेत्रीय चिकित्सालय रिकांगपिओ के शव गृह में रखा गया है। पुलिस थाना पूह से मिली जानकारी के मुताबिक 23 को पूह थाना प्रभारी, मुख्य आरक्षी व अन्य दल गश्त पर थे। शाम करीब 4 बजे प्रधान नेसंग से सूचना मिली कि नेसंग गांव में झरने के पास एक अज्ञात व्यक्ति मृत पड़ा है, सूचना मिलते ही हेड कांस्टेबल मंगलेश कुमरी, पुलिस स्टाफ मौके पर पहुंचे व स्थानीय लोगों की मदद से अज्ञात शव को पोस्टमार्टम के लिए क्षेत्रिय चिकित्सालय रिकांगपिओ लाया गया, लेकिन अब तक शव का शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस के मुताबिक मृतक की उम्र करीब 35 साल, ऊंचाई 5 फुट चार इंच, काले रंग का पजामा, धूल भरे रंग की टी-शर्ट, सिर या चेहरे पर मफलर बांधा है। पुलिस ने लोगों से अपील की है कि जिस किसी को भी सुराग मिले तो दूरभाष नंबर-01785-232420 पर सूचित कर सकते हैं।

बंगाल वारियर्स की टीम में चयनित प्रवीण का स्वागत

दाड़लाघाट। पीएम श्री राजकीय उत्कृष्ट माध्यमिक विद्यालय चंडी (अर्की) विद्यालय में प्रवीण ठाकुर को विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य ओम प्रकाश शर्मा ने शाल व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। अध्यापक राकेश रघुवंशी ने बताया कि प्रो कबड्डी में सीजन-11 के लिए बंगाल वारियर्स की टीम में स्थान पाने के बाद प्रवीण ठाकुर अपने विद्यालय पहुंचे। विद्यालय में सभी विद्यार्थियों व पूरे विद्यालय परिवार की तरफ से उनका भव्य स्वागत हुआ। इस अवसर पर प्रवीण ठाकुर ने कहा कि मेरी प्लस-टू तक पढ़ाई इसी विद्यालय से हुई है। मेरा बचपन यहीं बीता है। उन्होंने सभी अध्यापकों को याद करते हुए अपनी पुरानी यादें ताजा की। ओम प्रकाश शर्मा ने कहा कि यह विद्यालय के लिए बड़े गर्व की बात है कि इस तरह के होनहार विद्यार्थी, यहां से निकले हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर अपना नाम, विद्यालय का नाम और उस छोटे से क्षेत्र का नाम रोशन किया है।

शूलिनी और लिवरपूल के बीच अहम समझौता

सोलन। यूरोप में ऑनलाइन पोस्टग्रेजुएट डिग्री देने वाली अग्रणी प्रदाताओं में से एक ब्रिटेन की लिवरपूल यूनिवर्सिटी ने शूलिनी यूनिवर्सिटी के साथ एक एमओयू साइन किया है। एमओयू पर लिवरपूल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर टिम जॉस और शूलिनी यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला ने हस्ताक्षर किए। यह एमओयू वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान और सामग्री, संयुक्त अनुसंधान गतिविधियों, संकाय और प्रशासनिक कर्मचारियों के आदान-प्रदान, छात्रों के आदान-प्रदान और पारस्परिक हित की अन्य गतिविधियों के आदान-प्रदान के प्रावधान के लिए काफी अहम है। वाइस चांसलर प्रोफेसर अतुल खोसला ने कहा कि समझौता यूनिवर्सिटी के छात्रों और कर्मचारियों को अवसर प्रदान करने में काफी मददगार साबित होगा। एमओयू को मौजूदा शैक्षणिक वर्ष से ही लागू करने की कोशिश की जाएगी। इस वक्त यूके में मौजूद प्रोफेसर खोसला ने कहा कि वह अनुसंधान, छात्रों और संकाय आदान-प्रदान के क्षेत्र में कुछ और संस्थानों के साथ सहयोग की खोज कर रहे हैं।

सिरमौर में डेंगू का कहर, डॉक्टरों की कमी

नाहन। सिरमौर में डेंगू व अन्य जल जनीत बीमारियां से बढ़ते मरीजों को लेकर स्थानीय लोगों ने स्वास्थ्य मंत्री से गहन चर्चा कर इसके समाधान के लिए निवेदन किया। साथ ही कैबिनेट मंत्री हर्षवर्धन चौहान के गांव व आसपास के गांव में 2017 से खाली पड़े स्वास्थ्य केंद्रों में तत्काल प्रभाव से डॉक्टरों की नियक्ति की मांग की। शिलाई में स्वास्थ्य विभाग के सैकड़ों पद खाली पड़े हैं। स्वास्थ्य विभाग में डॉक्टर न होने से लोगों को मामूली बुखार में भी पांवटा, नाहन या चंडीगढ़ का रुख करना पड़ता है। कई लोग इलाज न मिलने के कारण रास्ते में ही दम तोड़ देते हैं।

दाड़ला इकाई के प्रधान बने गोपाल हरनोट

दाड़लाघाट। हिमाचल पर्यटन विकास निगम दाड़ला इकाई की बैठक की अध्यक्षता प्रदेशाध्यक्ष हुक्म राम ने की। बैठक में बाघल होटल दाड़ला इकाई के त्रिवर्षीय चुनाव हुए। इसमें प्रधान गोपाल हरनोट को चुना गया। इसके अलावा उपप्रधान मेहर चंद, सचिव दीपक ठाकुर, कोषाध्यक्ष करन ठाकुर, प्रचारक सचिव आशीष भारती, प्रेस सचिव चमन लाल, सलाहकार लेखराम ठाकुर को चुना गया। कार्यकारिणी सदस्यों में नेकराम, रत्नी देवी, बलि राम, गोपाल ठाकुर, ओगेश ठाकुर व जसवंत कौर को कार्यकारिणी में शामिल किया।

राजगढ़ अस्पताल में रोगियों को बांटे फल

राजगढ़। जिला कांग्रेस सेवादल ने सेवादल के संस्थापक एनएस हार्डिकर की 49वीं पुण्यतिथि राजगढ़ में मनाई। जिला सेवा कांग्रेस ने नागरिक अस्पताल राजगढ़ में रोगियों को फलों को वितरण किया। कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस सेवादल के अध्यक्ष अनुराग शर्मा इस अवसर विशेष रूप से उपस्थित रहे। अनुराग शर्मा ने कहा कि इससे पूर्व कांग्रेस सेवादल की बैठक ली गई, जिसमें सेवादल संस्थापक के ड्यूटी, डिवोशन व डिसिप्लिन को अपनाने का संकल्प लिया। बैठक में दो वर्षों के प्रदेश सरकार के विकास कार्यों की गाथा और केन्द्र केंद्र सरकार की जन विरोधी नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य प्रारंभ किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पिछले लगभग दो सालों से कांग्रेस की सरकार द्वारा समाज के हर वर्ग के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं चलाई जा रही हैं।

गिरिपार क्षेत्र के पहले डीएसपी का निधन

सोलन। सिरमौर के गिरिपार क्षेत्र के पहले डीएसपी रहे कंठी राम भारद्वाज का बीती रात लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे 88 वर्ष के थे। सोलन के न्यू कथेड़ स्थित आवास पर तबीयत बिगडने के बाद उन्हें दो दिन पहले सोलन के एमएमयू अस्पताल में भर्ती करवाया गया था, जहां बीती रात उन्होंने अंतिम सांस ली। सोमवार को दद्दाहू के त्रिवेणी संगम में उनका अंतिम संस्कार किया गया। इस मौके पर सैकड़ों लोगों ने उन्हें अंतिम विदाई दी।

एमसी ने सलोगड़ा डंपिंग साइट से निकाला 8400 टन आरडीएफ

अभी तक करीब 70 हजार टन पुराने कूड़े को किया प्रोसेस, नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल को भेजी जाएगी स्टेटस रिपोर्ट

आर मोहन चौहान, सोलन

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के दिशा-निर्देश पर नेशनल हाईवे-5 स्थित सलोगड़ा में तीन दशक से डंप सोलन शहर के कूड़े की प्रोसेसिंग का कार्य अब अंतिम चरण में पहुंच गया है।

यहां अभी तक करीब 70 हजार टन कूड़े की प्रोसेसिंग कर करीब 8400 टन आरडीएफ निकाला जा चुका है। इस कार्य में लगी कंपनी का टेंडर जून-2024 में पूरा होना था, लेकिन मौके पर अनुमान से अधिक पुराना कूड़ा यानी लिगेसी वेस्ट निकलने के चलते तीन महीने का अतिरिक्त समय दिया गया है। कंपनी पर आरडीएफ (रिफ्यूज्ड डेराइविड फ्यूल) को ठिकाने लगाने का भी जिम्मा है। कंपनी आरडीएफ को गाजियाबाद पानीपथ और चितौड़गढ़ भेजने का दावा कर रही है। पुराने कूड़े की प्रोसेसिंग से यहां मिट्टी युक्त प्लास्टिक का ढेर काफी मात्रा में कम हो गया है।

कूड़े के ढेर के कम होने से बदबू भी कम हो जाएगी और पर्यावरण पर भी इसका बुरा असर नहीं पड़ेगा। कूड़े को प्रोसेस कर निगम ने रिफ्यूज्ड डेराइविड फ्यूल (आरडीएफ) निकाला गया है। अभी तक ठिकाने लगाए गए कूड़े में से 8400 टन आरडीएफ प्रोसेस किया गया है। इसको ठेकेदार उन उद्योग तक पहुंचाएगा, जहां इसका उपयोग होता है। वर्तमान में सलोगड़ा डंपिंग साइड पर 4 हजार टन मिट्टी युक्त प्लास्टिक कूड़ा रह गया है, जिसे नगर निगम की टीम रोजाना प्रोसेस कर ट्रक के माध्यम से भेज रही है, जबकि 24 से 25 टन कूड़ा शहर से सीधा प्रोसेस कर ठेकेदार ट्रकों में भरकर ठिकाने लगा रहा है। (अनंत ज्ञान)

सलोगड़ा डंपिंग साइड में की गई पुराने कूड़े की प्रोसेसिंग।

तीन दशक तक डंप हुआ शहर का कूड़ा

सलोगड़ा डंपिंग साइड में पिछले करीब तीन दशक से सोलन शहर का हजारों टन पुराना कूड़ा डंप हुआ है। एनजीटी के निर्देशानुसार निगम ने सनटन लाइफ से करार किया है। एनजीटी ने साइट को पूरी तरह साफ कर यहां पर पेड़-पौधे लगाने और प्रदूषण मुक्त करने के निर्देश दिए हैं। जगह की कमी से पुराने कूड़े को सेग्रीगेट किए जा रहे ओडीएफ को स्टॉक करना मुश्किल हो रहा है। कंपनी आरडीएफ की मांग के बाद ही संबंधित कंपनियों को भेज पाती है।

स्थानीय लोग जल्द चाहते हैं निजात

नगर निगम से की करार के मुताबिक कंपनी को मई-2025 तक इस कार्य को पूरा करना है। मौके पर अधिक मात्रा में लिगेसी वैस्ट निकालने से बदबू फैल रही है, जिस पर प्रदुषण बोर्ड ने आपत्ति जताई है। स्थानीय लोग भी इससे चिंतित हैं। ऐसे में कंपनी ने जरूरत के मुताबिक ही लिगेसी वेट को उठाने निर्णय लिया है। इससे यहां स्टॉक किए गए आरडीएफ को उठाना भी आसान होगा। इसके अलावा कंपनी ने शहर से रोज निकल रहे 20 से 25 टन कूड़े को उठाने की जिम्मेदारी ली है।

सलोगड़ा स्थित डंपिंग साइड में मौजूद कूड़े में से अधिकतर कूड़ा उठा दिया गया है। इन दिनों आरडीएफ मूवमेंट चल रही है। जल्द ही डंपिंग साइट खाली हो जाएगी।

एकता काण्टा, कमिश्नर, सोलन नगर निगम

कूड़े के ढेर से फैल रही थी गंदगी

सलोगड़ा में डंप कूड़े से यह कूड़े का पहाड़ बन गया था, जिससे यहां गंदगी व बदबू फैलने के साथ पर्यावरण और प्राकृतिक जलस्रोत भी दूषित हो रहे थे। बदबू फैलने से हाईवे से गुजरते यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ता था। बरसात में कूड़े का पानी जल स्रोत के पानी को दूषित कर रहा था। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने संज्ञान लिया और डंपिंग साइट से पूरा कूड़ा उठाने के निर्देश निगम को दिए हैं। यह कार्य पूरा होते ही इसकी स्टेटस रिपोर्ट एनजीटी को सौंपी जाएगी।

कैसे बनाया जाता है आरडीएफ

डंपिंग साइट पर पड़े कूड़े को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर या काटकर और हाइड्रेट कर आरडीएफ में बदला जाता है। इसका इस्तेमाल कई उद्योग में फासिल फ्यूल के विकल्प के तौर पर किया जाता है। कई लिगेसी वेस्ट सीमेंट उद्योग भी आरडीएफ का प्रयोग करते हैं। कंपनी का दावा है कि बचे हुए लिगेसी वेस्ट को जल्द उठा लिया जाएगा। इसके बाद क्षेत्र को स्वच्छ और सुंदर बनाने का कार्य होगा। साथ ही स्थानीय लोगों को भी बरसो से फैली गंदगी से निजात मिलेगी।

को-ऑपरेटिव बैंक नौहराधार का सहायक प्रबंधक गिरफ्तार

अनंत ज्ञान, नाहन

सिरमौर जिले के नौहराधार स्थित हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक की शाखा के सहायक प्रबंधक ज्योति प्रकाश को करोड़ों की धोखाधड़ी मामले में पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है।

इस मामले की जांच अभी जारी है। पुलिस आगामी कार्रवाई में जुटी है। पुलिस के अनुसार आरोपी ज्योति प्रकाश ने अपनी शक्तियों का दुरुपयोग करते हुए किसान क्रेडिट कार्ड के फर्जी खाते खोले और लगभग 4.02 करोड़ रुपए की राशि का हेर-फेर (गबन) किया। इस राशि को ज्योति प्रकाश ने विभिन्न टर्म लोन बैंक्स आउन डिपॉजिट व कैश क्रेडिट लिमिट बैंक आउन डिपॉजिट के खातों में ट्रांसफर करके उन्हें बंद कर दिया। इस बहुचर्चित मामले में राज्य सहकारी बैंक के जिला प्रबंधक प्रियदर्शन पांडे, नौहराधार शाखा की प्रबंधक प्रियंका और कार्यकारी सहायक विवेक प्रकाश ने पुलिस थाना संगडाह में शिकायत दर्ज करवाई थी। जांच के दौरान पुलिस ने पाया कि ज्योति प्रकाश ने लोगों की एफडीआर और चेक बुक अपने पास रखी थी और लोगों में इतना विश्वास पैदा कर दिया था कि उस पर कोई शक नहीं कर सके। इस मामले में पुलिस ने एक विशेष जांच दल का गठन किया है, जो मामले की जांच कर रही है। एसएसपी सिरमौर रमन कुमार मीणा ने बताया कि तफ्तीश के दौरान आरोपी ज्योति प्रकाश पुत्र प्रदीप कुमार निवासी गांव भूईरा तहसील व थाना राजगढ़ (सिरमौर) के विभिन्न बैंकों में खुलवाए खातों की जानकारी के लिए पत्राचार किया गया और लेन-देन वाले खातों को फ्रीज कर गहनता से जांच की गई।

सरकार पर लगाया अनदेखी का आरोप

राजगढ़। पेंशनर्स वेल्फेयर एसोसिएशन राजगढ़ ने पेंशनर्स को एरियर न देने के लिए सरकार पर उनकी अनदेखी का आरोप लगाया। राज्य कार्यकारिणी के वरिष्ठ उपाध्यक्ष हरिदत्त शर्मा, राजगढ़ इकाई के अध्यक्ष विजय भारद्वाज, महासचिव कृष्ण दत्त शर्मा व प्रेस सचिव रविदत्त भारद्वाज ने राज्य सरकार पर पेंशनर्स की अनदेखी का आरोप लगाया। सरकार ने उन सेवानिवृत्त कर्मचारियों, जिन्होंने अपना सारा जीवन प्रदेश की प्रगति के लिए समर्पित किया। मुख्यमंत्री सुक्खू ने 15 अगस्त को मात्र 75 वर्ष से ऊपर वाले पेंशनर्स को छठे वेतन आयोग का एरियर देने की घोषणा की थी, जो कि हास्यप्रद है, क्योंकि इससे बहुत ही कम लोगों को लाभ मिलेगा और अधिकतर कर्मी वंचित रह जाएंगे। राज्य अध्यक्ष आत्मा राम शर्मा ने सीएम से शीघ्र वार्ता कर जेसीसी की तिथि तय करने और पेंशनर्स की सारी देनदारियां एकमुश्त देने की मांग की है।

सरकार के मानकों पर पूरा नहीं उतर रहा यूनिवर्सल कार्टन

अनंत ज्ञान, परवाणू

सेब सीजन में इस बार बागवानों के लिए सरकार की तरफ से निर्धारित कार्टन की समस्या शुरू हो गई है। सेब सीजन से पहले ही सरकार ने सेब की पैकिंग के लिए यूनिवर्सल कार्टन अनिवार्य कर दिया था, जिसमें केवल 20 से 22 किलो सेब निर्धारित किए गए थे।

वहीं, टेलीस्कोपिक कार्टन में 26 से 32 किलो सेब पैक किया जाता था। परंतु सरकार के फैसले से उन बागवानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा, जिन्होंने सेब सीजन से पहले ही भारी मात्रा में टेलीस्कोपिक कार्टन की खरीद कर रखी थी। सरकार के फैसले के कारण उन्हें अपना माल हिमाचल से बाहर की मंडियों में बेचने को मजबूर होना पड़ रहा है। इस बारे में कोटखाई के बागवान प्रकाश गाजटा ने सरकार से मांग करते हुए कहा कि यदि सरकार द्वारा यूनिवर्सल कार्टन में भी मानकों से अधिक सेब लाया जा रहा है, तो सरकार ने टेलीस्कोपिक कार्टन पर रोक क्यों लगाई। टेलीस्कोपिक कार्टन में भी 26 से 32 किलो सेब आता है तथा पेटियां भी कम लगती हैं। वहीं, यूनिवर्सल कार्टन में भी 26 से 27 किलो तक सेब आ रहा है। ऐसे में बागवानों को दुगना नुकसान हो रहा है।

शिकायत संज्ञान में नहीं

कार्टन को लेकर उठ रहे विवाद की मेरे पास कोई जानकारी नहीं है यदि ऐसा कुछ है, तो इसकी जांच होगी इस बारे में एपीएमसी द्वारा भी कोई जानकारी या शिकायत मेरे तक नहीं आई है।

रोशन ठाकुर अध्यक्ष एपीएमसी सोलन।

सद्भावना सम्मेलन को लेकर बैठक

दाड़लाघाट। हरिजन सेवक संघ हिमाचल प्रदेश की कार्यकारिणी की बैठक शिव मंदिर दाड़लाघाट में राज्य प्रतिनिधि एवं अध्यक्ष चुन्नीलाल बंसल की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य 29 सितंबर को आयोजित होने वाले पहले राज्य स्तरीय सद्भावना सम्मेलन की तैयारियों पर विस्तार से चर्चा करना था। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य जात-पात, ऊंच-नीच और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों को हिमाचल प्रदेश से समाप्त करने की पहल करना है। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया कि इस सम्मेलन के मुख्यातिथि के रूप में हरिजन सेवक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. शंकर कुमार सान्याल को आमंत्रित किया जाएगा। विशेष अतिथियों के नामों की घोषणा बाद में की जाएगी।

रास्ता भटके चंडीगढ़ के श्रद्धालु को किया रेस्क्यू

अनंत ज्ञान, नाहन

सिरमौर की सबसे ऊंची चोटी चूड़धार में चंडीगढ़ का एक श्रद्धालु अचानक रास्ता भटक गया, जहां कई घंटों तक वह चूड़धार चोटी के ठीक नीचे बड़ी चट्टानों के बीच भटकता रहा।

जानकारी के मुताबिक चंडीगढ़ निवासी अंकुश अपने साथी सतविंदर सूद निवासी सोलन के साथ चूड़धार यात्रा पर जा रहा था। नौहराधार से पैदल यात्रा के दौरान तीसरी नामक स्थान पर अंकुश अपने साथी से पीछे रह गया। सतविंदर को लगा कि अंकुश उसके पीछे ही आराम से आ रहा होगा। इस बीच सतविंदर चूड़धार पहुंच गया, यहां लंबा इंतजार करने के बाद भी जब अंकुश चूड़धार नहीं पहुंचा, तो वह चिंतित हो गया। रात करीब नौ बजे सतविंदर का अंकुश से फोन पर संपर्क हुआ। उसने बताया कि वह रास्ता भटक चुका है और कहीं दूर जंगल में बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच फंस गया है। इसकी सूचना तुरंत हेल्पलाइन नंबर 112 पर भी दी गई, जिस पर थाना चौपाल की ओर से लापता अंकुश की मोबाइल लोकेशन चूड़धार में ड्यूटी पर तैनात आरक्षी अखिल को उपलब्ध करवाई। काफी समय तक तलाशने के बाद आरक्षी अखिल ने जब भोले शंकर का जयकारा लगाया, तो जंगल से अंकुश के जयकारे की आवाज आई। उसकी आवाज सुनकर वह मौके पर पहुंच गए। इसके बाद अंकुश को बड़ी मुश्किल से जंगल के रास्ते से रात करीब डेढ़ बजे चूड़धार पहुंचाया गया।

योग मानसिक कमियों को दूर करने में सहायक : डॉ. राजेश

अनंत ज्ञान ब्यूरो, सोलन

योग निरोग रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योग में प्रतिभाओं को मंच देने के उद्देश्य से जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन द्वारा सोलन में चौथे योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें करीब 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया व योग की क्रियाओं को दर्शाया।

इस दौरान भाजपा नेता डॉ. राजेश कश्यप भी विशेष रूप से उपस्थित रहे। जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अमर सिंह ठाकुर ने बताया कि योग पर एक प्रतियोगिता करवाई गई, जिसमें 60 बच्चों ने भाग लिया। योग निरोग रहने के लिए अति आवश्यक है। वहीं, भाजपा नेता एवं भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य डॉ. राजेश कश्यप ने कहा कि आज के समय में योग बहुत जरूरी है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को समय रहते योग करना चाहिए। योग शारीरिक एवं मानसिक कमियों को दूर करने के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होता है।

जिला योगासन स्पोर्ट्स एसोसिएशन की आयोजित योग प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागी।

आयोजन

औद्योगिक इकाइयों की बिजली दरों में दो वर्ष हुई 50 फीसदी बढ़ोतरी इतिहास में सबसे बड़ी बढ़ोतरी : इंडस्ट्री

सरकार से ज्यादा रोजगार दे रहे वर्तमान में चल रहे उद्योग : गुलेरिया

अनंत ज्ञान, बीबीएन

हिमाचल प्रदेश के सबसे बड़े उद्योग संगठन बीबीएन इंडस्ट्रीज एसोसिएशन ने प्रदेश सरकार से एक रुपए प्रति यूनिट की सब्सिडी को वापस न लेने की गुहार लगाई है।

सोमवार को बीबीएनआईए कार्यालय में एसोसिएशन की ओर से प्रेस वार्ता की गई, जिसमें उद्योगपतियों ने भारी भरकम बिजली दर को लेकर चिंता जाहिर की। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने कहा कि राज्य के उद्योग अब बिजली बढ़ोतरी सहन करने के पक्ष में नहीं हैं इसलिए अब इसमें किसी भी तरह की वृद्धि न की जाए, जब से प्रदेश में नई सरकार बनी है, तब से लगभग 2 रुपए प्रति यूनिट बिजली की वृद्धि हो चुकी है। प्रदेश सरकार ने 1 अप्रैल, 2024 को बिजली बोर्ड के कहने पर कारखानों की बिजली पर जो एक रुपए प्रति यूनिट वृद्धि की थी, उसे उस समय लागू नहीं किया गया था और बाकायदा राज्य सरकार ने उस यूनिट पर सब्सिडी देने की घोषणा की थी, ताकि निवेश प्रभावित न हो। एसोसिएशन के मुख्य संरक्षक राजेंद्र गुलेरिया, वरिष्ठ उपप्रधान अनुराग पुरी, सलाहकार शैलेश अग्रवाल आदि ने कहा कि पहले ही विभिन्न प्रकार के टैक्सों से राज्य के उद्योग जगत की कमर टूट पड़ी है। जीएसटी आने पर जो टैक्स उसमें मर्ज हो जाने चाहिए थे, वो अभी लगे हुए हैं, जैसे की एजीटी व सीजीसीआर है। इसके अलावा हमें बहुत अधिक मालभाड़ बाजार की तुलना में देना पड़ रहा है, जो कि तर्कसंगत नहीं है। संस्था के बिजली कमेटी के संचालक शैलेश अग्रवाल ने कहा कि दो साल में 50 फीसदी दाम बिजली के बढ़ चुके हैं और अगर अब दो सितंबर को मुख्यमंत्री की उद्योगमंत्री के साथ होने वाली बैठक में एक रुपए सब्सिडी, जो कि उद्योगों को दी जा रही है, अगर समाप्त हो जाती है, तो हमारी उत्पादन लागत काफी बढ़ जाएगी और यहां पर बिजली पंजाब के बराबर और हरियाणा तथा उत्तराखंड से ज्यादा महंगी हो जाएगी।

सात लाख को दे रहे रोजगार

महासचिव यशवंत गुलेरिया ने कहा कि वर्तमान में हमने जो आधिकारिक डाटा ईएसआईसी से लिया है उसके अनुसार लगभग 7 लाख लोगों को रोजगार मिल रहा है, जबकि सरकार मात्र 2 से अढ़ाई लाख तक रोजगार दे रही है, जिसके बाद भी इंडस्ट्री के बारे में सोचा नहीं जा रहा है। गुलेरिया ने कहा कि वर्तमान में राज्य सरकार की ओर से कोई भी रियायत पैकेज या आकर्षण और सब्सिडी नहीं है, अगर बिजली के दाम बढ़ते हैं तो यहां से पंजाब व हरियाणा के बरवाला में पलायन होना तय है।

60 फीसदी खपत कर रही इंडस्ट्री : जैन

उपाध्यक्ष दिनेश जैन ने कहा कि हम राज्य में उत्पादित हो रही बिजली का 60 फीसदी प्रयोग करते हैं और हम बोर्ड के ग्राहक हैं और अगर उद्योग ही नहीं रहेंगे, तो बिजली कौन खरीदेगा। बिजली बोर्ड को अपना स्व. अवलोकन करना चाहिए और अपनी कर्मचारी लागत को कम करना चाहिए, जिसमें कुल अर्जित राजस्व का 33 फीसदी वो कर्मचारियों पर खर्च करता है। वहीं, उत्तराखंड में यह 6 फीसदी और पंजाब में 15 फीसदी है।

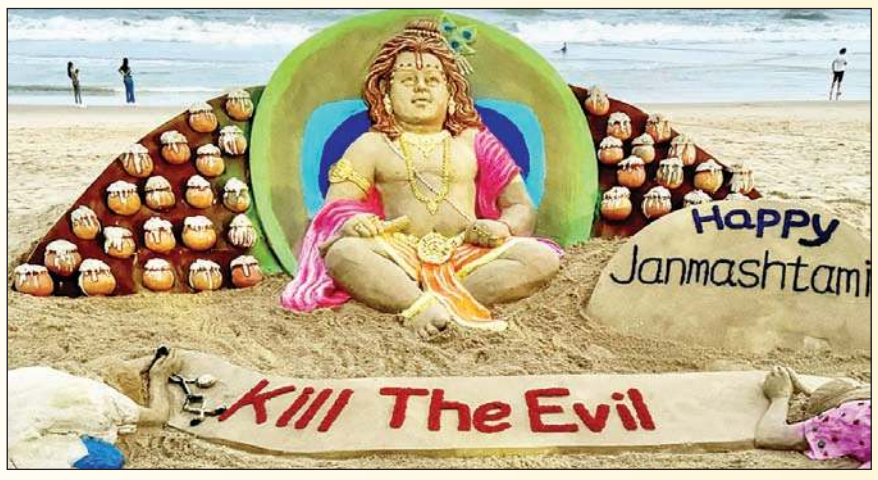

देशभर में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई गई। देश के विभिन्न मंदिरों में खास तैयारियां की गई थी। सुबह से ही श्रद्धालुजन मंदिर में कान्हा के दर्शन करने के लिए आए। भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा और वृंदावन में जन्माष्टमी के भव्य तैयारियां की गई थी।

न्यूज ब्रीफ

इमिग्रेशन कंपनी को लौटाने होंगे रुपए

अनंत ज्ञान, चंडीगढ़। जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने वर्क परमिट वीजा का झासा देकर ठगी करने वाली इमिग्रेशन कंपनी ग्लोबल कंसल्टेंट को सेवा में दोषी करार दिया है। आयोग ने इमिग्रेशन कंपनी को शिकायतकर्ता को 1.13 लाख रुपए 9 प्रतिशत ब्याज समेत लौटाने के निर्देश दिए हैं। वहीं, मानसिक उत्पीड़न के रूप में 15 हजार व केस में खर्च राशि 10 हजार रुपए देने के निर्देश दिए हैं। हिमाचल प्रदेश के ऊना निवासी राजेश राणा ने आयोग को दी शिकायत में बताया कि इमिग्रेशन कंपनी का एक विज्ञापन देखकर उनकी संपर्क में आया था। इमिग्रेशन कंपनी ने कनाडा का वर्क परमिट ऑफर किया। मार्च, 2023 में संपर्क में आने के बाद सवा लाख रुपए जमा करवा दिए। इसके बाद लंबा समय बीत जाने के बावजूद कोई उत्तर नहीं आया। मांग करने पर पैसे भी नहीं लौटाए गए। जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने कंपनी को हिमाचल निवासी को 1.13 लाख रुपए 9 प्रतिशत ब्याज समेत लौटाने के निर्देश दिए हैं।

यूजी कोर्सों में दाखिले के लिए अंतिम तारीख बढ़ाई

अनंत ज्ञान, पंचकूला। शहर के कॉलेजों में यूजी कोर्सों में दाखिले के लिए अंतिम तारीख अब 31 अगस्त तक बढ़ा दी गई है। वहीं, पीजी कोर्स के दाखिले के लिए दोबारा पोर्टल खुलने का इंतजार विद्यार्थी कर रहे हैं। उनके लिए भी पंचकूला उच्च शिक्षा विभाग की ओर से जल्द दोबारा पोर्टल खोला जाएगा। सेक्टर-1 पीजी कॉलेज में यूजी कोर्स में बीए, बीकॉम, बीएससी की सीटें अभी तक खाली हैं। पंचकूला उच्च शिक्षा विभाग की डायरेक्टर रीटा गुप्ता ने बताया कि बीए की 88, बीकॉम की 28, बीएमसी की 8, बीएससी मेडिकल की 27 सीटें, बीएससी नॉन मेडिकल की 40 सीटों पर दाखिला होना है। इसके अलावा बीए इग्लिश ऑनर्स में 40 सीटें, बीए भूगोल ऑनर्स में 31 सीटें अभी तक खाली हैं। जिन विद्यार्थियों को दाखिला लेना है, वे अप्लाई कर सकते हैं।

शिरोमणि अकाली दल के नेता डिंपी ढिल्लों ने पार्टी छोड़ी

चंडीगढ़। शिरोमणि अकाली दल (शिअद) के नेता हरदीप सिंह डिंपी ढिल्लों ने रविवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया। माना जा रहा है कि वह गिद्दड़बाहा विधानसभा उपचुनाव के लिए पार्टी का उम्मीदवार नहीं बनाए जाने से नाराज थे। हालांकि, शिअद ने ढिल्लों से पार्टी के खिलाफ दुष्प्रचार से गुमराह न होने का आग्रह किया और कहा कि वह आगामी उपचुनाव के लिए उनका पूरा समर्थन करता है। शिअद नेताओं के एक वर्ग के विद्रोह के बीच ढिल्लों ने पार्टी से इस्तीफा दिया है। पार्टी प्रमुख सुखबीर सिंह बादल के करीबी माने जाने वाले ढिल्लों गिद्दड़बाहा विधानसभा सीट के लिए पार्टी के निर्वाचन क्षेत्र प्रभारी थे और वह उपचुनाव में उम्मीदवार बनना चाहते थे। ढिल्लों ने 2017 और 2022 में गिद्दड़बाहा विधानसभा सीट से चुनाव लड़ा था, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। 2022 के विधानसभा चुनाव में वह कांग्रेस उम्मीदवार अमरिंदर सिंह राजा वडिंग से लगभग 1,300 मतों के अंतर से हार गए थे। वडिंग के लुधियाना से लोकसभा सदस्य निर्वाचित होने के बाद गिद्दड़बाहा विधानसभा सीट पर उपचुनाव होने हैं। हालांकि ढिल्लों ने कहा कि वह अपने समर्थकों से परामर्श के बाद अपनी अगली रणनीति की घोषणा करेंगे, लेकिन ऐसी अटकलें हैं कि वह आम आदमी पार्टी (आप) में शामिल हो सकते हैं।

दिल्ली में ट्रक ने 5 लोगों को कुचला, 3 की मौत

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के शास्त्री पार्क इलाके में सोमवार को तड़के एक कैंटर ट्रक ने फुटपाथ पर सो रहे पांच लोगों को कथित तौर पर कुचल दिया, जिससे उनमें से तीन व्यक्तियों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि कथित घटना शास्त्री पार्क मेट्रो स्टेशन के पास तरबूज बाजार में सुबह करीब साढ़े चार बजे हुई। मालवाहक वाहन सीलमपुर से आयरन ब्रिज की ओर आ रहा था, जो पुल पर बीच में 'डिवाइडर' पर चढ़ गया और उसने फुटपाथ पर सो रहे पांच लोगों को कुचल दिया। दुर्घटना के बाद ट्रक चालक वाहन छोड़कर मौके से फरार हो गया। पीड़ितों को जग प्रवेश चंद्र अस्पताल ले जाया गया, जहां तीन लोगों को मृत घोषित कर दिया गया। फिलहाल उनकी पहचान नहीं हो पाई है।

मालवाहक जहाज डूबा, 11 सदस्य बचाए

कोलकाता। भारतीय तटरक्षक ने कोलकाता से पोर्ट ब्लेयर जा रहे मालवाहक जहाज एमवी आईटीटी पुमा से चालक दल के 11 सदस्यों को रविवार रात को सफलतापूर्वक बचाया। अधिकारियों ने बताया कि यह जहाज खराब मौसम के कारण सागर द्वीप पर 70 समुद्री मील दक्षिण में डूब गया। तटरक्षक बल के एक अधिकारी ने सोमवार को बताया कि चालक दल के तीन सदस्य अब भी लापता हैं। तटरक्षक बल के एक प्रवक्ता ने बताया कि रात को एक अभूतपूर्व अभियान में तटरक्षक कर्मियों ने समुद्री हवा में चलाए गए एक समन्वित अभियान में 11 लोगों को बचाया। एमवी आईटीटी पुमा सागर द्वीप से 70 समुद्री मील दक्षिण में डूब गया।

जाम्बिया में खदान धंसने से 8 लोगों की मौत

लुसाका। जाम्बिया के लुसाका प्रांत के चोंगवे जिले में एक बजरी खदान ढहने से कम से कम आठ खनिकों की मौत हो गई। स्थानीय पुलिस ने रविवार को यह जानकारी दी। पुलिस प्रवक्ता, राय हामूंगा ने कहा कि यह दुर्घटना रविवार सुबह हुई जब श्रमिकों ने बजरी लोड करना समाप्त कर दिया था। उन्होंने कहा कि बचाए गए चालक ने पुलिस को सूचित किया कि घटनास्थल पर नौ से ज्यादा लोग थे। प्रवक्ता ने बताया कि बचाव दल आठ शवों को निकालने में सफल रहा है जबकि अन्य पीड़ितों की तलाश जारी है।

सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के पढ़ने पर बैन

तालिबान। तालिबान में पिछले 3 साल से अफगानिस्तान में तालिबानी सरकार ने महिलाओं पर अत्याचार और प्रतिबंध लगातार बढ़ाए हैं। अब तालिबानी सरकार ने हाल ही में एक ऐसा नियम बनाया है, जिसमें महिलाओं को सार्वजनिक रूप से गाने या पढ़ने से रोक दिया है। यह नया कानून तालिबान के नेता हिबतुल्ला अख्युंदजादा ज्यादा ने बनाया है। इस नए कानून में महिलाओं को सार्वजनिक स्थानों पर अपने शरीर के साथ-साथ चेहरे को भी ढकना होगाद्ध इस नए कानून के तहत महिलाओं की आवाज को निजी माना गया है और कहा गया है कि इसे सार्वजनिक रूप से सुनने की अनुमति नहीं है।

कांग्रेस सांसद वसंत चव्हाण का निधन

नांदेड़। महाराष्ट्र की नांदेड़ लोकसभा सीट से कांग्रेस सांसद वसंत चव्हाण का लंबी बीमारी के बाद सोमवार को हैदराबाद के एक निजी अस्पताल में निधन हो गया। पार्टी सूत्रों ने बताया कि 69 वर्षीय चव्हाण ने सुबह करीब चार बजे अंतिम सांस ली। वह पिछले सप्ताह से किडनी संबंधी समस्या का इलाज करा रहे थे। चव्हाण ने इस साल हुए लोकसभा चुनाव में अस्वस्थ रहने और इलाके के रसूखदार नेता एवं पूर्व मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण के भाजपा में शामिल होने के बावजूद जीत हासिल की थी। उन्होंने भाजपा के उम्मीदवार प्रताप पाटिल चिखलीकर को पराजित किया था। चिखलीकर पिछली लोकसभा में नांदेड़ से सांसद थे।

मुख्यमंत्री मान ने टी-शर्ट और लोगो किया लॉन्च

जगदीश शर्मा, चंडीगढ़

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान ने 29 अगस्त से शुरू होने वाले 'खेडां वतन पंजाब दियां' के तीसरे सीजन के लिए सोमवार को टी-शर्ट और लोगो लॉन्च किया। लोगो और टी-शर्ट को लॉन्च करते हुए मुख्यमंत्री मान ने कहा कि हॉकी के जादूगर मेजर ध्यान चंद के जन्मदिन पर राष्ट्रीय खेल दिवस की याद में 29 अगस्त को यह विशाल खेल प्रतियोगिता शुरू की जाएगी। दो महीने से अधिक समय तक चलने वाले इस खेल महोत्सव की शुरुआत संगरूर के वार हीरो स्टेडियम से होगी।

सीएम मान ने बताया कि पहली बार 'खेडां वतन पंजाब दियां' में पैरा खेलों में एथलेटिक्स,

बैडमिंटन और पॉवरलिफ्टिंग को भी शामिल किया गया है। इन तीन श्रेणियों में पंजाब के पैरा एथलीट पेरिस पैरा ओलंपिक्स में भाग ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह बहुत ही सम्मान और संतोष की बात है कि इस बार 37 खेलों की नौ आयु वर्गोंमें लगभग पांच लाख खिलाड़ी पदकों के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे। विजेताओं को 9 करोड़ रुपए से अधिक के नकद इनाम वितरित किए जाएंगे। इस बड़े खेल आयोजन का उद्देश्य युवाओं की असीम ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में मोड़ना है, ताकि उन्हें नशे की लत से दूर रखा जा सके।

15 से 22 सितंबर तक होंगे जिला स्तरीय मुकाबले

मुख्यमंत्री भगवंत मान ने बताया कि इन खेलों के दौरान ब्लॉक स्तरीय मुकाबले 1 से 10 सितंबर तक, जिला स्तरीय मुकाबले 15 से 22 सितंबर तक और राज्य स्तरीय मुकाबले 11 अक्तूबर से 9 नवंबर तक कराए जाएंगे। (अनंत ज्ञान)

कुरुक्षेत्र में नेशनल हाईवे पर दो ट्रकों में भिड़ंत

अनंत ज्ञान, चंडीगढ़

हरियाणा के कुरुक्षेत्र के शाहाबाद क्षेत्र में नेशनल हाईवे पर गांव खानपुर जट्टान के पास दो ट्रकों की आपसी भिड़ंत में एक ट्रक चालक की दर्दनाक मौत हो गई।

टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि एक ट्रक का चालक बीच में ही फंस गया और उसे चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद हाइड्रा मशीन से निकाला जा सका।

राहगीरों ने हादसे की सूचना डायल-112 पर दी तो पुलिस टीम भी मौके पर पहुंची। तब तक हाईवे पर जाम लग चुका था। पुलिस ने यातायात सुचारु कराया तो वहीं करीब चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद बड़ी हाइड्रा मशीनों की मदद से केबिन काटकर पिंटू के शव को बाहर निकाला। ट्रक लेकर रोपड़ जा रहे कमलेश ने बताया कि उनके ट्रक का टायर फट गया था।

इसके कारण उन्होंने इंडिकेटर ऑन कर ट्रक को साइड में खड़ा कर दिया था। उसके बाद रात करीब 12 से एक बजे के बीच ये हादसा हो गया। वहीं पुलिस इंस्पेक्टर गुरविंदर सिंह के मुताबिक इस हादसे में ट्रक चालक पिंटू निवासी पानीपत की मौके पर ही मौत हो गई। वह पानीपत से कंबल लेकर लुधियाना जा रहा था।

विधानसभा चुनाव के लिए अर्धसैनिक बलों की 40 कंपनियां जम्मू पहुंचीं

अशोक ठाकुर, जम्मू

विधानसभा चुनाव के लिए केंद्रीय अर्धसैनिक बलों की कंपनियां जम्मू पहुंचना शुरू हो गई हैं। रविवार को सुबह रेलवे स्टेशन जम्मू पर सीआईएसएफ की दो कंपनियों का जिला पुलिस ने हार पहनाकर स्वागत किया। शाम तक विभिन्न सुरक्षाबलों की करीब 40 कंपनियां पहुंच चुकी थीं।

इनमें आईटीबीपी, सीआईएसएफ, बीएसएफ, सीआरपीएफ, एसएसबी शामिल हैं। जम्मू पहुंचने के बाद विशेष वाहनों से कंपनियों को कश्मीर के लिए रवाना कर दिया गया। एसआरटीसी की बसों और ट्रकों में इन्हें भेजा गया।

जानकारी के अनुसार चुनाव में करीब एक हजार कंपनियां तैनाती की जानी हैं। इनमें से 500 कंपनियां पहले से जम्मू कश्मीर में मौजूद हैं, जबकि 500 से 600 कंपनियां अतिरिक्त मंगवाई गई हैं। पहले चरण का मतदान 18 सितंबर को होना है। कश्मीर में 24 सीटों के लिए पहले चरण में मतदान होना है। इन सीटों के लिए करीब 35 हजार सुरक्षाकर्मियों की तैनाती रहेगी।

वहीं, राजोरी-पुंछ, रियासी, कठुआ, उधमपुर और डोडा में भी सुरक्षाबलों की तैनाती शुरू कर दी गई है। संवेदनशील और आतंकवाद ग्रस्त क्षेत्रों में पुलिस और अर्धसैनिक बलों को तैनात किया जा रहा है। (अनंत ज्ञान)

ट्रैफिक पुलिस ने यातायात नियमों बारे किया जागरूक

अनंत ज्ञान, चंडीगढ़

पुलिस महानिदेशक सुरेंदर सिंह यादव एवं एसएसपी ट्रैफिक सुमेर प्रताप सिंह के निर्देशानुसार एवं डीएसपी ट्रैफिक (एडमिनिस्ट्रेशन, नियति मित्तल। के मार्गदर्शन में ट्रैफिक पुलिस द्वारा आमजन को सड़क सुरक्षा, यातायात नियमों के बारे में लगातार जागरूक किया जा रहा है।

इसी क्रम में आज ट्रैफिक इंस्पेक्टर प्रवेश शर्मा ने समाजसेवी संस्था ओंकार चैरिटेबल फाउंडेशन के सहयोग से सेक्टर 20 मठ मंदिर के नजदीक लोगों को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक किया। इस मौके दोपहिया महिला वाहन चालकों को हेलमेट भी बांटे गए और महिला चालक और पीछे बैठी सवारी को भी हेलमेट पहनने के लिए अपील की गई। ट्रैफिक इंस्पेक्टर प्रवेश शर्मा ने लोगों को यातायात व सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जानकारी देते हुए कहा कि वाहन चालक को निर्धारित स्पीड में चलाना चाहिए। इसके अलावा आमजन को अन्य ट्रैफिक नियमों जैसे कि ट्रैफिक सिग्नल का पालन, लेन ड्राइविंग, उच्च गुणवत्ता वाले हेलमेट का उपयोग करने इत्यादि के बारे में विशेष रूप से बताया गया।

देश-विदेश

44 सीटों पर भाजपा का यू-टर्न

जेएंडके विधानसभा चुनाव में प्रत्याशियों के चयन का भारी विरोध

अशोक ठाकुर, जम्मू

भाजपा ने जम्मू-कश्मीर के विधानसभा चुनाव के पहले चरण के लिए सोमवार को 16 उम्मीदवारों के नामों की घोषणा कर दी। पहले चरण में दक्षिण कश्मीर के 16 विधानसभा क्षेत्रों और जम्मू क्षेत्र के आठ विधानसभा क्षेत्रों में मतदान होगा। भाजपा ने सुबह 10 बजे 44 प्रत्याशियों की लिस्ट जारी की।

प्रत्याशियों के चयन का भारी विरोध होने पर 2 घंटे बाद 15 की लिस्ट जारी हुई। 3 घंटे बाद एक नाम जोड़ा गया यानी भाजपा ने 5 घंटे में 3 लिस्ट जारी करनी पड़ीं। इससे पहले, पार्टी की ओर से तीनों चरणों के लिए कुल 44

सुबह जारी की 44 सीटों की लिस्ट, दोपहर को दूसरी में 15 और तीसरी में एक का नाम

उम्मीदवारों की सूची जारी की गई थी, जिसमें दूसरे चरण के लिए 10 और तीसरे चरण के लिए 19 उम्मीदवारों के नाम थे। लिस्ट के आते ही जम्मू भाजपा दफ्तर में कार्यकर्ताओं का प्रदर्शन शुरू हो गया था। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष रविंद्र रैना अपने कैबिन में चले गए और दरवाजा बंद कर लिया। हालांकि, बाद में दूसरे और तीसरे चरण के लिए जारी उम्मीदवारों की सूची वापस ले ली गई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मौजूदगी में रविवार को हुई भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक में उम्मीदवारों के नामों पर मंथन के बाद उम्मीदवारों की पहली सूची को अंतिम रूप दिया गया। जम्मू-कश्मीर में तीन चरणों में विधानसभा चुनाव होंगे। पूर्ववर्ती प्रदेश की 90 सदस्यीय विधानसभा के लिए, चुनाव के पहले चरण के तहत 18 सितंबर, दूसरे चरण के तहत 25 सितंबर और तीसरे व आखिरी चरण के तहत एक अक्तूबर को मतदान होगा। मतों की गिनती चार अक्तूबर को होगी। यह विधानसभा चुनाव, अगस्त 2019 में संविधान के अनुच्छेद-370 को खत्म किए जाने के बाद केंद्र शासित प्रदेश के लोगों के लिए सरकार चुनने का मंच तैयार करेगा। (अनंत ज्ञान)

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के बनेंगे पांच नए जिले

एजेंसी, नई दिल्ली

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने की घोषणा

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सोमवार को केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख में पांच नए जिले बनाने की घोषणा की। शाह ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि एक विकसित और समृद्ध लद्दाख बनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दृष्टिकोण के अनुरूप केंद्रीय गृह मंत्रालय ने पांच नए जिले बनाने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि ये नए जिले जंस्कार, द्रास, शाम, नुबरा और चांगथांग होंगे, जो लद्दाख के हर हिस्से में शासन को मजबूत करके लोगों के लिए फायदों को उनके दरवाजे तक पहुंचाएंगे। मोदी सरकार लद्दाख की जनता के लिए अपार अवसर सृजित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

पूर्ववर्ती राज्य जम्मू-कश्मीर को पांच अगस्त, 2019 को दो केंद्र शासित प्रदेशों में विभाजित किया गया था। एक केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख और दूसरा जम्मू-कश्मीर है। वहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को 'एक्स' पर लद्दाख में पांच नए जिलों के गठन की सराहना करते हुए इसे बेहतर शासन और समृद्धि की दिशा में एक कदम बताया। उन्होंने कहा कि जंस्कार, द्रास, शाम, नुबरा और चांगथांग पर अब अधिक ध्यान केंद्रित किया जाएगा, जिससे सेवाओं और अवसरों को लोगों के और करीब लाया जा सकेगा।

अभिनेता दर्शन को जेल में विशेष सुविधा देने के मामले में सात जेल अधिकारी किए निलंबित

एजेंसी, बेंगलुरु

कन्नड़ फिल्म अभिनेता दर्शन थुगुदीपा की जेल में सिगरेट पीते तस्वीर वायरल होने के बाद कर्नाटक सरकार ने कार्रवाई की है।

गृहमंत्री जी परमेश्वर ने मामले में सात जेल अधिकारियों को निलंबित कर दिया है। साथ ही केंद्रीय जेल के अधीक्षक का तबादला किया गया है। रेणुकास्वामी हत्याकांड मामले में न्यायिक हिरासत में चल रहे कन्नड़ अभिनेता दर्शन थुगुदीपा की परप्पाना अग्रहारा सेंट्रल जेल के अंदर सिगरेट पीते फोटो वायरल हो रही है। इस वायरल तस्वीर को लेकर लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। कर्नाटक के गृहमंत्री जी परमेश्वर ने बताया कि मामले में सात जेल अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है।

बिहार में 4 लोग गंडक नदी में डूबे

गोपालगंज। बिहार के गोपालगंज जिले के बैकुंठपुर थाना क्षेत्र में सोमवार को श्राद्ध कर्म के मौके पर गंडक नदी में स्नान करने गए एक ही परिवार के चार लोग नदी में डूब गए। गंडक की तेज धार की वजह से सभी लोग अचानक लापता हो गए। इनकी तलाश के लिए एसडीआरएफ की टीम को लगाया गया है।

बांग्लादेश में फिर हिंसा, 50 घायल

एजेंसी, ढाका

बांग्लादेश में एक बार फिर हिंसा हुई। रविवार देर रात होमगार्ड (अंसार ग्रुप) और स्टूडेंट के बीच झड़प हो गई। इस झड़प में 50 लोग घायल हुए हैं।

दरअसल अंसार ग्रुप पिछले दो दिनों से प्रदर्शन कर रहा था। अंसार ग्रुप एक पारामिलिट्री फोर्स है। अंसार ग्रुप की मांग है कि उनकी नौकरियों को स्थायी किया जाए। अंसार ग्रुप के कई सदस्य सचिवालय पहुंच गए। उन्होंने गेट बंद कर दिया। किसी भी सरकारी अधिकारी को बाहर आने नहीं दिया। अंतरिम सरकार में मंत्री नाहिद इस्लाम और स्टूडेंट संगठन के कुछ सदस्य भी अंदर कैद हो गए। उन्होंने फेसबुक के जरिए सैकड़ों छात्रों से सचिवालय आने की अपील की। जब भारी संख्या में छात्र सचिवालय की ओर बढ़े तो वहां पहले से मौजूद अंसार ग्रुप के मेंबर्स से उनकी भिड़ंत हो गई। दोनों तरफ से एक-दूसरे पर ईंट-पत्थर फेंके गए। स्थिति को नियंत्रित करने के लिए पुलिस और सेना को तैनात किया गया है। अंसार ग्रुप और स्टूडेंट के बीच झड़प के बाद सड़कों पर सेना भी उतारी गई।

शेयर बाजार सेंसेक्स 611 अंक की तेजी के साथ 81,698 पर हुआ बंद

निफ्टी फिर 25,000 के पार

एजेंसी, मुंबई

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का मुख्य सूचकांक निफ्टी एक बार फिर 25,000 के स्तर को पार कर गया। दोपहर पर निफ्टी 201 अंक या 0.79 प्रतिशत की तेजी के साथ 25,025 अंक पर था। यह ऑल-टाइम हाई 25,078 से करीब 50 अंक दूर है। सेंसेक्स में भी तेजी का ट्रेड देखने को मिला।

सेंसेक्स 611 अंक की तेजी के साथ 81,698 पर बंद हुआ। बाजार में तेजी की वजह अमेरिकी शेयर बाजार में शुक्रवार को आई तेजी को माना जा रहा है। अमेरिकी फेड चेयरमैन की ब्याज दरों में कटौती

के संकेत दिए जाने के बाद यूएस के बाजारों में बड़ी बढ़त हुई। बाजार में रुझान सकारात्मक बना हुआ है। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) पर 1,343 शेयर हरे निशान में और 1,037 शेयर लाल निशान में थे। छोटे और मझोले शेयरों में भी खरीदारी का ट्रेंड बना हुआ है। निफ्टी मिडकैप 100 इंडेक्स 245 अंक या 0.42 प्रतिशत की बढ़त के साथ 58,800 और निफ्टी स्मॉलकैप 100 इंडेक्स 73 अंक या 0.38 प्रतिशत की तेजी के साथ 19,152 पर था। सेक्टर के हिसाब से सबसे ज्यादा तेजी आईटी, ऑटो, फिन सर्विस, एफएमसीजी और मेटल इंडेक्स में बनी हुई है। पीएसयू बैंक और फार्मा इंडेक्स में गिरावट है। सेंसेक्स पैक में एनटीपीसी, एचसीएल टेक, बजाज फिनसर्व, टेक महिंद्रा, विप्रो, टाइटन, एचडीएफसी बैंक, एलएंडटी, जेएसडब्ल्यू स्टील और पावर ग्रिड टॉप गेनर्स हैं। अल्ट्राटेक सीमेंट, मारुति सुजुकी, कोटक महिंद्रा, आईटीसी और सन फार्मा टॉप लूजर्स हैं।

रूस ने यूक्रेन पर ड्रोन और मिसाइलों से किया हमला

एजेंसी, कीव

रूस के सारातोव में सोमवार को अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेंड सेंटर जैसा हमला हुआ है। एक ड्रोन सुबह 38 मंजिला रिहायशी इमारत 'वोल्गा स्काई' से टकराया। रूस ने इस हमले का आरोप यूक्रेन पर लगाया।

इसके पलटवार में रूस की सेना ने यूक्रेन के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर ड्रोन और मिसाइलों हमला किया, जिसमें निशाने पर संभवत: ऊर्जा आधारभूत ढांचा था। इन हमलों में कम से कम लोगों व्यक्तियों की मौत हो गई। यह हमला रविवार मध्य रात्रि के आसपास शुरू हुआ और सोमवार भोर तक जारी था। यूक्रेन की वायुसेना के अनुसार, यूक्रेन के

पूर्वी, उत्तरी, दक्षिणी और मध्य क्षेत्रों की ओर रूसी ड्रोन के कई समूह बढ़ रहे थे, जिसके बाद कई क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइल भी दागी गईं। कीव के मेयर विताली क्लित्स्को ने बताया कि राजधानी कीव में विस्फोटों की आवाज सुनी गईं और हमले की वजह से शहर में बिजली और जल आपूर्ति बाधित हुई है।

बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट में मुंबई का सामना टीएनसीए एकादश से आज

सूर्यकुमार, श्रेयस और सरफराज पर रहेगी निगाहें

एजेंसी, कोयंबटूर

भारतीय बल्लेबाज सूर्यकुमार यादव अपना टेस्ट करियर पटरी पर लाने के लिए बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करना चाहेंगे जिसमें उनकी टीम मुंबई मंगलवार से यहां शुरू होने वाले मैच में टीएनसीए एकादश का सामना करेगी। श्रेयस अय्यर भी मुंबई की टीम का हिस्सा हैं और वह भी सत्र की शुरुआत में होने वाले इस टूर्नामेंट में अच्छा प्रदर्शन करके चयनकर्ताओं का ध्यान खींचने की कोशिश करेंगे।

अय्यर ने अपना आखिरी टेस्ट मैच फरवरी में खेला था। कई स्टार खिलाड़ियों से सजी मुंबई की टीम का नेतृत्व सरफराज खान करेंगे, जिनके लिए सभी शीर्ष खिलाड़ियों की वापसी के बाद टेस्ट टीम में जगह बनाना आसान नहीं होगा।

सरफराज ने इस साल के शुरू में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करके अपने प्रदर्शन से प्रभावित किया था। विराट कोहली, केएल राहुल और ऋषभ पंत अलग-अलग कारण से इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की सीरीज में नहीं खेल पाए थे लेकिन उनके बांग्लादेश के खिलाफ 19 सितंबर से चेन्नई में शुरू होने वाली दो टेस्ट मैच की सीरीज के लिए उपलब्ध रहने की संभावना है। बुची बाबू क्रिकेट टूर्नामेंट के तीसरे दौर के मैच में सभी का ध्यान निश्चित तौर पर सूर्यकुमार पर रहेगा जिन्होंने अपना एकमात्र टेस्ट मैच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फरवरी 2023 में खेला था।

सूर्यकुमार ने इसके बाद सीमित ओवरों की क्रिकेट में लगातार अच्छा प्रदर्शन किया। बुची बाबू टूर्नामेंट सूर्यकुमार और अन्य स्टार खिलाड़ियों के लिए दलीप ट्रॉफी के लिए अभ्यास का काम करेगा। दलीप ट्राफी पांच सितंबर से शुरू होगीं। सूर्यकुमार ने अपना अंतिम प्रथम श्रेणी मैच पिछले साल दलीप ट्राफी में ही खोला था। तब वह चार पारियों में केवल 71 रन बना पाए थे। सरफराज ने इस साल के शुरू में इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया। उन्होंने पांच पारियों में 50 की औसत से 200 रन बनाए जिसमें तीन अर्धशतक शामिल हैं।

डार्सी ब्राउन की टी-20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम में वापसी

एजेंसी, सिडनी

पांव की चोट से उबर चुकी तेज गेंदबाज डार्सी ब्राउन को महिला टी-20 विश्व कप के लिए ऑस्ट्रेलिया की 15 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया, लेकिन अनुभवी स्पिनर जेस जोनासेन मौजूदा चैंपियन की टीम में जगह बनाने में असफल रही।

पैर की चोट के कारण मार्च में बांग्लादेश दौरे से हटने वाली ब्राउन अब पूरी तरह से फिट हैं। उनके अलावा एक अन्य तेज गेंदबाज तायला व्लामिनक को भी टीम में शामिल किया गया है। चयन समिति के अध्यक्ष शॉन फ्लेगलर ने कहा, ''तायला और डार्सी की तेज गेंदबाजी जोड़ी को हम पिछले कुछ समय से टीम में शामिल करना चाहते थे और हमारी टीम में यह वास्तविक अंतर है।''

ऑस्ट्रेलिया की निगाह लगातार चौथे टी-20 खिताब जीतने पर है। उसकी टीम की अगुवाई एलिसा हीली करेंगी, जबकि तीन अक्तूबर से संयुक्त अरब अमीरात में शुरू होने वाले टूर्नामेंट में ताहलिया मैकग्रा उपकप्तान की भूमिका निभाएगी। टी-20 विश्व कप से पहले ऑस्ट्रेलिया अगले महीने न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन टी20 मैच खेलेगा।

ऑस्ट्रेलियाई टीम

एलिसा हीली (कप्तान), ताहलिया मैकग्रा (उप-कप्तान), डार्सी ब्राउन, एशले गार्डनर, किम गार्थ, ग्रेस हैरिस, अलाना किंग, फोबे लिचफील्ड, सोफी मोलिनक्स, बेथ मूनी, एलिसे पेरी, मेगन शुट्ट, एनाबेल सदरलैंड, जॉर्जिया वेयरहैम, तायला व्लामिनक।

स्पोर्ट्स विंडो

लीजेंड्स लीग क्रिकेट से जुड़े शिखर धवन

नई दिल्ली। भारत के पूर्व सलामी बल्लेबाज शिखर धवन अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने के बाद सोमवार को लीजेंड्स लीग क्रिकेट (एलएलसी) से जुड़ गए। इस 38 वर्षीय खिलाड़ी ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की थी। वह अब इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) से इतर अन्य टी-20 लीग में खेल सकते हैं। धवन ने यहां जारी बयान में कहा, ''मैं अब भी खेलने के लिए पूरी तरह से फिट हूं। हालांकि मैं अपने फैसले से संतुष्ट हूं लेकिन क्रिकेट मेरे जीवन का अहम हिस्सा है और रहेगा।'' उन्होंने कहा, '' मैं अपने क्रिकेट मित्रों के साथ फिर से जुड़ने और अपने प्रशंसकों का मनोरंजन करने के लिए उत्सुक हूं क्योंकि हम सब साथ मिलकर नई यादें बनाएंगे।'' धवन ने 34 टेस्ट, 167 वनडे और 68 टी-20 में भारत का प्रतिनिधित्व किया और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में कुल 12,286 रन बनाए। लीजेंड्स लीग क्रिकेट प्रतियोगिता सितंबर में खेली जाएगी।

डुप्लांटिस ने तीसरी बार पोल वॉल्ट का विश्व रिकॉर्ड तोड़ा

चोरजोव (पोलैंड)। अर्मेंड डुप्लांटिस ने पोलैंड में डाइमंड लीग प्रतियोगिता के दौरान 6.26 मीटर के प्रयास के साथ पोल वॉल्ट में एक बार फिर विश्व रिकॉर्ड बनाया। लुईसियाना में जन्में 24 साल के डुप्लांटिस अपनी मां के देश स्वीडन की ओर से प्रतिस्पर्धा करते हैं। डुप्लांटिस ने अपने पिछले विश्व रिकॉर्ड में एक सेंटीमीटर का सुधार किया। डुप्लांटिस ने इस साल तीसरी बार विश्व रिकॉर्ड बनाया है। उन्होंने पेरिस ओलंपिक खेलों में 6.25 मीटर के प्रयास के साथ स्वर्ण पदक जीतने के दौरान पिछला विश्व रिकॉर्ड बनाया था।

शाहीन ने पोस्ट की बेटे की पहली फोटो

नई दिल्ली। पाकिस्तान के युवा तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी की पत्नी ने 24 अगस्त को बेटे को जन्म दिया। शाहीन उस समय रावलपिंडी में बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट मैच खेल रहे थे। शाहीन ने सोमवार को अपने बेटे से मुलाकात की है। अपने बेटे से मिलने के बाद शाहीन भावुक हो गए। शाहीन ने एक्स पर अपने बेटे का हाथ पकड़ते हुए एक फोटो पोस्ट की है। इसके साथ उन्होंने लिखा है कि 24 तारीख को उनकी जिंदगी बदल गई थी। उन्होंने लिखा, 'इस पल ने सब कुछ बदल दिया। मेरा दिल भर गया है और मेरा जीवन काफी बेहतर हो गया है। 24/08/2024 हमेशा हमारे लिए खास रहेगा। इस दुनिया में तुम्हारा स्वागत है मेरे बेटे अलियार अफरीदी।'

पैरालंपिक में उतरेंगी 28 सप्ताह की गर्भवती

एजेंसी, नई दिल्ली

पेरिस 2024 के लिए चुने गए ग्रेट ब्रिटेन के पैरालंपिक तीरंदाजी दल के 4 एथलीट्स में एक गत चैंपियन (टोक्यो 2020 की स्वर्ण पदक विजेता फोबे पैटरसन पाइन) और एक भावी मां (जोडी ग्रिनहम) भी शामिल हैं। जोडी ग्रिनहम पेरिस पैरालंपिक में प्रतिस्पर्धा करने के दौरान 28 सप्ताह की गर्भवती होंगी। जोडी ग्रिनहम ने 2016 में रियो पैरालंपिक में कंपाउंड मिक्स्ड टीम इवेंट में रजत पदक जीता था। वह 28 सप्ताह की गर्भवती होते हुए पैरालंपिक में प्रतिस्पर्धा करने वाली पहली एथलीट होंगी।

क्या है चुनौती

वैसे इसके कुछ व्यवहारिक दिक्कतें भी होती हैं। जोडी ग्रिनहम जब 122 सेमी माप वाले छोटे लक्ष्य पर 70 मीटर से अधिक की दूरी से तीर चलाती हैं तो उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि निशाने लगाने के बाद धनुष उनके पेट से न टकराने पाए।

'बेबी ऑन बोर्ड' स्टिकर नहीं लगाएंगी

जोडी ग्रिनहम ने बताया, 'सबसे बड़ी चुनौती किट और बेल्ट रही है। मेरी बेल्ट आमतौर पर मेरी नाभि के चारों रहती थी, लेकिन अब मैं ऐसा नहीं कर सकती। मुझे अपनी बेल्ट बदलनी पड़ी क्योंकि मेरी पुरानी बेल्ट फिट नहीं होती थी। अब मैं इसे बहुत नीचे से बांधती हूं, इसलिए सब कुछ थोड़ा नीचे हो गया है।' उनकी किट पर 'बेबी ऑन बोर्ड' स्टिकर नहीं होगा।

अलग अनुभव: एक एथलीट और एक मां

30 वर्षीय जोडी ग्रिनहम ने कहा, 'इस बार मेरे लिए यह एक बहुत ही अलग अनुभव है। मेरे अंदर एक एथलीट है जो राहत महसूस कर रही है, उत्साहित है और पूरी तरह से तैयार है। इसके अलावा मेरे अंदर एक मां भी है जो घर को याद करेगी, अपने बेटे को याद करेगी और पेरिस में प्रतिस्पर्धा करते समय 28 सप्ताह की गर्भवती होगी। यह सब एक संतुलन बनाने के बारे में है, जितना में जानती हूं कि मुझे घर की याद आएगी।'

चार बार हो चुका है गर्भपात

जोडी ग्रिनहम की जिंदगी में दूसरी बार मां बनने की खुशी कई आघात सहने के बाद आई है। दो साल पूर्व बेटे क्रिश्चियन को जन्म देने से पहले जोडी ग्रिनहम के तीन गर्भपात हो चुके थे। पिछले साल भी उन्हें और भी अधिक दुख हुआ जब उनका एक और गर्भपात हो गया। वह बहुत ही बुरे दौर से गुजरीं। उन्हें बैक्टीरियल मैनिंजाइटिस हो गया जिसके कारण उन्हें पिछले मार्च में 3 सप्ताह तक अस्पताल में रहना पड़ा। जब उन्हें कुछ सप्ताह बाद पता चला कि वह गर्भवती हैं तो जोड़ी ग्रिनहम ने अनुमान लगाया कि पेरिस में उनकी प्रतियोगिता के लगभग 6 सप्ताह बाद प्रसव की तिथि होगी। हालांकि, आगे बढ़ने और अपने दूसरे पैरालंपिक में प्रतिस्पर्धा करने का निर्णय बिना सोचे समझे लिया गया था।

चिकनगुनिया से उबरने के लिए प्रणय ने ब्रेक लिया

नई दिल्ली। अनुभवी भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी एचएस प्रणय ने कहा कि वह चिकनगुनिया के प्रभाव से पूरी तरह से ठीक होने के लिए खेल से ब्रेक ले रहे हैं।

इसके कारण पेरिस ओलंपिक में उनके प्रदर्शन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। विश्व और एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता 32 वर्षीय प्रणय पेरिस ओलंपिक से ठीक पहले जोड़ों में गंभीर दर्द पैदा करने वाली मच्छर जनित वायरल बीमारी से एक सप्ताह तक पीड़ित रहे थे और इसके कारण उनका शरीर कमजोर हो गया था।

प्रणय ने 'एक्स' पर लिखा, ''दुर्भाग्य से चिकनगुनिया से लड़ाई ने मेरे शरीर पर बहुत बुरा असर डाला है, जिससे मुझे लगातार दर्द हो रहा है और मैं अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन नहीं कर पा रहा हूं।''

एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप में भारत ने रजत पदक जीता

एजेंसी, नई दिल्ली

भारत ने मालदीव में एशियाई सर्फिंग चैंपियनशिप 2024 की टीम स्पर्धा मरुहाबा कप में चीनी ताइपे और चीन को पछाड़कर रजत पदक जीता। भारत ने एशियाई खेलों में सर्फिंग में अपना पहला कोटा हासिल करने के एक दिन बाद यह रजत पदक जीता।

भारत ने रजत पदक हासिल करने के लिए कई मजबूत दावेदारों को पछाड़ दिया। कमाली पी, अजीश अली, श्रीकांत डी और संजय सेल्वमनी की भारतीय टीम ने सेमीफाइनल की दूसरी हीट में कुल 32.16 स्कोर से पहला स्थान हासिल किया। चीनी ताइपे 29.70 के टीम स्कोर से दूसरे स्थान पर रहा जबकि दक्षिण कोरिया उसी सेमीफाइनल में 27.74 के स्कोर से तीसरे स्थान पर रहा।

फाइनल में भारतीय टीम ने एशिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा की और 24.13 के टीम स्कोर से दूसरे स्थान पर रही। चीनी ताइपे (23.93) और चीन (22.10) क्रमश: तीसरे और चौथे स्थान पर रहे। जापान ने 58.40 के स्कोर से स्वर्ण पदक जीता।

अवनी तीसरे दौर के बाद संयुक्त 58वें स्थान पर

रांचो मिराज (कैलिफोर्निया)। भारतीय गोल्फर अवनी प्रशांत यहां एलपीजीए क्यू सीरीज प्री क्वालीफाइंग चरण के तीसरे दौर में तीन बोगी कर बैठी जिससे वह संयुक्त 58वें स्थान पर बनी हुई हैं। अवनी ने यहां इंडियन वेल क्लासिक कोर्स में तीन बर्डी लगाईं जबकि वह पांच बोगी कर बैठीं। वह 69, 71 और 74 के कार्ड से दो अंडर के स्कोर पर है।

संयुक्त 58वें स्थान से अवनी ने प्री क्वालीफयर के चौथे और अंतिम दौर के लिए कट हासिल किया। स्नेहा सिंह (74, 72, 72) ने भी चौथे दौर में जगह बनाई जिन्होंने कुल दो ओवर 218 का स्कोर बनाया। स्नेहा संयुक्त 113वें स्थान पर हैं।

सिंकफील्ड कप शतरंज टूर्नामेंट

भारत के आर प्रज्ञाननंदा ने लिरेन से खेला ड्रॉ

एजेंसी, सेंट लुइस (अमेरिका)

भारतीय ग्रैंडमास्टर आर प्रज्ञाननंदा ने ग्रैंड शतरंज टूर के अंतिम टूर्नामेंट सिंकफील्ड कप के छठे दौर में मौजूदा विश्व चैंपियन डिंग लिरेन के खिलाफ अपनी बाजी ड्रॉ खेली। विश्व चैंपियनशिप के चैलेंजर डी गुकेश ने फ्रांस के मैक्सिम वाचिएर लाग्रेव के साथ एक और दिलचस्प ड्रॉ खेला, लेकिन रूस के इयान नेपोम्नियाचची को हार का सामना करना पड़ा।

वह अमेरिका के फैबियानो कारुआना से केवल 25 चाल में हार गए। छठे दौर अन्य मैचों में नीदरलैंड के अनीश गिरी और उज्बेकिस्तान के नोदिरबेक अब्दुसात्तोरोव तथा फ्रांस के अलीरेजा फिरोज और स्थानीय खिलाड़ी वेस्ली सो ने अंक बांटे।अब जबकि तीन दौर की बाजियां खेली जानी बाकी हैं तब फिरोजा चार अंक लेकर शीर्ष बने हुए हैं। उनके बाद कारूआना और वेस्ली सो का नंबर आता है जिनमें से प्रत्येक 3.5 अंक हैं।

प्रज्ञाननंदा, गुकेश, वाचिएर लाग्रेव और लिरेन तीन-तीन अंकों के साथ संयुक्त रूप से चौथे स्थान पर हैं, जबकि नेपोम्नियाचची और अब्दुसात्तोरोव उनसे आधा अंक पीछे हैं। अनीश गिरी दो अंकों के साथ अंतिम स्थान पर हैं।

ट्वंटी-20 शमर जोसेफ और रोमारियो शेफर्ड ने चटकाए 3-3 विकेट

विंडीज ने द. अफ्रीका को हराकर सीरीज जीती

एजेंसी, तरौबा (त्रिनिदाद)

वेस्टइंडीज ने अपनी पारी में 13 छक्के लगाए जिनके दम पर उसने दक्षिण अफ्रीका को दूसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में 30 रन से हराकर तीन मैच की सीरीज में 2-0 अजेय बढ़त हासिल की। वेस्टइंडीज ने पहले बल्लेबाजी का न्योता मिलने पर छह विकेट पर 179 रन बनाए। एक समय 14 ओवर के बाद वेस्टइंडीज का स्कोर चार विकेट पर 114 रन था। शाई होप ने 22 गेंदों पर दो चौकों और चार छक्कों की मदद से 41 रन बनाए।

कप्तान रोवमैन पॉवेल ने 22 गेंदों में तीन छक्कों की मदद से 35 रन का योगदान दिया। दक्षिण अफ्रीका ने आक्रामक शुरुआत की और चार ओवर के बाद उसका स्कोर बिना किसी नुकसान के 57 रन था लेकिन वह इस अच्छी शुरुआत का फायदा नहीं उठा पाया और उसकी पूरी टीम 19.4 ओवर में 149 रन पर आउट हो गई। दक्षिण अफ्रीका को अंतिम चार ओवर में 42 रन की जरूरत थी, लेकिन उसकी पारी लड़खड़ा गई। उसकी तरफ से सलामी बल्लेबाज रीजा हेंड्रिक्स ने 18 गेंदों में 44 रन की पारी खेली, जिसमें उनकी टीम के छह छक्कों में से दो छक्के शामिल हैं। इन दोनों टीम के बीच तीसरा और अंतिम टी20 मैच मंगलवार को इसी स्थान पर खेला जाएगा।

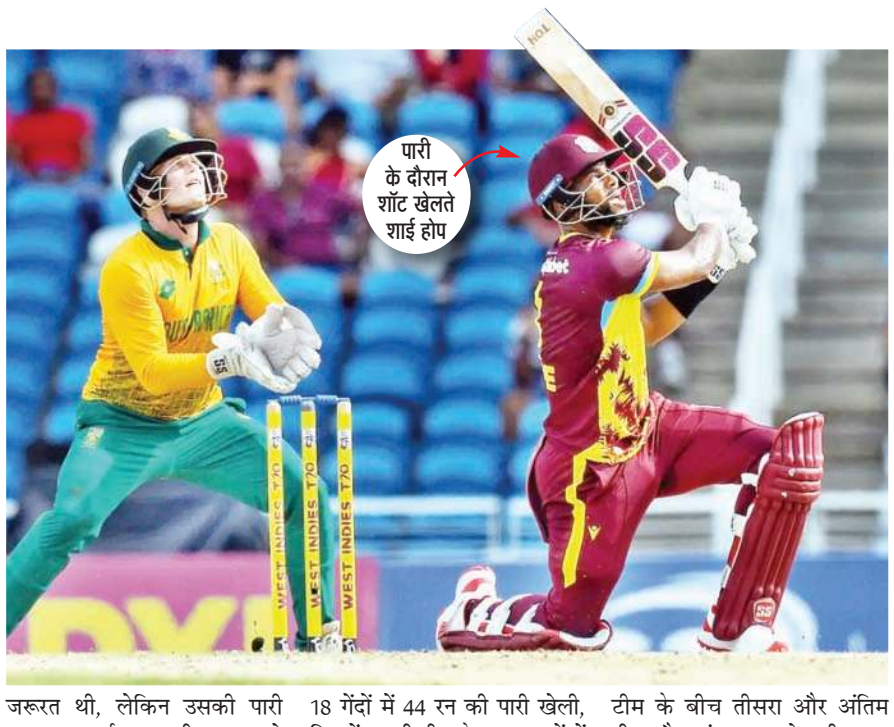

ट्रिस्टन स्टब्स के आउट होते ही पलट गई बाजी

ट्रिस्टन स्टब्स के आउट होने के बाद जीत के लिए 37 गेंद में 50 रन बनाने थे, लेकिन द. अफ्रीका के विकेट गिरने का सिलसिला शुरू हो गया और पूरी टीम देखते हुए 19.4 ओवर में 149 रन बनाकर ढेर हो गई। वेस्टइंडीज ने इसके साथ ही दूसरा टी-20 और सीरीज अपने नाम कर ली। रासी वान डर डुसेन के अलावा निचले क्रम के बल्लेबाज दो अंक के आंकड़े तक नहीं पहुंच सके। वेस्टइंडीज के लिए सबसे ज्यादा 3-3 विकेट शमर जोसेफ और रोमारियो शेफर्ड ने चटकाए। वहीं दो सफलता अकील हुसैन मिली। 1-1 विकेट मैथ्यू फोर्डे और गुणाकेश मोती के खाते में गया।